चेहल रब्बना

मय

चहल दरूद शरीफ़

फहेरीसते उनवानात

नं.	फहेरीस्त	सफा नं.
1	सुरतों के फज़ाईल	3
2	दरुद शरीफ	6
3	सुरेह फातेहा, अयतल कुर्सी	7
4	सुरेह बकरा का पहला, आखरी रुकु	8
5	सुरेह अ्लइम्रान का आखरी रुकु	9
6	सुरेह कहफ	12
7	सुरेह सजदा	29
8	सुरेह यासीन	34
9	सुरेह दुखान	42
10	सुरेह फताह	46
11	सुरेह काफ	52
12	सुरेह रहमान	57
13	सुरेह वाकेआ	62
14	सुरेह हदीद	67
15	सुरेह हशर	74
16	सुरेह सफ्फं	79
17	सुरेह जुमा	82
18	सुरेह तगाबुनं	84
19	सुरेह तहरीमं	87
20	सुरेह मुल्कं	90

बिस्मील्लाहिर्रहमानीर्रहीम

छब्बीस सुरतें

• मिलने का पता •

उमेर बुक डेपो (होलसेलर)

2/3 घोरपडी पेठ, मोमिनपुरा,पुणे.मो. 9881345221

मौलाना खलील अहमद

मदरसा दारूलउलूम आलम्गीर, अहमदनगर, मो. 9922763343

ताहा बुक डेपो

बषिर गंज, बीड. मो: 8237401086

इब्आम किताब घर

चाँद तारा मस्जिद, मर्कज़ के सामने,

714 नाना पेठ, पुणे 2.

बिइस्मीही तआला

लकद कान लकुम फी रसुलिल्लाही उस्वतुन ह-स-ना ○

गुज़ारीश

ये किताब बडी कीमती है । इस में नेअमतो के खज़ाने है। अल्लाह तआला के कलाम में बडी बरकत है । इस किताब का गौर से मुताला किजीए और अपनी दुआओ में इस गुनेहगार को भी याद किजी. दुआ में बडा असर होता है, जहां अपने लिए, अपने बाल बच्चों के लिए, अपने अज़ीज़ व अकारीब के लिए दुआ करें वहां इस आसी के लिए भी ज़रुर दुआ फर्माए ।

मौलान जलील अहमद आलमगीर

नाम किताब : छब्बीस सुरतें

हिन्दी अनुवाद : मरहुम हनिफ जनाब

इशाअत : 1-03-2013

कीमत : Rs. 55/-

४ एडीशन : 2,000

मरहुम हज़रत मौलाना अब्दुल गनी सहाब मज़ाहरी

(शेखुल हदीस दारुल उलूम अलमगीर,अहमद नगर)

मरहुम हनिफ जनाब वफात (27 / 2 / 2012)

मरहुम मोहम्मद उमर मोहम्मद हुसेन वफात (11 / 8 / 2007)

अल्लाह तआला इन सब की मग्फ़िरत फरमा कर करवट करवट जन्नत नसिब फरमाए और इन की कबरों को नुर से मुनव्वर फरमाए. **आमीन (बराए महरबानी आपनी दुआओं में याद रखें)**

सूरतों के फज़ाइल व ख्वास

◇ हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह स. ने फरमाया के जब तूने अपने बिस्तर पर पहलू रखा और सूरे फातिहा और सूरे इख्लास पढी तो मौत के अलावा हर चीज़ से बेखौफ हो गया। (हसन अनल्बज़्ज़ार)

◇और आयतल कुर्सी भी पढें। इस के पढने वाले के लिए अल्लाह तआला की जानिब से रात भर एक मुहाफिज़ फरिश्ता मुकर्रर रहेगा और कोई उसके पास न आएगा। (मन्कूल दुआ)

◇ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसूद रज़ि से रिवायत है के रसूलुल्लह स. ने फरमाया के सूरे बकरा की आखरी दो आयतें 'आमनर्रसूलु' से खत्मे सूरत तक जो शख्स रात को पढ लेगा तो ये दोनों आयतें उसके लिए काफी होंगी यानी वो हर शर और मकर से महफूज़ रहेगा। (बुखारी व मुस्लिम)

◇ एक हदीस में है के सूरे बकरा की आखरी दो आयतें 'आमनर्रसूल' से आखिर तक जिस घर में पढी जाएं तीन दिन तक शैतान उस घर के करीब नहीं आता। (हसन हुसैन)

◇ हज़रत उस्मान रज़ि फरमाते हैं के जो शख्स सूरे आले इमरान की आखरी ग्यारह आयतें 'इन्न फी खलकिस्समावाति' से आखिर तक किसी रात पढ ले तो उसे रात भर नमाज़ पढने का सवाब मिलेगा। (मोतबर)

◇ सूरे कहफ का जुमा के दिन पढना ज़मीन व आसमान तक नूर पैदा करता है, आठ दिन तक नूर बराबर कायम रहता है फिर उसके पढने वाले को ये सारा नूर कब्र में और कब्र के बाद कयामत में दिया जाएगा। (मोतबर)

◇ एक रिवायत में है के जिस ने सूरे सजदा और तबारकल्लज़ी को मगरिब और इशा के दरमियान पढा गोया उस ने लैलतुल कद्र में कयाम किया। एक रिवायत में है के जिस ने इन दोनों सूरतों को पढा उस के लिए सत्तर नेकियाँ लिखी जाती हैं और सत्तर बुराईयाँ दूर की जाती हैं। (फ़ज़ाइले कुरआन)

◇ एक रिवायत में है के जो शख्स सूरे यासीन को सिर्फ अल्लाह की रज़ा के वास्ते पढे उस के पहले सब गुनाह मआफ हो जाते हैं। (फज़ाइले कुरआन)

◇ जिस शख्स ने शबे जुमा को सूरे दुखान पढी उसके लिए सत्तर हज़ार फरिश्ते अस्तगफार करते हैं और उसके तमाम गुनाह मआफ कर दिए जाते हैं और अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा।

◇ एक रिवायत में है के जो शख्स सूरे हदीद, सूरे वाकिया और सूरे रहमान पढता है वो जन्नतुल फिरदौस में रहने वालों में पुकारा जाता है। (फज़ाइले कुरआन)

◇ सूरे जुमा शबे जुमा में पढनी चाहिए।

◇ एक हदीस में है के सूरे तबारकल्लज़ी का हर रात को पढते रहना अज़ाबे कब्र से निजात का सबब है और अज़ाबे ज़हन्नम से भी। (फज़ाइले आमाल)

◇ सूरे मुज़म्मिल का एक मर्तबा रोज़ाना इशा की नमाज़ के बाद पढना फाके से बफज़ले तआला महफूज़ रखता है। (तिब्बे रूहानी)

◇ सूरे अन्नबा का असर की नमाज़ के बाद पढना दिन में यकीन और नूरे इमान पैदा करता है और इन्शा अल्लाह खातमा बिलखैर होने का सबब होता है। (मोनबर)

◆ जो शख्स सूरे अलकाफिरुन को खुलूसे दिल से बाद नमाज़े फजर या बाद नमाज़े इशा ग्यारह मर्तबा पढने का मामूल बनाले, उसके दिल से बुग्ज़, हसद, कीना, झूठ, फरेब, निफ़ाक गोया हर किस्म की अख़लाकी बुराई निकल जाएगी और शैतानी वसवसों से महफूज़ रहेगा और उसका खात्मा इमान पर होगा और दिल इबादत की तरफ बेहद मायल होगा। अगर कोई बच्चा नमाज़ पढने में कोताही करता हो तो घर का कोई फर्द २१ रोज़ तक इस सूरत को २१ मर्तबा रोज़ाना पढ कर पानी पर दम करके पिलाए इन्शा अल्लाह नमाज़ पढने में इस्तेकामत पैदा हो जाएगी।

◆ सूरे नसर की तिलावत हर किस्म की मुराद पूरी होने के लिए बहुत मुफीद है बशर्ते के इस सूरत को अलैहदा बैठ कर १२३ मर्तबा पढा जाए और हर नमाज के बाद अगर इसे सात मर्तबा पढने का मामूल बना लिया जाए तो हर मुश्किल आसान होती चली जाएगी।

◆ जो शख्स सूरे इख्लास को एक हज़ार मर्तबा रोज़ाना बाद नमाज़े इशा १२५ दिन तक पढे तो उसकी हर जायज़ हाजत पूरी होगी। और जो शख्स रोज़ाना १११ मर्तबा पढने का मामूल बनाले वो इन्शा अल्लाह महबूबूल खलाईक हो जाएगा। इसके अलावा इस सूरत को पढने का बेपनाह अज्र मिलेगा।

जो शख्स सूरे फलक रात को सोते वक्त पढ कर अपने उपर दम करे तो इन्शा अल्लाह हर तरह के डर, खौफ और मुसीबत से महफूज़ रहेगा। हुज़ुर स. का इर्शाद है के सूरे फलक से बहेतर कोई दुआ पनाह के मुतालि्लक नहीं है।

◆ जो शख्स रात को सोते वक्त सूरे फातिहा, आयतुल कुर्सी, सूरे इख्लास, सूरे फलक और सूरे नास एक एक मर्तबा पढ कर अपने हाथों पर दम करके दोनों हाथों को चेहरे और सर से लेकर पेट और टांगों तक फेर दे इन्शा अल्लाह वो रात भर जिन्नात और शयातीन के शर से और दीगर आफाते समावी से महफूज़ और अल्लाह की पनाह में रहेगा।

दरुद शरीफ

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इन्नल्लाह व मलाइकतहु युसल्लून अलन्नबी या अय्युहल्लजीन आमनु सल्लु अलैहि व स्लल्लिमु तस्लीमा

तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते दरुद भेजते हैं नबी (स.) पर ए इमान वालो! तुम उन पर दरुद और खूब सलाम भेजो।

दरुद शरीफ

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अलाइब्राहीम वअला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव्वअला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्त अला इब्राहीम व अला आली इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद ।

सुरेह फातेहा

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ① الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ② مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ ③
اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ④ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ⑤ صِرَاطَ
الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ ۵ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ⑦

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० अर्रहमा निर्रहीम ० मालिकि यौमिद्दीन ० इय्याक नअबुदु वइय्याक नस्तईन ० इहदिनस्सिरॉतल मुस्तकीम ० सिरॉतल्लजीन अन्अम्त अलैहिम ५ गैरिल मगजुबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन ०

आयतुल कुर्सी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۵ لَا تَاْخُذُہٗ سِنَۃٌ وَّلَا نَوْمٌ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَہٗٓ اِلَّا بِاِذْنِہٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْھِمْ
وَمَا خَلْفَھُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِہٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ کُرْسِیُّہُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا یَئُوْدُہٗ حِفْظُھُمَا وَھُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۞

बिस्मिल्लाहि रहमानि रहीम

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हू अलहय्युल कय्युम ला ताखुजुहू सिनतुंव्वला नौम, लहू माफिस्समावाति वमा फिल अर्जे मन जल्लजी यश्फउ इंदहु इल्ला बिइजनिह याअलमु माबैन ऐदिहिम वमा खल्फहुम वला युहीतुन बशैइम्मिन

इल्मिहि इल्ला बिमाशाअ वसीअ कुर्सीयुहुस्समावाति वलअर्ज वला यउदूहू हिफ्जुहुमा वहुवल अलीय्युल अजीम ०

सूरे बकरा का पहला और आखरी रुकूअ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ ○ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ

अलिफ लाम मीम ० जालिकल किताबु ला रैब फिही हुदलल्लि मुत्तकीन ० अल्लजीन युअमिनून बिलगैबि व युकीमुनस्सलॉत व मिम्मा रजक्नाहुम युनफिकून ० वल्लजीन युअमिनून बिमा उन्जिल इलैक वमा उन्जिल मिन कब्लिक व बिलआखिरतिहुम युकिनून ० उलाइक अला हुदम्मिर्रब्बिहिम व उलाइक हुमुल मुफ्लिहुन ० इन्नल लजीन कफरु सवाउन अलैहिम अअन्जरतहुम अम् लम् तुन्जिरहुम ला युअमिनून ० खतमल्लाहु अला कुलूबिहिम व अला समइहिम । व अला अबसारिहिम गिशावतुंव्वलहुम अजाबुन अजीम ० आमनर्रसूलु बिमा उन्जिल इलैहि मिर्रब्बिहि वल मुअमिनून। कुल्लुन आमन बिल्लाहि व मलाइकतिहि व कुतुबिहि

وَرُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا
تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ
مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○

व रसूलिहि ला नुफर्रिकु बैन अहदिम्मीर्रसुलिही व कालू समिअ्ना व अतअ्ना गुफ्रानक रब्बना व इलेकल मसीर ० ला युकल्लिफुल्लाहु नफ्सन इल्ला वुस्अहा लहा माक्सबत व अलैहा मक्तसबत रब्बना ला तुआखिज़ना इन्नसीना व अख्तअ्ना रब्बना व ला तहमिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहु अलल्लज़ीन मिन कब्लिना, रब्बना व तुहम्मिलना मा ला ताकत लना बिहि वाअफु अन्ना वग्फिर्लना वरहम्ना अन्त मौलाना फन्सुरना अलल कौमिल काफिरीन ०

सूरे आल इमरान का आखरी रुकूअ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي
الْاَلْبَابِ ○ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ○ رَبَّنَا اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
اَنْصَارٍ ○ رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا

इन्न फी खल्किस्समावाति वलअर्जि वख़्तिलाफिल्लैलि
वन्नहारि लआयाति लिउलील अलबाब ○ अल्लजीन
यज़्कुरुनल्लाह कियामंव्वकूउदंव्व अला जनुबिहिम
वयतफक्करुन फी खलकिस्समावाति वलअर्ज, रब्बना मा
खलक्त हाज़ा बातिलन सुब्हानक फक़िना अज़ाबन्नार ○
रब्बना इन्नक मन तुदखिलिन्नार फकद् अख़्ज़ैतहु। वमा
लिज़्ज़ालिमीन मिन अन्सार ○रब्बना इन्नना समिअ़ना
मुनादियंय्युनादी लिलइमानि अन आमनु बिरब्बिकुम फआमन्ना

رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ○ رَبَّنَا
وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ○ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ

रब्बना फग़फिरलना ज़ुनुबना व कफ्फिर अन्ना सय्यीआतिना
मअल अबरार रब्बना व आतिना मा वअ़त्तना अ़ला
रुसूलिक वला तुख़्ज़िना यौमलकियामह इन्नक लातुख़्लिफुल
मीआद ○ फस्तजाब लहुम रब्बुहुम इन्नी ला उज़ीउ अ़मल
आ़मिलिम्मिनकुम्मिन ज़करिन औउन्सा बाअ़जुकुम मिम्बअ़ज़िन।
फल्लज़ीन हाजरू वउख़रिजू मिन दियारिहिम व ऊज़ु फी
सबीली वकातलू व कुतिलू लउकफ्फिरन्न अ़न्हुम सय्यिआतिहिम
वलउदखिलन्नहुम जन्नातिन तजरी मिन तहतिहलअन्हारु
सवाबम्मिन इन्दिल्लाह। वल्लाहु इन्दहू हुस्नुस्सवाब ○

الثَّوَابِ ۝ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ
مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ وَمَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ۝ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ
إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خٰشِعِينَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُونَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ أُولٰٓئِكَ
لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اصْبِرُوا
وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

ला यगुर्रन्नक तकल्लुबुल्लजीन कफरु फील बिलाद ० मताउन कलीलुन सुम्म मावाहुम जहन्नम। व बिअसल मिहाद ० लाकिनिल लजीनत्तकु रब्बहुम लहुम जन्नातुन तजरी मिन तहतिहल अन्हारु खालिदीन फीहा नुजुलम्मिन इन्दिल्लाह। वमा इन्दिल्लाहि खैरुल्लिलअबरार ० व इन्न मिन अहलिलकिताबि लमंय्यूमिनु बिल्लाहि वमा उन्जिल इलैकुम वमा उन्जिल इलैहिम खाशिईन लिल्लाहि ला यश्तरुन बिआयातिल्लाहि समनन कलीला। उलाइक लहुम अजरुहुम इन्द रब्बिहिम। इन्नलल्लह सरीउल हिसाब ० याअय्युहल्लजीन आमनुसबिरु व साबिरु वराबितू वत्तकुल्लाह लअल्लकुम तुफलिहून ०

सूरेह कहफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ○ قَيِّمًا
لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ
لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ○ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ○ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ○ مَا
لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ
اِلَّا كَذِبًا ○ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤی اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ
اَسَفًا ○ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ○ وَاِنَّا
لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ○ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लजी अन्जल अला अब्दिहिल किताब वलम यजअलल्लहु इवजा ○ कय्यीमल्लियुन्जिर बासन शदीदम्मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल मुअमिनीनल्लजीन यअमलूनस्सॉलिहाति अन्न लहुम अजरन हसनम्माकिसीन फीहा अबदंव्व युनजिरल्लजीन कालुत्तखजल्लाहु वलदा ○ मा लहुम बिही मिन इल्मिंव्वला लि आबाइहिम। कबुरत् कलिमतन् तख्रुजु मिन अफ्वाहिहिम। इंय्यकुलून इल्ला कजिबा। फलअल्लक बाखीउन्नफसक अला आसारिहिम इल्लम युअमिनू बिहाजल हदीसि इस्फा ○ इन्ना जअल्ना मा अलल अर्जि जीनतल्लहा लिनब्लूवहुम अय्युहुम अहसनु अमला ○ वइन्ना लजाइलून मा अलैहा सईदन जुरुजा ○ अम हसिबत इन्न अस्हाबल कहफ वर्रकीमि

كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ○ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ○ فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ○ ثُمَّ
بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَىُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ○ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ
نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ○ وَّرَبَطْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ
دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ○ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ لَوْ
لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ○ وَ
اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ

कानू मिन आयातिना अजबा ○ इज अवल फितयतु इललकहफि फकालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्क रहमतंव्हय्यीअ् लना मिन अमरिना रशदा ○ फजरब्ना अला आजानिहिम फिलकहफि सिनीन अददा ○ सुम्म बअस्नाहुम लिनअलम अय्युल हिजबैनी अह्सा लिमा लबिसू अमदा ○ नहनू नकुस्सु अलैक नबअहुम बिलहक्कि। इन्नहुम फितयतुन आमनू बिरब्बिहिम वजिदनाहुम हुदा ○ वरबत्ना अला कुलूबिहिम इज कामू फकालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वलअर्ज लन्नदउव मिनदूनिही इलाहल्लकद कुल्ना इजन शतता ○ हाउलाइ कौमुनत्तखजु मिन दूनिही आलिहतन। लौ लायातून अलैहिम बिसुल्तानिम्बैन। फमन अजलमु मिम्मनूफतरा अलल्लाहि कजिबा ○ व इजिअतजल तुमूहुम वमा याअबुदून इलल्लाह फाउ

رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا
طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ
ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ
لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا
بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ

इललकैफि यनशुर लकुम रब्बुकुम मिर्नरहमतिहि व युहय्यी लकुम मिन अमरिकुम्मिर फका ० वतरश्शम्स इज़ा तलअत्तज़ा वरुअन कहफिहिम ज़ातलयमीनि व इज़ा गरबत्तक्रि ज़ुहुम ज़ातश्शिमालि वहुम फी फज्वतिम्मिन्हु। ज़ालिक मिन आयातिल्लाहि। मंय्याहदिल्लाहु फहुवल मुहतदी । व मंय्युज़्लिल फलन तजिद लहु वलियम्मुर्शिदा ० व तहसबुहुम ऐकाजंव्वहुम रुकूदुंव नुकल्लिबुहुम ज़ातलयमीनि व ज़ातश्शिमालि वकल्बुहुम बासितुन ज़िराऐहि बिलवसीद। लवित्तलअ्त अलैहिम लवल्लयत मिन्हुम फिरारंव्वल मुलिअ्त मिन्हुम रुअबा ० वकज़ालिक बअस्नाहुम लियतसाअलू बैनहुम। काल काइलुम्मिन्हुम कम लबिस्तुम। कालू लबिसना यौमन औबअ्ज़ यौमि। कालू रब्बुकुम अअलमु बिमा लबिस्तुम। फब्असू अहदकुम बिवरिक्किुम हाज़िही इलल मदीनति

اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ○
اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا
اَبَدًا ○ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ
فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۗ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ
بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ○ سَيَقُوْلُوْنَ
ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ
وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۗ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا
قَلِيْلٌ ۬ۗ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ○

फलयन्जुर अय्युहा अज़्का तआमन फलयातिकुम बिरिज़किमिमिन्हु वलयतलत्तफ वला युश्इरन्न बिकुम अहदा ○ इन्नहुम इंय्यज़्हरू अलैकुम यर्जुमूकुम औ युईदुकुम फी मिल्लतिहिम वलन तुफलिहू इज़न अबदा ○ वकज़ालिक अअ्सरना अलैहिम लियअलमू अन्न वअदल्लाहि हक्कुंव्व अन्नस्साअत ला रैबफीहा इज़् यतनाज़उन बैनहुम अमरहुम फकालूब्नू अलैहिम बुनयाना। रब्बुहुम अअ्लमु बिहिम। कालल्लज़ीन ग़लबू अला अमरिहिम लनत्तखिज़न्न अलैहिम्मस्जिदा ○सयकूलून सलासतुर्राबिउहुम कल्बुहुम व यकूलून खम्सतुन सादिसुहुम कल्बुहुम रजमम्बिल्गैबि व यकूलून सबअतुंव्व सामिनुहुम कल्बुहुम। कुर्रब्बी अअ्लमु बिइद्दतिहिम्मा यअलमुहुम इल्ला कलील फला तुमारि फीहिम इल्ला मिराअन ज़ाहिरंव्वला तसतफ्ती फीहिम्मिन्हुम अहदा ○

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ○ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ وَاذْكُرْ رَبَّكَ
إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسٰى أَنْ يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ○ وَلَبِثُوا فِي
كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ○ قُلِ اللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا لَهُ
غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا
يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ○ وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا
مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ○ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ
زِينَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰهُ

वला तकूलन्न लिशैइन इन्नी फाइलुन ज़ालिक ग़दन इल्ला अंय्यशाअल्लाहु वज़्कुर्रब्बक इज़ा नसीत वकुल असा अंय्यहदियनि रब्बी लिअकरब मिन हाज़ा रशदा ○ वलबिसू फी कहफिहिम सलास मिअतिन सिनीन वज़दादु तिस्आ ○ कुलिल्लाहु अअलमु बिमा लबिसू लहु ग़ैबुस्समावाति वलअर्ज़ि अब्सिर् बिही व असमिअ् मालहुम मिन दूनिही मिंव्वलिय्युंव्वला युश्रिकु फी हुक्मिही अहदा ○ वत्लु मा उहिय इलैक मिन किताबि रब्बिक। ला मुबद्दिल लिकलिमातिहि वलन तजि मिन दूनिहि मुलतहदा ○ वस्बिर् नफ्सक मअल्लज़ीन यदउन रब्बहुम बिलग़दावति वलअशिय्यी युरीदून वज्हहु वला तअ्दु अैनाक अन्हुम तुरीदु ज़ीनतल हयातिद्दुनिया वला तुतिअ मन अग़फ़ल्ना क़ल्बहू अन ज़िक्रिना वत्तबअ हवाहु

وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ○ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ
فَلْيَكْفُرْ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا
يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ○ اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ○ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ
يَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ
نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ○ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ○ كِلْتَا

वकान अमरुहू फुरुता ० वकुलिलहक्कु मिर्रब्बुकुम फमन शाअ फलयूअमिंव्वमन शाअ फलयकफुर इन्ना अअ्तदना लिज़्ज़ॉलिमीन नारन अहात बिहिम सुरादिकुहा। वइंय्यस्तग़ीसू युगासू बिमा इं कलमुह्लि यशविल वुजूह। बिअ्सश्शराब। वसाअत मुर्तफका। ० इन्नल्लजीन आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति अन्नाला नुजीउ अज्र मन अहसन अमला ० उलाइक लहुम जन्नातु अद्नीन तजरी मिन तहतिहिमुल अन्हारु युहल्लौन फीहा मिन असाविरमिन ज़हबिंव्व यलबसुन सियाबन ख़ुजरंम्मिन सुन्दुसिंव्व इसतबरकिम्मुत्ताकिईन फीहा अ़लल अराईकि। निअमस्सवाब। व हसुनत् मुरतफका ० वज़रिब लहुम्मसलर्रजुलैनी जअ़लना लिअहदिहिमा जन्नतैनी मिन अअनाबिंव्वहफफ्नाहुमा बिनख़्लिंव्वजअलना बैनहुमा ज़रआ ० किल्तल

الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝ وَّكَانَ لَهٗ
ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ
جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۝ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ
قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَ
هُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝
لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ۝ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ
لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝ فَعَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ
خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝ اَوْ

जन्नतैनि आतत् उकुलहा वलम तज़्लिम् मिनहु शैअंव्व फज्जरना खिलालहुमा नहरा ० वकान लहू समरुन फकाल लिसाहिबिही वहुव युहाविरुहू अना अकसरुमिन्क मालंव्वअअज़्ज़ु नफरा ० वदखल जन्नतहु वहुव ज़ालिमुल्लिनफ्सिही काल माअजुन्नु अन तबीद हाज़िही अबदा ० वमा अजुन्नुस्साअत काइमतंव्वलइर्रुदिद्तु इला रब्बी लअजिदन्न खैरम्मिन्हा मुन्कलबा ० काल लहु साहिबुहू व हुव युहाविरुहू अकफर्त बिल्लज़ी खलकक मिन तुराबिन सुम्म मिन्नुत्फतिन सुम्म सव्वाक रजुला ० लाकिन्ना हुवल्लाहु रब्बी वला उश्रिकु बिरब्बी अहदा ० वलौला इज़् दखल्त जन्नतक कुल्त माशाअल्लाहु ला कुव्वति इल्ला बिल्लाहि इन तरनि अना अकल्ल मिन्क मालंव्ववलदा ० फअसा रब्बी अंय्युअतियनि खैरम्मिन जन्नतिक वयुरसिल अलैहा हुस्बानम्मिनस्समाई फतुस्बिह सईदन ज़लका ०

يُصْبِحَ مَاؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ○ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا
أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ○ وَ
لَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ○ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ
هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ○ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ
فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
مُقْتَدِرًا ○ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ
رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ○ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ
فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ○ وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ

औ युसबिह माउहा गौरन फलन् तस्ततीअ लहु तलबा ०
व उहीत बिसमरिही फअस्बह युकल्लिबु कफ्फैहि अला मा
अन्फक फीहा वहिय खावियतुन अला उरुशिहा व यकूलु
यालैतनी लम अुश्रिक बिरब्बी अहदा ० व लम तकुल्लहु
फिअतुंय्यनसुरुनहू मिन दूनिल्लाहि वमा कान मुन्तसिरा ०
हुनालिकल वलायतु लिल्लाहिलहक्कि। हुव खैरुन
सवाबंव्वखैरुन उक्बा ० वज़रिब लहुम्मसलल हयातिद्दुनिया
कमाइन अन्जलनाहु मिनस्समाइ फख्तलत बिहि नबातुल
अर्जि फअस्बह हशीमं तज़्रूहुर्रियाह। वकानल्लाहु अला
कुल्लि शैइम्मुक्तदिरा ०अलमालु वलबनून जीनतुल
हयातिद्दुनिया वलबाकियातुस्सॉलिहातु खैरुन इन्द रब्बिक
सवाबंव्वखैरुन अमला ० व यौम नुसय्यिरुल जिबाल
वतरल अर्ज बारिजतंव्व हशरनाहुम फलम नग़ादिर मिन्हुम
अहदा० वउरिजु अला रब्बिक सफ्फा। लकदजिअतुमूना

بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ○ وَ وُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّا اَحْصٰىهَا ۚ وَ وَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ○ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِىْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ○ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ○ وَ يَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ○ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ○ وَ

कमा खलक्नाकुम अव्वल मर्रतिम्बल ज़अम्तुम अल्लन्नज्अल लकुम्मौइदा ० व वुजिअल किताबु फतरल मुजरिमीन मुश्फीकीन मिम्मा फीहि व यकूलून यावैलतना मालि हाज़ल किताबि ला युग़ादिरु सग़ीरतंव्वला कबीरतन इल्ला अह्साहा व वजदु मा अमिलू हाजिरा। वला यज़्लिमु रब्बुक अहदा ० वइज़ कुल्ना लिलमलाइकतिस्जुदू लिआदम फसजदू इल्ला इब्लीस। कान मिनल जिन्नि फफसक अन अम्रि रब्बिही। अफत्ताखिजु नहु व जुर्रीय्यतहु औलियाअ मिन दूनी वहुम लकु अदुंव्व। बिअस लिज़्ज़ॉलिमीन बदला ०मा अश्हद् त्तहुम ख़लकस्समावाति वलअर्ज़ी वला खलक अन्फुसिहिम व माकुन्तु मुत्तख़िज़ल मुज़िल्लीन अज़ुदा ० व यौम यकूलू नादू शुरकाईयल्लज़ीन ज़अम्तुम फदओहुम फलम यसस्तजिबू लहुम वजअलना बैनहुम्मौबिका ० व राअलमुजरिमून न्नार फज़न्नू अन्हुम्मवाकिऊहा वलम यजिदू अन्हा मसरिफा ० व

لَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ
جَدَلًا ○ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ○ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَا
اُنْذِرُوْا هُزُوًا ○ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ تَدْعُهُمْ
اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ○ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ
بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ○ وَ

लक्द सर्रफ्ना फी हाज़लकुरआनि लिन्नासि मिन कुल्लि मसलि। वकानल इन्सानु अकसरशैइन जदला ○ वमा मनअन्नास अंय्युअमिनू इज जाअहुमुलहुदा वयस्तग्फिरु रब्बहुम इल्ला अन तातीयहुम सुन्नतुल अव्वलीन औ यातियहुमुलअज़ाबु कुबुला ○ वमा नुरसिलुल मुरसलीन इल्ला मुबश्शिरीन व मुनज़िरीन वयुजादिलुल्लज़ीन कुफरु बिलबातिलि लियुद् हिज़ू बिहील हक्क वत्तखिज़ु आयाती वमा उन्जिरू हुज़ुवा ○ व मन अज़लमु मिम्मन ज़ुक्किर बिआयाति रब्बिहि फाअरज़ अन्हा व नसिय मा कद्दमत यदाह। इन्ना जअलना अला कुलूबिहिम अकिन्नतन अंय्यफ्कहुहु व फि आज़ानिहीम वकरॉ व इन तदउहुम इलल हुदा फलंय्याहतदु इज़न अबदा ○ व रब्बुकल गफूरु ज़ुरहमाति। लवयुअ खिज़ुहुम बिमा कसबू लअज्जल लहुमुल अज़ाब। बल्लहुम्मौइदुल्लंय्यजिदू मिन दूनिही मौइला ○ व

تِلْكَ الْقُرٰى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ
لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ۝ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا
نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا
غَدَآءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ
فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي
الْبَحْرِ عَجَبًا ۝ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝ فَوَجَدَا
عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝ قَالَ
لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

तिल्कल कुरा अहलकनाहुम लम्मा ज़लमू व जअलना
लिमहलिकिहिम्मौइदा ० व इज़् काल मूसा लिफताहु ला
अब्रहु हत्ता अब्लुगु मज्मअलबहरैनि औ अमज़िय
हुकूबा ० फलम्मा बलग़ा मज्मअ बैनिहिमा नसीया हू
तहुमा फत्तखिज सबीलहु फिलबहरि सरबा ० फलम्मा
जावज़ा काल लिफताहु आतिना ग़दाअना लकद लकीना
मिन सफरिना हाज़ा नसबा ० काल अरऐत इज़् अवैना
इलस्सख़रति फइन्नी नसीतुलहूत वमा अन्सानियहु इल्लश्शैतानु
अन अज़कुरहू वत्तखिज सबीलहु फीलबहरि अजबा ०
काल ज़ालिक मा कुन्ना नबग़ि फरतद्द अला आसारिहिमा
कससा ० फवजदा अब्दम्मिन इबादिना आतैनाहु रहमतम्मिन
इंदिना वअल्लमनाहु मिल्लदुन्ना इल्मा ० काल लहु मूसा
हल अत्तबिउक अला अन तुअल्लिमनि मिम्मा उल्लिमत
रुश्दा ० काल इन्नक लन

مَعِيَ صَبْرًا ○ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ○ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ○ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى
اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ○ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا قَالَ اَخَرَقْتَهَا
لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ○ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ
صَبْرًا ○ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ○ فَانْطَلَقَا
حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا
نُّكْرًا ○ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ○ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ
عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ○ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ

तसततीअ मइय सबरा ○ व कैफ तस्बिरु अला मा लम तुहित बिही खुबरा ○ काल सतजिदूनी इनशाअल्लाहु साबिरंव्व ला आसी लक अमरा ○काल फइनित्तबअतिनी फला तसअलनी अन शैइन हत्ता उहदिस लक मिंहु ज़िकरा ○ फन्तलका हत्ता इज़ारकिबा फीस्सफीनति खरकहा। काल अखरक्तहा लितुगरिक अहलहा लकद जिअत शैअन इमरा ○ काल अलम अकुल इन्नक लन तसततीअ मइय सब्रा ○ काल ला तुअखिज़्नी बिमा नसीतु व ला तुरहिक्नी मिन अम्री उस्रा ○ फनतलक्का हत्ता इज़ा लकीया गुलामन फकतलहु काल अक्तल्त नफ्सनन ज़किय्यतम्बीगैरि नफ्सि। लकद जिअत शैअन्नुकरा ○ काल अलम अकुल्लक इन्नक लन तसततीअ मइय सब्रा ○ काल इन सअल्तुक अन शैइम्बअदहा फला तुसाहिब्नी कद बलग्त मिल्लदुन्नी उज़्रा ○ फन्तलका हत्ता इज़ा अतया

اَهْلَ قَرْيَةِ اِسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ
يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ○ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَ
بَيْنِكَ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ○ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ
لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ
كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ○ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا
طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ○ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ○ وَ
اَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ
اَبُوْهُمَا صَالِحًا فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً

अहल करयति निस्ततअमा अहलहा फअबव अंय्युजय्यीफु हुमा फवजदा फीहा जिदारंय्युरिदु अंय्यनकज़्ज़ फअकामहु। काल लवशिअत लत्तखजत अलैहि अजरा ०काल हाजा फिराकु बैनी व बैनिक सउनब्बिउक बिताव्वीलि मालम तसूततिअ्अलैहि सब्रा० अम्मससफीनतु फकानत लिमसाकीन यअमलून फिलबहरि फअरत्तु अन अईयबहा वकान वरॉअ हुम्मलिकुंय्या खुजु कुल्ल सफीनतिन गसबा ० वअम्माल गुलामु फकान अबवाहु मुअमिनैनी फखशीना अंय्युरहिकहुमा तुगयानंव्वकुफरा ० फअरदना इंय्युब्दि लहुमा रब्बुहुमा खैरम्मिनहु जकातंव्व अकरब रुहमा ० व अम्मल जिदारु फकान लिगुलामैनी यतीमैनि फिल मदीनति वकान तहतहु कन्जुल्लहुमा व कान अबूहुमा सॉलिहा फअराद रब्बुक अंय्यबलुगा अशुद्द हुमा वयसतखरिजा कन्जहुमा

مِنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۞ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۞ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۞ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ۞ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ۞ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۞ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ۞ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۞ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۞ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۞ ثُمَّ اَتْبَعَ

रहमतम्मिर्रब्बिक वमा फअल्तुहू अन अम्रि। ज़ालिक तावीलु मालम तस्तिअ्अलैहि सब्रा ० वयस्अलूनक अन ज़िलकरनैनि। कुल सअत्लू अलैकुम मिन्हु ज़िकरा ० इन्ना मक्कन्ना लहु फिलअर्ज़ि व आतैनाहु मिन कुल्लि शैइन सबबा ० फअत्बअ सबबा ० हत्ता इज़ा बलग़ मग़्रिबश्शम्सी वजदहा तग़रुबु फी औनि हमिअतिंव्व वजद इन्दहा कौमा। कुल्ना याज़लकरनैनि इम्मा अन तुअज़्ज़िब व इम्मा अन तत्तखिज़ फीहिम हुस्ना ० काल अम्मा मिन ज़लम फसौफ नुअज़्ज़िबुहु सुम्म युरद्दु इला रब्बिही फयुअज़्ज़िबुहु अज़ाबन्नुक्रा ० व अम्मा मन आमन व अमिल सॉलिहन फलहु जज़ाअल हुस्ना व सनकूलु लहु मिन् अम्रिना युस्रा ० सुम्म अतबअ सबबा ० हत्ता इज़ा बलग़ मत्लिअश्शमसि वजदहा

سَبَبًا ○ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
قَوْلًا ○ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ○ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ
خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ○ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰٓى
اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ
عَلَيْهِ قِطْرًا ○ فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ○ قَالَ هٰذَا
رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ○
وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ○ ق

तत्लुउ अला कौमिल्लमनजअल्लहुम मिन दूनिहासितरा ○ कज़ालिक। वकद अहत्ना बिना लदैही खुबरा ○ सुम्म अत्बअ सबबा ○ हत्ता इज़ा बलग़ बैनस्सद्दैनि वजद मिन दूनिहिमा कौमल्ला यकादून यफ्कहून कौला ○ कालू याज़लकरनैनि इन्न याजूज व माजूज मुफ्सिदून फ़िल अर्ज़ि फहल् नज्अलु लक खर्जन अला अन तजअल बैनना व बैनहुम सद्दा ○ काल मा मक्कन्नी फीहि रब्बी खैरुन फअईनू नी बिकूव्वतिन अजअल बैनकुम व बैनहुम रद्मा ○ आतूनी ज़ुबरल हदीद। हत्ता इज़ा सावा बैनस्सदफैनि कालन्फुखु। हत्ता इज़ा जअलहु नारन काल आतूनी उफरिग् अलैहि कितरा ○ फमस्ताऊ अंय्युज़्हरुहु वमस्तताऊ लहु नक्बा ○ काल हाज़ा रहमतुम्मिर्रब्बी फइज़ा जाअ वअदु रब्बी जअलहु दक्काअ वकान वअदुरब्बी हक्का○ वतरक्ना बअज़हुम यौमइज़िंय्यमूजु

عَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ○ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ عَنْ
ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ○ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا
عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْٓ اَوْلِيَآءَ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ○ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ
بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ○ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ○ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ○ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِىْ وَرُسُلِىْ هُزُوًا ○ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ○ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ○ قُلْ لَّوْ

फि बअ्जिंव वनुफिख़ फिस्सूरि फजमअ्नाहुम जमआंव ○ वअरज़्ना जहन्नम यौमइजिल्लिलकाफिरीन अर्ज़ा ○ निल्लजीन कानत् अअयुनुहुम फी गिताइन अन जिक्री व कानू ला यस्ततीउन समअ़ा ○ अ-फ-हसिबल्लजी-न कफरु अंय्यत्तख़िजू ईबादी मिन दूनी औलियाअ, इन्ना अअ्तद्ना जहन्नम लिल्काफिरीन नुजुला ○ कुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़्सरीन अअ्माला ○ अल्लजीन जल्ल सअ्युहुम फिल हयातिद्दुनया व हुम यह्सबून अन्नहुम युह्सिनून सुन्आ○ उलाइ कल्लजी न कफरु बिआयाति रब्बिहिम् व लिकाइही फहबितत् अअ्मालुहुम् फला नुकीमु लहुम् यौमल् कियामति वज़्ना ○ जालिक जजाउहुम् जहन्नमु बिमा कफरु वत्त खज़ू आयाती व

كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّىْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّىْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝

रुसुली हुजुवा ० इन्नल्लजीन आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल् फिरदौसि नुजुला ० खालिदीन फीहा ला यब्गुन अन्हा हिवला ० कुल लौ कानल् बहरू मिदादल्लिकलिमाति रब्बी लनफिदल्बहरु कब्ल अन् तन्फद कलिमातु रब्बी व लौ जिअना बिमिस्लिही मददा ० कुल इन्नमा अना बशरुम मिस्लुकुम् युहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्वाहिदून् फमन कान यर्जू लिकाअ रब्बिही फलयअमल् अमलन सॉलिहंव्वला युश्रिक बिईबादति रब्बिही अहदा ०

कोई काम दुशवार हो जाने के वक्त की दुआ

कोई काम दुशवार हो जाए (या कोई मुशकील आन पढे) तो ये दुआ पढे.

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ الْحُزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ

अल्लाहुम्मा ला सहल इल्ला मा जअलतहु सहलवंव अनता तजअलुल हुजन सहलन इजा शिअता ०

सूरेह सज्दा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ
بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝
يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ
اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝
الَّذِيْ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ

अलिफ् लाम् मीम ० तन्ज़ीलुल् किताबि ला रैब फ़ीहि मिर्रब्बिल् आलमीन ० अम् यक़ूलूनफ्तराहु बल् हुवल हक्कु मिर्रब्बिक लितुन्ज़िर क़ौमम्मा अताहुम मिन् नज़ीरिम्मिन क़ब्लिक लअल्लहुम यह्तदून ० अल्लहुल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वलअर्ज़ वमा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल् अर्शि मा लकुम मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्वला शफ़ीइन, अफ़ला ततज़क्करून ० युदब्बिरुल अम्र मिनस्समाई इलल् अर्ज़ि सुम्-म यअ्रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ स-नतिम्-मिम्मा तअुद्दून ० ज़ालि-क आलिमुल-ग़ैबि वश्शहा-दतिल् अज़ीज़ुर-रहीम ० अल्लज़ी अह्स-न कुल्-ल शैइन् ख़-ल-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल्-इन्सानि मिन तीन ०

جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ
مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ
كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ
اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا
لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا

सुम्म ज-अ-ल नस्-लहु मिन् सुला-लतिम् मिम्मा-इम-महीन ० सुम्म सव्वाहु व न-फ-ख़ फीहि मिर्रूहिही व ज-अ-ल लकुमुस्-सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफ्इ-द-त, कलीलम्-मा तश्कुरून ०व कालू अ-इज़ा ज़लल्ना फिल्अर्ज़ि अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्किन् जदीदिन्, बल् हुम् बिलिका-इ रब्बिहिम् काफ़िरून ० कुल् य-तवफ्फाकुम् म-लकुल्-मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जऊन ० व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अिन्-द रब्बिहिम्, रब्बना अब्सर्ना व समिअ्ना फर्जिअ्ना नअ्मल् सालिहन् इन्ना मूकिनून ० व लौ शिअ्ना लआतैना कुल्-ल नफ्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक्कल्-कौलु मिन्नी ल-अम्-लअन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नाति वन्नासि अज्मईन ० फज़ूकू बिमा नसीतुम् लिका-अ यौमिकुम् हाज़ा इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूकू

عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِّرُوْا
بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ○ تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ
عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ أَفَمَنْ
كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوٗنَ ○ أَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَأْوٰى نُزُلًا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ وَأَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَأْوٰىهُمُ
النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوْا أَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا أُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ
الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ○ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ

अज़ाबल्-खुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ्मलून ० इन्नमा युअ्मिनु बिआयातिनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरु बिहा ख़र्रू सुज्जदंव्-व सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून ० तत-जाफ़ा जुनूबुहुम् अनिल्-मज़ाजिअि यद्उ-न रब्बहुम् ख़ौफ़ंव्-त-मअंव्व मिम्मा रज़क्नाहुम् युन्फ़िकून ० फ़ला तअ्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् कुर्रति अअ्युनिन्, जज़ा-अम् बिमा कानू यअ्ममलून ० अ-फ़-मन् का-न मुअ्मिनन् कमन् का-न फ़ासिकन्, ला यस्तवून ० अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सॉलिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल्-मअ्वा नुज़ुलम् बिमा कानू यअ्मलून ० व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्वाहुमुन्नारु, कुल्-लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उईदू फ़ीहा व क़ी-ल लहुम् ज़ूक़ू अज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून ० व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् अज़ाबिल्- अदना दुनलअज़ाबिल

الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ○ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ○ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ
فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً
يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ○ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ○ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
أَفَلَا يَسْمَعُونَ ○ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ
زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ○ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا

अक्बरि लअल्लहुम् यर्जिऊन ○ व मन अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ्र-ज़ अन्हा, इन्ना मिनल् मुज्रिमी-न मुन्तक़िमून ○ व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ला तकुन् फ़ी मिर्यतिम् मिल्लिक़ा-इही व जअल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राईल ○ व जअल्ना मिन्हुम् अ-इम्मतंय्-यह्दू-न बिअम्रिना लम्मा स-बरू, व कानू बिआयातिना यूक़िनून ○ इन्-न रब्ब-क हु-व यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून ○ अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्-क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिन्, अ-फ़ला यस्मऊन ○ अ-व लम् यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अइलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़नुख़्रिजु बिही ज़र्अन् तअ्कुलु मिन्हु अन्आमुहुम् व अन्फ़ुसुहुम्, अ-फ़ला युब्सिरून ○ व यक़ूलू-न मता

الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ○ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ○

हाज़ल्-फ़त्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ० कुल यौमल्-फ़त्हि ला यन्फ़उल्लज़ी-न क-फ़रू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून ० फ़-अअ्रिज़् अन्हुम् वन्तज़िर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून ०

चार करोड नेकियां

हज़रत तमीमदारी रज़ि. से रिवायत है के हुज़ुर पाक स. ने फर्माया के जो शख़्स इन चार कलमात को दस मर्तबा कहे तो इस के लिए चार करोड नेकियां लिख दी जाती है.

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا
صَمَدًا لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

अशहदु अंल्लाइलाहा इल्ललाहु वाहदहु ला शरीक लहु इलाहंव्वाहिदन अहदन समदल्लम यत्तखिज साहिबतंव्वला वलदंव्वलम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद ०

(मुसनदे अहमद, तिर्मीज़ी)

सुरेह यासीन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰسٓ ○ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ○ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ○ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ○ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ○ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ○ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ○ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ○ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ○ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ

या-सीन् ○ वल्कु रआनिल्-हकीम ○ इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन ○ अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ○ तन्ज़ीलल् अ़ज़ीज़िर्-रहीम ○ लितुन्ज़ि-र कौमम्मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फहुम ग़ाफ़िलून ○ ल-कद् हक्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सारिहिम् फहुम् ला युअ्मिनून ○ इन्ना जअ़ल्ना फी अअ्नाकिहिम् अग्लालन् फहि-य इलल्-अज़्क़ानि फहुम् मुक़्महून ○ व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ-अग़्शैनाहुम् फहुम् ला युब्सिरून ○ व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िरहुम् ला युअ्मिनून ○ इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़्ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि फ-बश्शिरहु बिमग़्फि-रतिंव्-व अज्रिन् करीम ○ इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसा-रहुम्, व कुल्-ल शैइन्

أَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ إِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا أَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ إِذْ جَآءَهَا
الْمُرْسَلُوْنَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا إِنَّآ
إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْا مَآ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ أَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ۝ وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ۝ قَالُوْٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا
عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۝ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۚ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَ
جَآءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اتَّبِعُوْا مَنْ
لَّا يَسْـَٔلُكُمْ أَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَإِلَيْهِ

अह्सैनाहु फी इमामिम्-मुबीन ० वज़्रिब् लहुम् म-सलन्
अस्हाबल्-कर्-यति ॰ इज् जा-अहल्-मुर्-सलून ० इज्
अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ-कज़्ज़बूहुमा फ-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन्
फ्क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्सलून ० कालू मा अन्तुम् इल्ला
ब-शरुम्-मिस्लुना व मा अन्ज़लर्-हमानु मिन शैइन् इन्
अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून ० कालू रब्बुना यअ्लमु इन्ना
इलैकुम् ल-मुर्-सलून ० व मा अ़लैना इल्लल्-बलागुल-मुबीन
० कालू इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तहू
ल-नर्जुमन्नकुम् व ल-यमस्सन्नकुम् मिन्ना अज़ाबुन् अलीम
० कालू ताॅईरुकुम् म-अकुम् अ-इन् ज़ुक्किर्तुम्, बल्
अन्तुम् कौमुम्-मुस्रिफून ० व जा-अ मिन् अक्सल्-मदीनति
रजुलुंय्-यस्आ, काल- या कौमित्तबिउ़ल्-मुर्-सलीन ०
इत्तबिउ़ मल्ला यस्अलुकुम अज्रंव्हुम मुह्तदून ० व मा
लि-य ला अअ्बुदुल्लज़ी फ-त-रनी व इलैहि

تُرْجَعُوْنَ ○ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ○ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ
فَاسْمَعُوْنِ ○ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ○ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ
وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ○ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ
مَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ○ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ○ يٰحَسْرَةً
عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ○ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ
اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ○ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ
لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ○ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

तुर्जऊन ○ अ-अत्तखिज़ु मिन् दूनिही आलि-हतन् इय्युरिद्-निर्-रह्मानु बिज़ुर्रिल्-ला तुग्नि अन्नी शफा-अतुहुम् शैअंव्व ला युन्क़िज़ुन ○ इन्नी इज़ल्-लफी ज़लालिम्-मुबीन ○ इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मऊन ○ कीलद्खुलिल्-जन्न-त, का-ल यालै-त कौमी यअ्लमून ○ बिमा ग़-फ-र ली रब्बी व ज-अ-लनी मिनल्-मुक्रमीन ○ व मा अन्ज़ल्ना अ़ला कौमिही मिम्बअ्दिही मिन जुन्दिम्-मिनस्समा-इ व मा कुन्ना मुनिज़लीन ○ इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ-इज़ा हुम् ख़ामिदून ○ या हस्-रतन् अ़लल्-इबादि, मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ○ अलम् यरौ कम् अहलक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-कुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यरजिऊन ○ व इन् कुल्लुल्-लम्मा जमीउल-लदैना मुहज़रून ○ व आ-यतुल् लहमुल्-अर्ज़ुल्-मै-ततु अहयैनाहा व अख़रज्ना मिन्हा

يَأْكُلُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهٖ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيهِمْ اَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحٰنَ الَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُونَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِىْ لَهَا اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُونَ ۝ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُونَ ۝ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ

हब्बन् फमिन्हु यअ्कुलून ० व-जअ्ल्ना फीहा जन्नातिम् मिन् नखीलिंव्-व अअ्नाबिंव-व फज्जरना फीहा मिनल्-उयून ० लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अमिलतहु ऐदीहिम्, अ-फला यश्कुरून ० सुब्हानल्लज़ी ख-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अरज़ु व मिन् अन्फुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्लमून ० व आ-यतुल् लहुमुल्लैलु नस्-लखु मिन्हुन्नहा-र फ-इज़ा हुम् मुज़्लिमून ० वश्शम्सु तज्री लिमुस्त-कर्रिल्-लहा, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अज़ीज़िल्-अलीम ० वल्क़-म-र क़द्दरनाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ-द कल्-उर्जूनिल्-क़दीम ० लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल् क़-म-र व लल्लैलु साबिकुन्-नहारि, व कुल्लुन् फी फ-लकिंय्-यस्बहून ० व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ना ज़ुर्रिय्य-तहुम् फिल्-फुल्किल्-मश्हून ० व ख़लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून ० व इन्न-शअ् नुग़्रिक़्हुम् फला

لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۙ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ○ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا
مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ
رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ○ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ○ مَا يَنْظُرُوْنَ
اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ○ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً
وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۧ وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ
يَنْسِلُوْنَ ○ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ

सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ुन ० इल्ला रह्म-तम् मिन्ना व मताअन् इला हीन ०व इज़ा की-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् लअ़ल्लकुम् तुर्‌हमून ० व मा तअ्तीहिम् मिन् आ-यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अन्हा मुअ्‌रिज़ीन ० व इज़ा की-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु कालल्लज़ी-न कफ़रु लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्‌अिमु मल्लौ यशाउल्लहु अत्-अ़-महू इन् अन्तुम् इल्ला फी ज़लालिम्- मुबीन ० व यक़ूलू-न मता हाज़ल वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ० मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सै-हतंव्-वाहि-दतन् तअ्ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून ० फ़ला यस्ततीऊ-न तौसि-यतंव्-व ला इला अहि्लहिम् यर्‌जिऊन ०व नुफ़िख़ फ़िस्सूरि फ-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून ० कालू या वैलना म्मब-अ़-सना मिम्-मर्‌क़दिना ' हाज़ा मा व-अ़-दर्रह्मानु

الْمُرْسَلُوْنَ ○ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ○ فَالْيَوْمَ
لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ
فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ○ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ○ لَهُمْ
فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ○ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ○ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ
أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ○ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْ آدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ إِنَّهُ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ○ وَّأَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ○ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ
جِبِلًّا كَثِيْرًا أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ○ هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ○
اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ○ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيْهِمْ

व स-दक़ल्-मुरसलून ○ इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ-इज़ा हुम् जमीउल्लदैना मुहज़रून ○ फलयौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्मलून ○ इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फी शुगुलिन् फाकिहून ○ हुम् व अज़्वाजुहुम् फी ज़िलालिन् अ़लल्-अराइकि मुत्तकिऊन ○ लहुम् फीहा फाकि-हतुंव्-व लहुम् मा यद्-दऊन ○ सलामुन्, क़ौलम् मिर्रब्बिर्-रहीम ○ वम्ताज़ुल्-यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून ○ अलम् अअ्हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ्बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन ○ व अनिअ्बुदूनी, हाज़ा सिरातुम् मुस्तकीम ○ व ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन्, अ-फ़लम् तकूनू तअ्किलून ○ हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून ○ इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून ○ अलयौ-म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम्

وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ○ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ○ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّ
لَا يَرْجِعُوْنَ ○ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ○ وَمَا عَلَّمْنٰهُ
الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ○ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا
وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ○ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا
فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ○ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ○ وَلَهُمْ فِيْهَا
مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ○ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ
يُنْصَرُوْنَ ○ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ○ فَلَا يَحْزُنْكَ

व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून ० व लौ नशा-उ ल-तमस्ना अ़ला अअ्युनिहिम् फस्त-बकुस्सिरा-त फ-अन्ना युब्सिरून ० व लौ नशा-उ ल-मसख़्नाहुम् अ़ला मका-नतिहिम् फ-मस्तताअ़ मुज़िय्यंव्-व ला युर्जिऊन ० व मन् नुअम्मिरहु नुनक्किस्हु फिल्ख़ल्क़ि अ-फला यअ्क़िलून ० व मा अ़ल्लम्नाहुश्-शिअ्-र व मा यम्बग़ी लहु इन्-हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्व कुरआनुम्-मुबीनुल ० लियुन्ज़ि-र मन् का-न हय्यंव्व यहिक्कल्-कौलु अ़लल्-काफ़िरीन ० अव लम् यरौ अन्ना ख़लक़्ना लहुम! मिम्मा अ़मिलत् ऐदीना अन्आमन् फहुम् लहा मालिकून ० व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फमिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून ० व लहुम् फीहा मनाफिउ़व मशारिबु, अ-फला यश्कुरून ० वत्त-ख़ज़ू मिन! दूनिल्लाहि अलि-हतल् लअ़ल्लहुम् युन्सरून ० ला यस्ततीऊ़-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुह्ज़रून ०

قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ○ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ○ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ○ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ○ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ○ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ○ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ○

फला यह्जुन्-क कौलुहुम् ⁿ इन्ना नअ्लमु मा युसिर्रून व मा युअ्लिनून ○ अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना खलक्नाहु मिन् नुत्फतिन् फ-इजा हु-व खसीमुम्-मुबीन ○ व ज़-र-ब लना म-सलंव्व नसि-य खल्कहू, का-ल मंय्युह्यिल्- इजा-म व हि-य रमीम ○ कुल् युह्यीहल्लजी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन्, व हु-व बिकुल्लि खल्किन् अलीमु-नि ○ ल्लजी ज-अ-ल लकुम् मिनश्श-जरिल्-अख़्-जरि नारन् फ-इजा अन्तुम् मिन्हु तूकिदून ○ अ-व लैसल्लजी ख-लकस्समावाति वल्अर्-ज बिकादिरिन् अला अंय्यख़्लु-क मिस्लहुम्, बला व हुवल् खल्लाकुल् अलीम ○ इन्नमा अम्रुहू इजा अरा-द शैअन् अंय्यकू-ल लहु कुन् फ-यकून ○ फ-सुब्हानल्लजी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्व इलैहि तुर्जऊन ○

सुरेह-दुख़ान

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ ○ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ○ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ○
فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ○ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ○ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ
كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ○ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ○
بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ○ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ○
يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ○
اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ○ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ

हा-मीम् ○ वल्-किताबिल्-मुबीन ○ इन्ना अन्ज़ल्नाहु फी लै-लतिम् मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन ○ फीहा युफ़्रकु कुल्लु अम्रिन् हकीम ○ अमरम् मिन् इन्दिना, इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन ○ रह्म-तम् मिर्रब्बि-क इन्नहू हुवस्समीउल्-अलीम ○ रब्बिस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमा इन् कुन्तुम् मूकिनीन ○ ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु, रब्बुकुम् व रब्बु आबा-इकुमुल्-अव्वलीन ○ बल् हुम् फी शक्किंय्-यल्-अबून ○ फ़र्तकिब् यौ-म तअ्तिस्समा-उ बिदुख़ानिम्-मुबीन ○ यग्शन्ना-स, हाजा अज़ाबुन् अलीम ○ रब्बनक्शिफ़् अन्नल् अज़ाबुन् अलीम ○ रब्बनक्शिफ़् अन्नल्-अज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून ○ अन्ना लहुमुज़्ज़िक्रा व कद् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन ○ सुम्-म तवल्लौ अन्हु व कालू

مَجْنُوْنٌ ۝ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۝ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ ۟ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ

मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून ० इन्ना काशिफुल्-अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ़-इदून ० यौ-म नब्तिशुल् बत्-शतल्-कुब्रा इन्ना मुन्तक़िमून ० व ल-क़द् फ़तन्ना क़ब्लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम ० अन् अद्दू इलय्-य इबादल्लाहि, इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन ० व अल्-ला तअ्लू अ़लल्लाहि, इन्नी आतीकुम् बिसुलतानिम् -मुबीन ० व इन्नी उ़ज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून ० व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्तज़िलून ० फ़-दआ़ रब्बहू अन्-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून ० फ़-अस्रि बिइबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त-बअ़ून ० वत्रुकिल्-बह्-र रह्वन्, इन्नहुम् जुन्दुम् मुग्-रक़ून ० कम् त-रकू मिन् जन्नातिंव्-व अ़यूनिंव ० व ज़ुरूइंव्-व मक़ामिन् करीमव० व नअ्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़किहीन ० कज़ालि-क, व औरस्नाहा क़ौमन् आ-ख़रीन ० फ़मा ब-कत् अ़लैहिमुस्समा-उ

الْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۞ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ۞ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۞ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ
عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۞ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۞ اِنَّ
هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۞ اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۞ فَاْتُوْا
بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞ اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
اَهْلَكْنٰهُمْ ۖ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۞ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لٰعِبِيْنَ ۞ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۞ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۞

वल्अरज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन ० व ल-क़द् नज्जैना बनी इसराई-ल मिनल्-अज़ाबिल्-मुहीन ० मिन् फ़िरऔ-न, इन्नहू का-न आलि-यम् मिनल्-मुस्रिफ़ीन ० व ल-क़दिख़्तरनाहुम् अला इल्मिन् अलल्-आलमीन ० व आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन ० इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून ० इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नाहनु बिमुन्शरीन ० फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ० अ-हुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बइंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, अह्लक्नाहुम् इन्हुम् कानू मुज्रिमीन ० व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर-ज़ व मा बैनहुमा लाइबीन ० मा ख़लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून ० इन्-न यौमल्-फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्मईन ० यौ-म ला युग़्नी मौलन् अम्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून ०

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ۝ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ۝ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَاۗءِ الْجَحِيْمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ۝ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ۝ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ ۣ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۝ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ۝

इल्ला मर्रहिमल्लाहु, इन्नहु हुवल् अज़ीज़ुर्रहीम ० इन्-न श-ज-रतज़्ज़क्कूम ० तआमुल्-असीम ० कल्मुहिल यग्ली फिल्बुतून ० क-गलयिल्-हमीम ० खुज़ूहु फअ्तिलूहु इला सवाइल्-जहीम ० सुम्-म सुब्बू फौ-क रअ्सिही मिन् अज़ाबिल्-हमीम ० ज़ुक् इन्न-क अन्तल्-अज़ीज़ुल्-करीम ० इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून ० इन्नल्-मुत्तकी-न फी मकामिन् अमीन ० फी जन्नातिंव्-व अुयूनिं ० यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रकिम मु-तकाबिलीन ० कज़ालि-क, व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अीन ० यद्अू-न फीहा बिकुल्लि फाकि-हतिन् आमिनीन ० ला यज़ूकू-न फीहल्मौ-त इल्लल्-मौ-ततल्-ऊला व वकाहुम् अज़ाबल्-जहीम ० फ़ज़्लम्-मिर्रब्बि-क, ज़ालि-क हुवल् फौज़ुल्-अज़ीम ० फ-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लअल्लहुम् य-तज़क्करून ० फर्-तकिब्-इन्नहुम् मुर्-तकिबून ०

सुरेह - फताह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝ وَيَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ
فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ

इन्ना फ-तह्ना ल-क फत्हम्-मुबीनल ० लि-यग्फि-र लकल्लाहु मा तकद्द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख्ख-र व युतिम् निअ्-म-तहू अलै-क व यह्दि-य-क सिरातम्-मुस्तकीमंव ० व यन्सु-रकल्लाहु नस्रन् अज़ीज़ा ० हुवल्लज़ी अन्ज़लस्सकी-न-त फी कुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ ईमानिहिम्, व लिल्लाहि जुनुदुस्समावाति वल् अर्जि, व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा ० लियुद्खिलल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तहितहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा व युकफ्फि-र अन्हुम् सय्यिआतिहिम्, व का-न ज़ालि-क इन्दल्लाहि फौज़न् अज़ीमंव ० व युअज़्ज़िबल्-मुनाफिकी-न वल्मुनाफिकाति वल् मुश्रिकी-न वल् मुश्रिकातिज्-ज़ान्नी-न बिल्लाहि ज़न्नस्सौई, अलैहिम् दाई-रतुस्-सौइ व गज़िबल्लाहु

السَّوْءِ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيْرًا ○ وَ
لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ○ اِنَّا اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ
مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ○ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ
اَصِيْلًا ○ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ فَمَنْ
نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ○
سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَا اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُوْلُوْنَ
بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا
اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ○ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ

अलैहिम् व ल-अ-नहुम् व अ-अद्-द लहुम् जहन्न-म, व साअत् मसीरा ०व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्जि, व कानल्लाहु अज़ीजन् हकीमा ० इन्न अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ० लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअज़्ज़िरूहु व तुवक्किरूहु, व तुसब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला ० इन्नल्लज़ी-न युबायिऊन- क इन्नमा युबायिऊनल्ला-ह, यदुल्लाहि फ़ौ-क ऐदीहिम् फ-मन्-न-क-स फ-इन्नमा यन्कुसु अला नफ़्सिही व मन् औफ़ा बिमा आ-ह-द अलैहुल्ला-ह फ-सयुअ्तीहि अज्रन् अज़ीमा ० स-यकूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्- अअ्राबि श-ग़लत्ना अम्वालुना व अह्लुना फ़स्तग़्फ़िर् लना यकूलू-न बि-अल्सि-नतिहिम् मा लै-स फ़ी कुलूबिहिम्, कुल् फ-मय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्अन्, बल् कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीरा ० बल् ज़नन्तुम् अल्लंय्यन्कलिबर्-रसूलु

وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ○ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ○ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۗ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ○ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ

वल्-मुअ्मिनु-न इला अह्लीहिम् अ-बदंव्व जुय्यि-न जालि-क फी कुलूबिकुम् व जनन्तुम् जन्नस्सौइ व कुन्तुम् कौमम्-बूरा ० व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ-इन्ना अअ्तद्ना लिल्काफिरी-न सईरा ० व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि, यग्फिरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व कानल्लाहु गफूरर्-रहीमा ० स-यकुलुल्-मुख़ल्लफु-न इजन्त- लक्तुम् इला मगानि-म लितअ्ख़ुजूहा जरूना नत्तबिअ्कुम् युरीदू-न अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि, कुल्-लन् तत्तबिऊना कजालिकुम् कालल्लाहु मिन् कब्लु फ-स-यकूलू-न बल् तह्सुदु-नना बल् कानू ला यफ्कहू-न इल्ला कलीला ० कुल् लिल्-मुख़ल्लफी-न मिनल्-अअ्राबि स-तुद्औ-न इला कौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुकातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ-इन् तुतीऊ युअ्तिकुमुल्लाहु अज्रन् हसनन् व इन् त-तवल्लौ कमा तवल्लैतुम् मिन् कब्लु युअ़ज़्ज़िब्कुम्

عَذَابًا أَلِيمًا ○ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ
حَرَجٌ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَنْ
يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ○ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ
الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ○ وَ
مَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ○ وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً
تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هَٰذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً
لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ○ وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ○ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ

अज़ाबन् अलीमा ○ लै-स अलल्-अअ्मा ह-रजुंव्-व
ला अलल्-अअ्रजि हर-जुंव-व ला अ-लल्मरीजि हरजुन,
वमंय्युतिइल्ला-ह व रसूलहू युदखिल्हु जन्नातिन् तज्री
मिन तहितहल्-अन्हारु व मंय्य-तवल्-ल युअज़्ज़िब्हु
अज़ाबन् अलीमा ○ ल-क़द् रज़ियल्लाहु अनिल्-मुअ्मिनी-न
इज् युबायिऊन-क तह्तश्श-ज-रति फ-अलि-म मा फी
कुलूबिहिम् फ-अन्ज़-लस्सकी-न-त अलैहिम् व असाबहुम्
फत्हन् करीबा ○ व मगानि-म कसी-रतंय्-यअ्खुज़ूनहा,
व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमा ○ व-अ-दकुमुल्लाहु
मगानि-म कसी-रतन् तअ्खुज़ूनहा फ-अज्ज-ल लकुम्
हाज़िही व कफ्-फ एदि-यन्नासि अन्कुम् व लितकू-न
आ-यतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्-मुस्तकीमा
○ व उख्रा लम् तक्दिरू अलैहा कद् अहातल्लाहु बिहा,
व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीरा ○ व लौ
कात-लकुमुल्लज़ी-न क-फरू ल-वल्लवुल्-अद्बा-र सुम्-म

لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ○ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ
لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ○ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ
مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ○ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ
مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ○ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ
فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ

ला यजिदू-न वलिय्यंव् व ला नसीरा ○ सुन्नतल्लाहिल्लती कद् ख-लत् मिन् कब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ○ व हुवल्लजी कफ़-फ ऐदि-यहुम् अन्कुम् व ऐदि-यकुम् अन्हुम् बि-बतनि मक्क-त मिम्-बअ्दि अन् अज्-फ़-रकुम् अलैहिम्, व कानल्लाहु बिमा तअ्लमू-न बसीरा ○ हुमुल्लजी-न कफ़रू व सद्दूकुम् अनिल्-मस्जिदिल्-हरामि वल्हद्-य मअ्कूफन् अंय्यब्लु-ग महिल्-लहु, व लौ ला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम् मुअ्मिनातुल्-लम् तअ्लमुहुम् अन् त-तऊहुम् फतुसी-बकुम् मिन्हुम् म-अर्रतुम्-बिगैरि इल्मिन् लि-युदखिल-ल्लाहु फी रह्मतिही मंय्यशा-उ लौ तजय्यलू ल-अज़्ज़ब्नल्लजी-न क-फरू मिन्हुम् अजाबन् अलीमा ○ इज् ज-अलल्लजी-न क-फरू फी कुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्यल्-जाहिलिय्यति फ-अन्ज़लल्लाहु सकी-न-तहु अला रसूलिही व अलल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज-महुम् कलि-मतत्-तक्वा व

كَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا
بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ
لَا تَخَافُوْنَ ۭ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَي الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَي الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا
سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۡ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ۭ
ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰي سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۭ وَعَدَ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

कानु अ-हक्-क बिहा व अह्लहा, व कानल्लहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा ० ल-क़द् स-दक़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्या बिल्हक़्क़ि ल-तद्खुलुन्नल्- मस्जिदल्-हरा-म इन् शा-अल्लाहु आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न रुऊ-सकुम् व मुक़स्सिरी-न ला तख़ाफ़ू-न, फ़-अलि-म मा लम् तअ्-लमु फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्हन् क़रीबा ० हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा ० मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि, वल्लज़ी-न म-अहू अशिद्दा-उ अ़लल्-कुफ़्फ़ारि रु-हमा-उ बैनहुम् तराहुम् रुक्क-अन् सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम्-मिन् अ-सरिस्सुजूदि, ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम फ़िल्-इन्जीलि, क-ज़रइन् अख़्र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्तवा अ़ला सूक़िही युअ्जिबुज़्ज़ुर्रा-अ़ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र, व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनु व अ़मिलुस्सॉलिहाति मिन्हुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा ०

सूरेह काफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ
هٰذَا شَیْءٌ عَجِیْبٌ ۚ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِیْدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا
مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِیْظٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ
لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِیْٓ اَمْرٍ مَّرِیْجٍ ۝ اَفَلَمْ یَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَیْفَ بَنَیْنٰهَا
وَزَیَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَیْنَا فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْۢبَتْنَا
فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِیْجٍ ۚ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِیْدِ ۚ وَالنَّخْلَ

काफ 1 वल्-कुरआनिल्-मजीद बल अजिबु अन् जा-अहुम् मुन्जिरुम्-मिन्हुम् फकालल्-काफिरू-न हाजा शैउन् अजीब ० अ-इजा मित्ना व कुन्ना तुराबन् जालि-क रज्उम्-बईद ० कद् अलिम्ना मा तुन्कुसुल्-अर्जु मिन्हुम् व इन्दना किताबुन् हफीज ० बल् कज़्ज़बू बिल्-हक्कि लम्मा जा-अहुम् फहुम् फी अम्रिम्-मरीज ० अ-फ लम् युन्जुरू इलस्समा-इ फौकहुम् कै-फ बनैनाहा व जय्यन्नाहा व मा लहा मिन् फुरूज ० वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्कैना फीहा रवासि-य व अम्बत्ना फीहा मिन् कुल्लि जौजिम्-बहीज ० तब्सि-रतंव्-व जिक्रा लिकुल्लि अब्दिम्मुनीब ० व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् मुबा-रकन् फ-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद ० वन्नख्-ल

بَاسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ○ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ
الْخُرُوْجُ ○ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ○ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ
وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ○ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ○
اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ○ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۖۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ○
اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ○ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا
لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ○ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ
تَحِيْدُ ○ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ○ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا

बासिकातिल्-लहा तल्‌उन्-नजीद ○ रिज़्कल्-लिलइबादि व अह्‌यैना बिही बल्द-तम्-मैतन्, कज़ालिकल्-ख़ुरूज ○ कज़्ज़बत् कब्लाहुम् कौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद ○ व आदंव्-व फ़िर्‌औनु व इख़्वानु लूत ○ व अस्हाबुल्-ऐ-कति व कौमु तुब्बइन्, कुल्लुन् कज़्ज-बर्रुसु-ल फ-हक्-क वइद ○ अ-फ-अयीना बिलख़ल्किल्-अव्वलि, बल् हुम् फी लबिस्म्-मिन ख़ल्किन् जदीद ○ व ल-कद् ख़लक्नल्-इन्सा-न व नअ्लमु मा तुवस्विसु बिहा नफ़्सुहू व नहनु अक्रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद ○ इज् य-तलक्कल्-मु-तलक्कियानि अनिल्‌यमीनि व अनिश्शिमालि कइद ○ मा यल्फ़िजु मिन् कौलिन् इल्ला लदैहि रकीबुन् अतीद ○ व जाअत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक्कि, ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद ○ व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि, ज़ालि-क यौमुल्-वइद ○ व जाअत् कुल्लु नफ़्सिम्

سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ○ لَقَدْ كُنْتَ فِیْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ○ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَیَّ عَتِيْدٌ ○ اَلْقِيَا فِیْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ○ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ○ الَّذِیْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِی الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ○ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَا اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِیْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ○ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَیَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ○ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَیَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ○ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ○ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ○ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ○ مَنْ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ

म-अहा सा-इकुंव्व शहीद ० ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-कशफ़्ना अन्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद ० व का-ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल-दय्-य अतीद ० अल्क़िया फ़ी जहन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अनीद ० मन्नाइल्-लिल्ख़ैरि मुअ्तदिम्-मुरीब ० अल्लज़ी ज-अ-ल मअल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-अल्क़ियाहु फ़िल्-अज़ाबिश्-शदीद ० का-ल क़रीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फ़ी ज़लालिम्-बईद ० का-ल ला तख़्तसिमू ल-दय्-य व क़द क़द्दमतु इलैकुम् बिल्-वईद ० मा युबद्दलुल्-क़ौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्-अबीद ० यौ-म नक़ूलु लि-जहन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तक़ूलु हल् मिम्-मज़ीद ० व उज़्लि-फ़तिल् जन्नतु लिल्मुत्तक़ी-न ग़ै-र बईद ० हाज़ा मा तू-अदू-न लिकुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीज़ ० मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि

بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا
وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا
فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ
أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ

व जा-अ बिक़ल्बिम्-मुनीब ० निद्खुलूहा बि-सलामिन्, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुलूद ० लहुम्-मा यशाऊ-न फ़ीहा व लदैना मज़ीद ० व कम् अहलक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्शन् फ़-नक़्क़बू फ़िल्-बिलादि, हल् मिम्-महीस ० इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहु क़ल्बुन् औ अल्क़स्सम्-अ व हु-व शहीद ० व ल-क़द् ख़लक़्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्ताति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्लुगूब ० फ़स्बिर् अला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूइश्शम्सि व क़ब्लल्-ग़ुरूब ० व मिनल्लैलि फ़-सब्बिहहु व अद्बारस्-सुजूद ० वस्तमिअ् यौ-म युनादिल्-मुनादि मिन्-मकानिन् क़रीब ० यौ-म यस्मऊनस्-सै-ह-त बिल्हक़्क़,

ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ○ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ○ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ○ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ○

ज़ालि-क यौमुल् खुरूज ० इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल्-मसीर ० यौ-म तशक्क-कुल्-अर्जु अन्हुम् सिराअन्, ज़ालि-क ह़श्रुन् अ़लैना यसीर ० नह्नु अअ्लमु बिमा यकूलू-न व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-जब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्-कुर्आनि मंय्यख़ाफ़ु वई़द ०

अदाए शुक्र

जिस ने ये दुआ सुबह के वक्त पढी तो इस ने इस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने ये दुआ शाम के वक्त पढी तो इस ने इस रात का शुक्र अदा कर दिया। (एक मर्तबा)

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्म मा असबह बि मिन्नअमतिन अवबिअहदिम म्मिन खलकिक फमिनक वहदक ला शरीक लक फलकलहमदु वलकशशुकरु.

शाम को **असबह** की जगह **अमसा** पढे।

(अबुदाउद ३१८/४, निसाई, इब्नुस्सुन्नी)

सुरेह-रहमान

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

اَلرَّحۡمٰنُ ۝ عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ ۝ خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الۡبَيَانَ ۝ اَلشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ ۝ وَّ
النَّجۡمُ وَالشَّجَرُ يَسۡجُدٰنِ ۝ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الۡمِيۡزَانَ ۝ اَلَّا تَطۡغَوۡا فِى الۡمِيۡزَانِ ۝ وَ
اَقِيۡمُوا الۡوَزۡنَ بِالۡقِسۡطِ وَلَا تُخۡسِرُوا الۡمِيۡزَانَ ۝ وَالۡاَرۡضَ وَضَعَهَا لِلۡاَنَامِ ۝ فِيۡهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّ
النَّخۡلُ ذَاتُ الۡاَكۡمَامِ ۝ وَالۡحَبُّ ذُو الۡعَصۡفِ وَالرَّيۡحَانُ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ خَلَقَ
الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ كَالۡفَخَّارِ ۝ وَخَلَقَ الۡجَآنَّ مِنۡ مَّارِجٍ مِّنۡ نَّارٍ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ رَبُّ الۡمَشۡرِقَيۡنِ وَرَبُّ الۡمَغۡرِبَيۡنِ ۝ فَبِاَىِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

अर्रहमानु ० अल्ल-मल्-कुरआन. खलकल् इन्सा-न ० अल्ल-महुल्-बयान ० अश्शम्सु वल्क-मरु बिहुस्बानिंव् ० वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान ० वस्समा-अ र-फ-अहा व व-जअल्-मीजान ० अल्ला ततगौ फिल्मीजान ० व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख्सिरुल्-मीज़ान ० वल्अर्-ज व-ज-अहा लिल्-अनाम ० फ़ीहा फाकि-हतुंव्-वन्नख्लु जातुल् अक्माम ० वलहब्बु जुल्-अस्फि वर्-रैहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० ख-लकल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्-फख्खार ० व ख-लक़ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्-नार ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० रब्बुल्मश्रिकैनि व रब्बुल्-मग्रिबैन ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ०

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ○ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يَخْرُجُ
مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ
كَالْاَعْلَامِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ○ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو
الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يَسْئَلُهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ○ فَبِاَيِّ
اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا

म-रजल्-बहरैनि यल्तकियान ० बैनहुमा बर्-जखुल-ला यब्गियान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० यख़रुजु मिन्हुमल्-लुअलुउ वल्-मरजान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० व लहुल्- जवारिल्-मुन्श-आतु फिल्बहिर कल्-अअ्लाम ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० कुल्लु मन् अलैहा फानिंव्- ० -व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल्-जलालि वल्-इक्राम ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० यस्अलुहू मन् फिस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्-ल यौमिन् हु-व फी शअ्निन् ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० स-नफ़रुग़ु लकुम् अय्युहस्स-क़लान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० या मअ् -शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम् अन् तन्फुज़ू मिन अक़्ता-रिस्समावाति वल्अर्ज़ि फन्फुज़ू ला तन्फुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० युर्-सलु अलैकुमा

شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ
ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُوْنَ ○ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ وَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ○ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ

शुवाज़ुम्-मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फला तन्तसिरान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फ-इज़न् शक्कतिस्समा-उ फ-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फयौमइज़िल्-ला युस्अलु अन् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ युअ्-रफुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फयुअ्-ख़ज़ु बिन्नवासी वल्-अक्दामि ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ हाज़िही जहन्नमुल्लती युकज़्ज़िबु बिहल्-मुज्रिमून ○[ग] यतूफू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ व लि-मन् ख़ा-फ मका-म रब्बिही जन्नतान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ ज़वाता अफ्नान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○फीहिमा अैनानि तज्रियानि ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फीहिमा मिन्कुल्लि

فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَاۤىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَ
جَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ
يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَاۤنٌّ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ○
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ هَلْ جَزَاۤءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ○ وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُدْهَاۤمَّتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّ
نَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ○ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا

फाकि-हतिन् जौजान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ मुत्तकिई-न अला फुरुशिम्-बता-इनुहा मिन् इस्तब्-रकिन्, व जनल्-जन्नतैनि दान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फीहिन्-न कासिरातु-तीफ लम यत्मिस-हुन-न इन्सुन् कब्लहुम् व ला जान्न ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ क-अनुन-हुन्नल्याकूतु वल्-मर्जान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ हल् जजाउल्-इहसानि इल्लल्-इहसान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ व मिन् दूनिहिमा जन्नतान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ मुद्द हाम्मतानि ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फीहिमा अैनानि नज़्ज़ा-खतानि ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फीहिमा फाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान ○ फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ फीहिन्-न खैरातुन् हिसान ○

تُكَذِّبٰنِ ○ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِیَامِ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ
اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰی رَفْرَفٍ خُضْرٍ
وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ○ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ
ذِی الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ○

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ हुरुम्-मक्सूरातुन् फ़िल-ख़ियाम ○ फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ लम् यत्मिसहुन-न इन्सुन् कब्लहुम् व ला जान्न ○ फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ मुत्तकिई-न अला रफ़रफ़िन् ख़ुज़्रिंव्-व अब्क़रिय्यिन् हिसान ○ फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ○ तबा-रकस्मु रब्बि-क ज़िल् जलालि वल्-इक्राम ○

बाज़ सुरतों के ख़ास फ़ाएदे

फर्माया स. : सुरेह मुल्क हर शब पढने वाला अज़ाबे कब्र (व हश्र) से महफुज़ रहेगा ।

फर्माया स. : सुरेह यासीन हर सुबह पढने वाला यकीनन जन्नती होगा. हर मुशकील हल होगी ।

फर्माया स. : हर नमाज़ फर्ज़ के बाद अयतल कुर्सी पढने वाले को अल्लाह जन्नत अता करेगा. यकीनन ।

फर्माया स. : हर रोज़ सुरेह दहर पढने वाले पर जन्नत वाजिब की जाती है ।

सुरेह वाकिआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ اِذَا رُجَّتِ
الْاَرْضُ رَجًّا ۙ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۙ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا
ثَلٰثَةً ۗ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۗ وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ
الْمَشْـَٔمَةِ ۗ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۙ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ فِيْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ○ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۗ عَلٰى سُرُرٍ
مَّوْضُوْنَةٍ ۙ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۙ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ
بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا

इजा व-क-अतिल्-वाकि-अतु ० लै-स लिवक्अतिहा काजिबह् ०[१] खाफि-जतुर्-राफि-अः ० इजा रुज्जतिल्-अर्जु रज्जंव्- ० -व बुस्सतिल्-जिबालु बस्सा ० फ-कानत् हबा-अम् मुम्-बस्संव- ० -व कुन्तुम् अज्वाजन् सलासः ० फ-अस्हाबुल्-मैमनति मा अस्हाबुल्-मै-मनः ० व अस्हाबुल्-मश्-अ-मति मा अस्हाबुल्-मश्-अमः ० वस्साबिकुनस्-साबिकून ० उलाइ-कल्-मुकर्रबून ० फीजन्नातिन्-नइम ० सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन ० व कलीलुम् मिनल-आखिरीन ० अला सुररिम्-मौजुनतिम्- ० -मुत्तकिई-न अलैहा मु-तकाबिलीन ० यतूफु अलैहिम् विल्दानुम्-मु-खल्लदून ० बिअक्वाबिंव्-व अबारी-क व कअसिम्-मिम्-मइन ० ला युसद्-दऊन अन्हा

وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۙ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۙ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۙ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۙ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۙ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۙ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۗ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۙ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۗ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۙ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۗ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۗ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۗ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۙ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۙ

व ला युन्जिफून ० व फाकि-हतिम्-मिम्मा यत-खय्यरुन ० व लहिम तैरिम-मिम्मा यश्तहून ० व हुरुन् ईन ० क-अम्सालिल्-लुअलुइल्-मक्नून ० जजा-अम् बिमा कानू यअ्मलून ० ला यस्मऊ-न फीहा लग्वंव्-व ला तअ्सीमा ० इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा ० व अस्हाबुल्यमीनि मा अस्हाबुल्-यमीन ० फी सिद्रिम्-मख्जूदिंव- ० -व तल्हिम्-मनजूदिंव्- ० -व ज़िल्लिम् मम्दूदिंव्- ० व माइम् -मस्कूब ० व फाकि-हतिन् कसी-रतिल्- ० -ला मक्तू-अतिंव्-व ला मम्नू-अतिंव्- ० -व फुरुशिम्-मर्फूअः ० इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् ० फ-जअल्नाहुन्-न अब्कारा ० अुरुबन् अत्राबल्- ० -लिअस्हाबिल्-यमीन ० सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन ० व सुल्लतुम्-मिनल्-आखिरीन ० व अस्हाबुश्-शिमालि मा असहाबुश्-शिमाल ० फी समूमिंव्-व हमीमिंव्- ० -व ज़िल्लिम्-मिंय्यह्मूमिल्- ०

لَا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۝ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى
الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۝ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۵ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝
اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۝ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۵ اِلٰى مِيْقَاتِ
يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۝ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ
زَقُّوْمٍ ۝ فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۝ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ
الْهِيْمِ ۝ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ
مَّا تُمْنُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ
الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝ عَلٰى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا

-ला बारिदिंव्-व ला करीम ० इन्नहुम् कानू कब्-ल
जालि-क मुत्-रफीन ० व कानू युसिर्रू-न
अलल्-हिन्सिल्-अजीम ० व कानू यकूलू-न अ-इजा
मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व इजामन् अ-इन्ना ल-मब्ऊसून
० अ-व आबाउनल्-अव्वलुन कुल इन्नल अव्वलीन वल
आखिरीन ० ल-मज्मूऊ-न इला मीकाति यौमिम्-मअ्लूम
० सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ाल्लूनल्-मुकज़्ज़िबून ० ल-
आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् जक्कूम ० फमालिऊ-न
मिन्हल्-बुतून ० फशारिबू-न अलैहि मिनल्-हमीम ०
फशारिबू-न शुर्बल्- हीम ० हाजा नुजुलुहुम् यौमदीन ०
नह्नु खलक्नाकुम् फलौ ला तुसद्दिकून ० अ-फ-रऐतुम्-मा
तुम्नून ० अ-अन्तुम् तख़्लुकूनहू अम् नह्नुल्-ख़ालिकून ०
नह्नु कद-द ना बैनकुमुल मौत वमा नह्नु बिमस्बुकीन ०
अला अन्-नुबद्दि-ल अम्सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फी मा

لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا

ला तअ्लमून ० व ल-क़द् अलिम्तुमुन्-नश्अ-तल्-ऊला फ़लौ ला तज़क्करून ० अ-फ़-रऐतुम्-मा तह्रुसून ० अ-अन्तुम् तज़्-रऊनहु अम् नह्नुज़्-ज़ारिऊन ० लौ नशा-उ ल-जअ़ल्नाहु हुतामन् फ़ज़ल्तुम् तफ़क्कहून ० इन्ना ल-मुग्रमून ० बल् नह्नु मह्रूमून ० अ-फ़-रऐतुमुल् मा-अल्लज़ी तश्रबून ० अ-अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्-मुज़्नि अम् नह्नुल्-मुन्ज़िलून ० लौ नशा-उ जअ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौ ला तश्कुरून ० अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती तूरून ० अ-अन्तुम् अन्शअ्तुम् श-ज-र-तहा अम् नह्नुल्-मुन्शिऊन ० नह्नु जअ़ल्नाहा तज़्कि-रतंव्-व मताअ़ल्-लिल्मुक्वीन ० फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम ० फ़ला उक्सिमु बि-मावाक़िइन्-नुजूम ० व इन्नहू ल-क-समुल्-लौ तअ्लमू-न अ़ज़ीम ० इन्नहू ल-कुरआनुन् करीम ० फ़ी किताबिम् मक्नून ०

يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۝ تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ أَفَبِهٰذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ
مُدْهِنُونَ ۝ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ۝
وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ تَنْظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۝
فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ فَأَمَّا
إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ ۵ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّا إِنْ
كَانَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝ فَسَلٰمٌ لَكَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝ وَأَمَّا إِنْ كَانَ
مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّآلِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝
إِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

ला य-मस्सुहू इल्लल्-मुतह्हरून ० तन्जीलुम् मिर्रब्बिल्-आलमीन ० अ-फबिहाज़ल्-हदीसि अन्तुम् मद्हिनून ० व तज्अलू-न रिज़्ककुम् अन्नकुम् तुकज़्जिबून ० फलौ ला इज़ा ब-ल-गतिल्-हुल्कूम ० व अन्तुम् ही-न-इज़िन् तुन्ज़ुरून ० व नह्नु अक्रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्-ला तुब्सिरून ० फलौ-ला इन् कुन्तुम् गै-र मदीनीन ० तरजिऊनहा इन् कुन्तुम् सादिकीन ० फ-अम्मा इन् का-न मिनल्-मुकर्रबीन फ-रौहुंव्-व रैहानुंव्-व जन्नतु नईम ० व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल्-यमीन ० फ-सलामुल्-ल-क मिन् अस्हाबिल्-यमीन ० व अम्मा इन् का-न मिनल् मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लनी ० फ-नुज़ुलुम्-मिन् हमीमिंव्- ० -व तस्लि-यतु जहीम ० इन्-न हाज़ा लहु-व हक्कुल्-यकीन ० फ-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अज़ीम ०

सुरेह हदीद

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ○ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ يُحۡيٖ وَيُمِيۡتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ○ هُوَ الۡاَوَّلُ وَالۡاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالۡبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ○ هُوَ الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ فِىۡ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ ؕ يَعۡلَمُ مَا يَلِجُ فِى الۡاَرۡضِ وَمَا يَخۡرُجُ مِنۡهَا وَمَا يَنۡزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعۡرُجُ فِيۡهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمۡ اَيۡنَ مَا كُنۡتُمۡ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ○ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ○ يُوۡلِجُ الَّيۡلَ فِى النَّهَارِ وَيُوۡلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيۡلِ ؕ وَهُوَ عَلِيۡمٌۢ

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ० लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह्यी व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर ० हुवल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्-बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम ० हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्ततिं अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्-अर्शि, यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हु-व म-अकुम् ऐ-न मा कुन्तुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर ० लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जउल-उमूर ० यलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन् नहा-र फ़िल्लैलि, व हु-व अलीमुम्

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَ مَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَ قَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ

बिज़ातिस्-सुदूर ० आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अलकुम् मुस्तख़-लफ़ी-न फ़ीहि, फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्रुन कबीर ० व मा लकुम् ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वर्रसूलु यद्ऊकुम् लितुअ्मिनू बि-रब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज़ मीसा-ककुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ० हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अ़ला अ़ब्दिही आयातिम् बय्यिनातिल्-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व इन्नल्ला-ह बिकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम ० व मा लकुम् अल्-ला तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल्-फ़त्हि व क़ात-ल, उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-जतम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्बअ्दु व क़ातलू, व कुल्लंव्-व अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर ० मन् ज़ल्लज़ी

يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا
وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۗ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۗ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ
وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ
فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ
وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

युक्रिजुल्ला-ह करजन् ह-सनन् फ-युजाइ-फहू लहू व लहू अज्रुन् करीम ० यौ-म तरल्-मुअमिनी-न वल्मुअमिनाति यस्आ नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् बुश्राकुमुल्-यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तहितहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा, जालि-क हुवल् फौजुल्-अजीम ० यौ-म युकूलुल्-मुनाफिकू-न वल्-मुनाफिकातु लिल्लजी-न आमनुन्जुरूना नक्तबिस् मिन्-नूरिकुम् कीलर्जिऊ वरा-अकुम् फल्तमिसू नूरन्, फजुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्-लहू बाबुन्, बातिनुहू फीहिर्रह्-मतु व जाहिरुहू मिन् कि-बलिहिल्-अजाब ० युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अकुम्, कालू बला व लाकिन्नकुम् फतन्तुम् अन्फु-सकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व गर्रत्कुमुल-अमानिय्यु हत्ता जा-अ अमरुल्लाहि व गर्रकुम् बिल्लाहिल्-गरूर ० फल्यौ-म ला युअ्-खजु मिन्कुम् फिद-यतुंव्-व-ला मिनल्लजी-न कफरू,

مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِىَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ○ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ○ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ○ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ○ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

मअ्वाकुमुन्नारु, हि-य मौलाकुम्, व बिअ्सल्-मसीर ○ अलम्यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख्शा-अ् कुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्-हक्कि व ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् कब्लु फ़ता-ल अलैहिमुल्-अ-मदु फ़-कसत् कुलूबुहुम्, व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिकून ○ इअ्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, कद् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति लअ्ल्लकुम् तअ्किलून ○ इन्नल्-मुस्सद्दिकी-न वल्-मुस्सद्दिकाति व अक्रज़ुल्ला-ह कर्ज़न्ह-सनंय्-युज़ा-अफु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम ○ वल्लज़ी-न आमनु बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिद्दीकू-न वश्शु-हदा-उ इन्-द रब्बिहिम् लहुम् अज-रुहुम् व नूरुहुम्, वल्लज़ी-न क-फरू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम ○ इअ्-लमू अन्नमल हयातुद्दुनया

لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ
غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ
فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ
اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ○ سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○ مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَ
لَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ○
لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ

लइबुंव्-व लहवुंव्-व ज़ी-नतुंव्-व तफ़ाखुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फ़िल्-अम्वालि वल्-औलादि, क-म-सलि गैसिन् अअ्-जबल्-कुफ़्फ़ा-र नबातुहु सुम्-म युहीजु फ़तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन्, व फ़िल-आखिरति अज़ाबुन् शदीदुंव्-व मग्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन्, व मल्-हयातुद्-दुनया इल्ला मताउ़ल-गुरूर ○ साबिक़ू इला मग्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्जुहा क-अ़र्ज़िस्समा-इ वलअर्ज़ि उइद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अज़ीम ○ मा असा-ब मिम्मुसी-बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन्-नब्र-अहा, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरुल ○ लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन्

فَخُورٍ ۝ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ
اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ ۖ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ
وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ
مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً
وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا

फख़ूरी ० निल्लजी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मंय्य-तवल्-ल फ-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद ० ल-क़द् अर्सल्ना रुसु-लना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अ़हुमुल्-किता-ब वल्मीज़ा-न लि-यक़ूमन्नासु बिल्-क़िस्ति व अन्ज़ल्नल् हदी-द फ़ीहि बअ्सुन शदीदुंव्-व मनाफ़िउ लिन्नासि व लि-यअ्-लमल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसु-लहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अज़ीज़ ० व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व इब्राही-म व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहि-मन्नुबुव्व-त वल्किता-ब फमिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून ० सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि-ईसब्नि मर्य-म व आतैनाहुल्-इन्जी-ल व जअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीनत्-त-बऊहु रअ्-फ़तंव्-व रह्म-तन्, व रह्बानिय्य-त-निब्त-दुऊहा मा कतब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा

حق رعايتها فاتينا الذين امنوا منهم اجرهم وكثير منهم فسقون ○
يايها الذين امنوا اتقوا الله وامنوا برسوله يؤتكم كفلين من رحمته
ويجعل لكم نورا تمشون به ويغفر لكم والله غفور رحيم ○ لئلا
يعلم اهل الكتب الا يقدرون على شيء من فضل الله وان الفضل
بيد الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل العظيم ○

रऔहा हक्-क रिआ-यतिहा फआतैनल्ल्जी-न आमनू मिन्हुम् अज्रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फासिकून ० या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही युअ्तिकुम् किफ्लैनि मिर्रहमतिही व यज्अल्-लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग्फिर् लकुम्, वल्लाहु गफूरुर्रहीमुल ० लि-अल्ला यअ्ल-म अहलुल्-किताबि अल्ला यक्दिरू-न अला शैइम्-मिन् फज़्लिल्लाहि व अन्नल्-फज्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु जुल्-फज़्लिल्-अज़ीम ०

बाज़ सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : हर शाम सुरेह वाकेआ पढने वाले का फुकर वफाका दुर होता है ।

फर्माया स. : सुरेह वलअसर हमेशा पढने वाले का इसलामी इमान पर खातमा होगा ।

फर्माया स. : सुरेह इखलास बकसरत पढने वाले को हुजुर स. ने जन्नत की खुशखबरी फर्माई है ।

सुरेह हश्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ① هُوَ الَّذِىْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِى الْاَبْصَارِ ② وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِى الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ④ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ० हुवल्लजी अख्र-रजल्लजी-न क-फरू मिन् अहि्लल्-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल्-हश्रि, मा जनन्तुम् अंय्यख़्रुजू व जन्नू अन्नहुम् मानि-अतुहम् हुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यहतसिबू व क-ज-फ फी कुलूबिहिमुर्रुअ्-ब युख़्रिबू-न बुयू-तहुम् बि-ऐदीहिम् व ऐदिल्-मुअ्मिनी-न फअ्तबिरू या उलिल्-अब्सार ० व लौ ला अन् क-तबल्लाहु अलैहिमुल-जला-अ ल-अज़्ज़-बहुम् फिद्दुनया, व लहुम् फिल्-आख़िरति अजाबुन्नार ० जालि-क बि-अन्नहुम् शाक्कुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक्किल्ला-ह फ-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-इकाब ० मा क-तअ्तुम् मिल्लीनतिन् औ तरक्तुमूहा काइ-मतन् अला उसूलिहा फबि-इज्निल्लाहि व

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ
يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ
اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ
كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ
عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ

लियुख्ज़ि-यल्-फ़ासिक़ीन ० व मा अफ़ा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अलैहि मिन् ख़ैलिंव्-व ला रिकाबिंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसु-लहु अला मंय्यशा-उ, वल्लहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर ० मा अफ़ा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन् अह्लिल्-क़ुरा फ़-लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्-क़ुर्बा वलयतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि कैला यकू-न दू-लतम्-बैनल्-अग्निया-इ मिन्कुम्, व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अन्हु फ़न्तहू वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-इक़ाब ० लिलफ़ु-क़राइल्मुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ु-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानंव्-व यन्सुरूनल्ला-ह व रसूलहु, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून ० वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वलईमा-न मिन् क़ब्लिहिम्

يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ
عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ
وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠ اَلَمْ تَرَ اِلَى
الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ
لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ
يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١١ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ

युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फी सुदूरिहिम् हा-जतम्-मिम्मा ऊतू व युअसिरू-न अला अन्फुसिहिम् व लौ का-न बिहिम् ख़सा-सतुन्, व मंय्यू-क शुह्-ह नफ्सिही फ-उलाइ-क हुमुल्-मुफ्लिहून ० वल्लज़ी-न जाऊ मिम्बअ्दिहिम् यकूलू-न रब्बनग्फिर् लना व लि-इख़्वानिनल्लज़ी-न स-बकूना बिल्-ईमानि व ला तज्अल् फी कुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊफुर्रहीम ० अलम् त-र इलल्लज़ी-न नाफ़कू यकूलू-न लि-इख़्वानिहिमुल्लज़ी-न क-फरू मिन् अह्लिल्-किताबि ल-इन् उख़्रिज्तुम् ल-नख़्रुजन्-न म-अकुम् व ला नुतीउ फीकुम् अ-ह़दन् अ-बदंव्-व इन् कूतिल्तुम् ल-नन्सुरन्नकुम, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून ० ल-इन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू-न म-अहुम् व ल-इन् कूतिलू ला यन्सुरुनहुम

وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝۱۲ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِیْ صُدُوْرِهِمْ
مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝۱۳ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِیْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ
اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝۱۴ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱۵ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیْ
بَرِیْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۱۶ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدَيْنِ
فِيْهَا وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۷ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا

वल-इन नसरुहुम लयु-वल्लुन्नल्-अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून ० ल-अन्तुम् अशद्दु रह्-बतन् फी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि, जालि-क बि-अन्नहुम् कौमुल्-ला यफ्क़हून ० ला युक़ातिलूनकुम् जमीअन् इल्ला फी कुरम्-मुहस्स-नतिन् औ मिंव्वरा-इ जुदुरिन्, बअ्सुहुम् बैनहुम् शदीदुन्, तह्सबुहुम् जमीअंव्-व कुलूबुहुम् शत्ता, जालि-क बि-अन्नहुम् कौमुल्-ला यअ्क़िलून ० क-म-सलिल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् जाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम ० क-म-सलिश्शैतानि इज् क़ा-ल लिल्-इन्सानिक्फुर् फ-लम्मा क-फ-र क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन्-क इन्नी अख़ाफुल्ला-ह रब्बल्-आलमीन ० फ्का-न आक़ि-ब तहुमा अन्नहुमा फिन्नारि ख़ालिदैनि फीहा, व जालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तकुल्ला-ह वल्तन्ज़ुर् नफ्सुम्-मा

قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ
وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى
جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾

कद्द-मत् लि-ग़दिन् वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून ० व ला तकूनू कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ-अन्साहुम् अन्फ़ु-सहुम्, उलाइ-क हुमुल-फ़ासिकून ० ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति, अस्हाबुल्-जन्नति हुमुल्-फ़ाइज़ून ० लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल्-कुर्आ-न अला ज-बलिल्-ल-रऐ-तहू ख़ाशिअम् मु-तसद्दिअम् मिन् ख़श्-यतिल्लाहि, व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि लअल्लहुम् य-तफक्करून ० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दति हुवर्-रहमानुर्रहीम ० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुद्दुसुस्-सलामुल्-मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल्-अज़ीज़ुल्- -जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून ० हुवल्लाहुल् ख़ालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ०

सुरेह सफ्फ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۗ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاِذْ
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۗ فَلَمَّا

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-म तक़ूलू-न मा ला तफ़अलुन ० कबु-र मक़्तन् इन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़अलून ० इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क-अन्नहुम् बुन्यानुम्-मर्सूस ० व इज़् का-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि-म तुअज़ू-ननी व क़त्-तअ्लमू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम, फ़-लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलूबहुम्, वल्लाहु ला याह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन ० व इज़् का-ल ईसब्नु मर्य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि-रसूलिंय्-यअ्ती मिम्बअ्दिस्मुहू अहमदु, फ़-लम्मा

جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ

जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह्रुम-मुबीन ० व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अलल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु-व युद्आ इलल्-इस्लामि, वल्लाहु ला याह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन ० युरीदू-न लियुत्फ़िऊनूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम्, वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्-काफ़िरून ० हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल-हक्कि लियुज़्हि-रहू अलद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अज़ाबिन् अलीम ० तुअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, ज़ालिकुम् खैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम्, तअ्लमून ० यग्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम्

يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ
مَنْ اَنْصَارِىْۤ اِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ
بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝

व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-बतन् फी जन्नाति अद्निन्, ज़ालिकल्-फौज़ुल्-अज़ीम ० व उख़्रा तुहिब्बूनहा नसरुम्-मिनल्लाहि व फत्हुन् करीबुन्, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा का-ल ईसब्नु मर्य-म लिल्-हवारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि, कालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ-आ-मनत् ताइ-फतुम् मिम्-बनी इस्राई-ल व क-फरत् ताइ-फतुन फ-अय्यद्नल्लज़ी-न आमनू अ़ला अ़दुव्विहिम्, फ-अस्बहू ज़ाहिरीन ०

सुरेह जुमा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ
الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَ
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤
مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्जिल्-मलिकिल्-कुद्दूसिल्-अजीज़िल-हकीम ० हुवल्लज़ी ब-अ-स फ़िल्-उम्मिय्यि-न रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन् कब्लु लफ़ी ज़लालिम्-मुबीनिंव ० व आ-ख़री-न मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम्, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ० ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अज़ीम ० म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्-तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन्, बिअ्-स म-सलुल्-कौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमज़्-ज़ालिमीन ० कुल् या अय्युहल्लज़ी-न

هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ
الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ
فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا
قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ا۟نْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ
مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١

हादू इन् ज़-अम्तुम् अन्नकुम् औलिया-उ लिल्लाहि मिन् दुनिन्नासि फ-तमन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ० व ला य-तमन्नौनहू अ-बदम्-बिमा कद्द-मत् ऐदीहिम्, वल्लाहु अलीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन ० कुल् इन्नल्-मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आलिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल्-जुमु-अति फस्औ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल्-बै-अ, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून ० फ-इज़ा कुज़ि-यतिस्सलातुम फन्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ० व इज़ा रऔ तिजा-रतन् औ लह्-व-निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त-रकू-क काइमन्, कुल् मा इन्दल्लाहि ख़ैरुम-मिनल्लाहि व मिनतिजारति वल्लाहु ख़ैरुर-राज़िक़ीन ०

सुरेह तगाबुन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ زَعَمَ

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्जि लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर ० हुवल्लज़ी ख़-ल-कुम् फ-मिन्कुम् काफ़िरुंव्-व मिन्कुम् मुअ्मिन्, वल्लाहु बिमा तअ्मलून बसीर ० ख़-लकस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक्कि व सव्व-रकुम् फ-अह्स-न सु-व-रकुम् व इलैहिल्-मसीर ० यअ्लमु मा फ़िस्-समावाति वल्अर्जि व यअ्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्लिनू-न, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर ० अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न क-फरू मिन् कब्लु फ-ज़ाकू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम ० ज़ालि-क बि-अन्नाहू कानत्-तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़कालू अ-ब-शरुंय्-यह्दूनना फ-क-फरू व तवल्लौ वस्तग़्नल्लाहु, वल्लाहु ग़निय्युन् हमीद ० ज़-अ़मल्लज़ी-न

الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ
لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ مَا أَصَابَ
مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ

क-फ़रू अल्लंय्युब्-अ़सू, कुल् बला व रब्बी ल-तुब्अ़सुन्-न सुम्-म ल-तुनब्ब-उन्-न बिमा अ़मिल्तुम्, व ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर ० फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना, वल्लाहु बिमा तअ़मलू-न ख़बीर ० यौ-म यजमऊकुम् लियौमिल्-जम्अ़ि ज़ालि-क यौमुत्-तग़ाबुनि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि व यअ़मल् सालिहंय्-युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम ० वल्लज़ी-न क-फ़रु व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा, व बिअ्सल्-मसीर ० मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि याह्दि क़ल्बहू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ० व अतीउ़ल्ला-ह अतीउ़र्रसू-ल फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़-इन्नमा अ़ला रसूलिन्-बलाग़ुल्-मुबीन ० अल्लाहु ला इला-ह इल्ला

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا
لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۞ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا
وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۞ اِنْ تُقْرِضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۞ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞

हु-व, व अलल्लाहि फलय-तवक्कलिल्- मुअमिनून ०
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व
औलादिकुम् अदुव्वल्-लकुम फहज़रूहुम् व इन् तअ़फू व
तस्फहू व तग़्फिरू फ-इन्नल्ला-ह गफूरुर्रहीम ० इन्नमा
अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फित्-नतुन्, वल्लाहु इन्दहू
अज्रुन् अज़ीम ० फत्तकुल्ला-ह मस्त-तअ़तुम वस्-मऊ
व अतीऊ व अन्फिकू ख़ैरल्-लिअन्फुसिकुम्, व मंय्यू-क
शुह्-ह नफ्सिही फ-उलाइ-क हुमुल-मुफ्लिहून ० इन्
तुक्रिज़ुल्ला-ह करज़न् ह-सनंय्-युज़ाइफ्हु लकुम् व यग़्फिर्
लकुम्, वल्लाहु शकूरुन् हलीम ० आ़लिमुल-ग़ैबि
वश्शहा-दतिल्- अज़ीज़ुल्-हकीम ०

सुरेह तहरीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ○ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ○ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ○ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क तब्तग़ी मर्ज़ा-त अज़्वाजि-क, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम ० कद् फ-रज़ल्लाहु लकुम् तहिल्-ल-त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अ़लीमुल्-हकीम ० व इज़् असर्रन्-नबिय्यु इला बअ़्ज़ि अज़्वाजिही हदीसन् फ-लम्मा नब्ब-अत् बिही व अज़्ह-र-हुल्लाहु अ़लैहि अर्र-फ बअ़्-ज़हू व अअ़्-र-ज़ अम्-बअ़्ज़िन् फ-लम्मा नब्ब-अहा बिही कालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा, का-ल नब्ब-अनि-यल् अ़लीमुल्-ख़बीर ० इन् ततूबा इलल्लाहि फ-कद् सग़त् कुलूबुमा व इन् तज़ा-हरा अ़लैहि फ-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअ्मिनी-न वलमालाइ-कतु बअ़्-द ज़ालि-क ज़हीर ० अ़सा रब्बुहू इन् तल्ल-ककुन्-न अंय्युब्दि लहू अज़्वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन्-न

مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ

मुस्लिमातिम्-मुअ्मिनातिन् कानितातिन् ता-इबातिन् आबिदातिन् सा-इहातिन् सय्यिबातंव्-व अब्कारा ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूअन्फु-सकुम् व अहलीकुम् नारंव्-व कूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु अलैहा मलाइ-कतुन् गिलाजुन् शिदादुल्-ला यअ्सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफ्अलू-न मा युअ्मरून ० या अय्युहल्लज़ी-न क-फरू ला तअ्तजिरुल्-यौ-म, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्मलून ० या अय्युहल्लज़ी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौ-बतन्-नसूहन्, असा रब्बुकुम् अंय्युकफ्फि-र अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्खि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु यौ-म ला युख्ज़िल्लाहुन्-नबिय्-य वल्लज़ी-न आमनू म-अहू नूरुहुम् यस्आ बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् यकूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नू-रना वग्फिर् लना इन्न-क अला कुल्लि शैइन् कदीर ०

لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ ضَرَبَ
اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ
مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ
ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ○ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ
اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ
وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ्फा-र वल्-मुनाफिकी-न वग्लुज् अलैहिम्, व मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर ० ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न क-फरुम्-र-अ-त नूहिंव्-वम्-र-अ-त लूतिन्, का-नता तह्-त अब्दैनि मिन् इबादिना सालिहैनि फ-ख़ानताहुमा फ-लम् युग्नियां अन्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्-व कीलद्ख़ुलन्ना-र मअद्-दाख़िलीन ० व ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न आमनुम्-र-अ-त फ़िर्औ-न ॰ इज् कालत् रब्बिब्नि ली इन्द-क बैतन् फ़िल-जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ-न व अ-मलिही व नज्जिनी मिनल् कौमिज़्ज़ालिमीन ० व मर्य-मब्न-त इम्रानल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ-नफ़ख़्ना फीहि मिर्रूहिना व सद्द-कत् बि-कलिमाति-रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल्-कानितीन ०

सुरेह मुल्क

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ ۝ الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ
وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْغَفُوْرُ ۝ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ
سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا مَا تَرٰی فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ
هَلْ تَرٰی مِنْ فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَیْنِ یَنْقَلِبْ اِلَیْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ
هُوَ حَسِیْرٌ ۝ وَلَقَدْ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّیٰطِیْنِ وَ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِیْرِ ۝ وَلِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ۝
اِذَآ اُلْقُوْا فِیْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِیْقًا وَّهِیَ تَفُوْرُ ۝ تَكَادُ تَمَیَّزُ مِنَ الْغَیْظِ كُلَّمَا

तबा-रकल्लजी बि-यदिहिल्-मुल्कु व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर ० निल्लजी ख-ल-कल-मौ-त वलहया-त लि-यब्लु-वकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ-मलन, व हुवल् अजीजुल्-गफूर ० अल्लजी ख-ल-क सब्-अ समावातिन् तिबाकन् मा तरा फी खल्किर्रह्मानि मिन् तफवुतिन्, फर्जिइल्-ब-स-र हल तरा मिन फुतुर ० सुम्मर'जिईल बसर कर्रतैनि यन्कलिब् इलैकल्-ब-सरु ख़ासिअंव्-व हु-व हसीर ० व ल-कद् जय्यन्नस्समाअद्-दुनया बि-मसाबी-ह व ज-अल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ्तद्ना लहुम् अजाबस्सइर ० व लिल्लजी-न क-फरु बिरब्बिहिम् अजाबु जहन्न-म, व बिअ्सल-मसीर ० इजा उल्कू फीहा समिउ लहा शहीकंव्-व हि-य तफूर ० तकादु त-मय्यजु मिनल्-गैजि, कुल्लमा

أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ○ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ
فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ○ وَقَالُوا لَوْ
كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ○ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ فَسُحْقًا
لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ○ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ○
وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ○ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَ
هُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ○ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا
وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ○ أَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ

उलकि-य फीहा फौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् नजीर ० कालू बला कद् जा-अना नजीरुन्, फ-कज़्ज़बना व कुलना मा नज़्ज़लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फी जलालिन् कबीर ० व कालू लौ कुन्ना नस्मउ औव नअ्किलु मा कुन्ना फी असहाबिस्सईर ० फअ्-त-रफू बिज़म्बिहिम् फ-सुह्कल्-लि-असहाबिस्-सईर ० इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग़्फि-रतुंव्-व अजरुन् कबीर ० व असिर्रू कौलकुम् अविज्-हरू बिही, इन्नहू अलीमुम् बिजातिस्सुदूर ० अला यअ्लमु मन् ख़-ल-क, व हुवल-लतीफुल्-ख़बीर ० हुवल्लज़ी ज-अ्-ल लकुमुल-अर्-ज जलूलन् फम्शू फी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्किही, व इलैहिन्-नुशूर ० अ-आमिन्तुम् मन् फिस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ बिकुमुल्-

الْاَرْضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوْرُ ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ اَنْ یُّرْسِلَ عَلَیْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ
كَیْفَ نَذِیْرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ۝ اَوَلَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ
فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّیَقْبِضْنَ ؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ ۝ اَمَّنْ هٰذَا
الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ۝ اَمَّنْ
هٰذَا الَّذِیْ یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ۝ اَفَمَنْ یَّمْشِیْ
مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤى اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ
وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ

अर्-ज फ-इजा हि-य तुमूर ० अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्युर्सि-ल अलैकुम् हासिबन्, फ-संतअ्लमू-न कै-फ नजीर ० व ल-कद् कज़्ज़-बल्लज़ी-न मिन् कब्लिहिम् फकै-फ का-न नकीर ० अ-व लम् यरौ इलत्तैरि फौकहुम् साफ्फातिंव्-व यक्बिज्-न ग मा युमसिकुहुन्-न इल्लर्रह्मानु, इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-बसीर ० अम्मन् हाजल्लज़ी हु-व जुन्दुल-लकुम् यन्सुरुकुम् मिन् दूनिर्रह्मानि, इनिल्-काफिरू-न इल्ला फी गुरूर ० अम्-मन् हाजल्लज़ी यर्जुकुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्कहू बल्-लज्जू फी उतुव्विंव्-व नुफूर ० अ-फमंय्यम्शी मुकिब्बन् अला वजहिही अह्दा अम्-मंय्यम्शी सविय्यन् अला सिरातिम्-मुस्तकीम ० कुल् हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् व ज-अल लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ्इ-द-त, कलीलम्-मा तश्कुरून ० कुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम्

فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَاءٍ مَّعِينٍ ۝

फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून ० व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ० कुल् इन्नमल्-इल्मु इन्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन ० फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व की-ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्द-उ़न ० कुल् अ-रऐतुम् इन् अह्-ल-कनियल्लाहु व मम्-मइ-य औ रहि-मना फ़-मंय्युजीरुल्-काफ़िरी-न मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम ० कुल् हुवर्-रह्मानु आमन्ना बिही व अ़लैहि तवक्कल्ना फ़-स-तअ़लमू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन ० कुल् अ-रऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम्-मइन ०

सुरेह नूह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيْمٌ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَ
أَطِيْعُوْنِ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰىٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ
أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّيْ
دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَإِنِّيْ
كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا
ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّيْٓ

इन्ना अरसल्ना नूहन् इला कौमिही अन् अनज़िर् कौ-मक मिन् कब्लि अंय्यअ्ति-यहुम् अज़ाबुन् अलीम ० का-ल या कौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन ० अनिअ्बुदुल्ला-ह वत्तकूहु व अतीऊन ० यग़्फ़िर् लकुम्-मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़िरकुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न अ-जलल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु लौ कुन्तुम् तअ्लमून ० का-ल रब्बि इन्नी दऔतु कौमी लैलंव्-व नहारन ० फ-लम् यज़िद्हुम् दुआई इल्ला फ़िरारा ० व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग़्फ़ि-र लहुम् ज-अलू असाबि-अहुम् फी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा ० सुम्-म इन्नी दऔतुहुम् जिहारन ० सुम्-म इन्नी

أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ
كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَ
بَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنّٰتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝ مَا لَكُمْ
لَا تَرْجُونَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ
خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ
الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ
فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِتَسْلُكُوا
مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝ قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ

अअ्लन्तु लहुम् व असरतु लहुम् इसरारा ० फकुल्तुस्तग्फिरू रब्बकुम्, इन्नहू का-न गफ्फारंय ० युरसिलिस्समा-अ अलैकुम् मिद्रारंव्- ० -व युम्दिद्कुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व यज्अल्-लकुम् जन्नातिंव्-व यज्अल-लकुम् अन्हारा ० मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वकारा ० व कद् ख़-ल-ककुम् अत्वारा ० अलम् तरौ कै-फ ख़-लकल्लाहु सब-अ् समावातिन् तिबाका ० व ज-अलल् क-म-र फीहिन्-न नूरंव्-व ज-अलश्शम्-स सिराजा ० वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्-अर्जि नबाता ० सुम्-म युइदुकुम् फीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा ० वल्लाहु ज-अ-ल लकुमुल्-अर्-ज़ बिसाता ० लि-तस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फिजाजा ० का-ल नूहुर्-रब्बि इन्नहुम् असौनी वत्त-बऊ मल्-लम्

يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ۚ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۚ وَقَالُوْا
لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ
وَنَسْرًا ۚ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۝ مِمَّا
خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْصَارًا ۝ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝
اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝
رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝

यज़िदहु मालुहू व व-लदुहू इल्ला ख़सारा ○ व म-करू मक्रन् कुब्बारा ○ व कालू ला त-ज़रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़रुन्-न वद्दंव्-व ला सुवाअंव्-व ला यगू-स व यऊ-क व नस्रा ○ व क़द् अज़ल्लू कसीरन्, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला ○ मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग्रिकू फ-उद्ख़िलू नारन् फ-लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा ○ व का-ल नूहुर्-रब्बि ला तज़र् अलल्-अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा ○ इन्न-क इन् तज़रहुम् युज़िल्लू इबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फाजिरन् कफ्फ़ारा ○ रब्बिग्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ○

सुरेह जिन्न

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ○ يَهْدِي إِلَى
الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ○ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا
وَلَدًا ○ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ○ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ
الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ○ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ○ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ
اللَّهُ أَحَدًا ○ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ○ وَأَنَّا كُنَّا

कुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्-त-म-अ न-फ़रुम् मिनल्-जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ्ना कुरआनन् अजबय ० यह्दी इलर्-रुश्दि फ़-आमन्ना बिही, व लन्-नुश्रि-क बिरब्बिना अ-हदा ० व अन्नहू तआला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-बतव्-व ला व-लदा ० व अन्नहू का-न यक़ूलु सफ़ीहुना अलल्लाहि श-तता ० व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् तुक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अलल्लाहि कज़िबा ० व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल्-इन्सियऊज़ू-न बिरिजालिम् मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादूहुम् रहक़ंव ० व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़नन्तुम् अल्लंय्-यब्-असल्लाहु अ-हदा ० व अन्ना ल-मस्नस्समा-अ फ़-वजद्नाहा मुलिअत् हरसन शदीदंव्-व शुहुबा ० व अन्ना कुन्ना

نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَّاَنَّا لَا نَدْرِیْٓ
اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِی الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَ
مِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِی الْاَرْضِ
وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا
يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ فَمَنْ اَسْلَمَ
فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا
عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ

नक़्उदु मिन्हा मकाई-द लिस्समइ, फ-मंय्यस्तमिइल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-सदंव ० व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन उरी-द बिमन् फिल्अर्जि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-शदा ० व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना तराइ-क कि-ददा ० व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् नुअ्जिज़ल्ल-ह फिल्अर्जि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-रबंव ० व अन्ना लम्मा समिअ्नल्-हुदा आमन्ना बिही, फमंय्युअ्मिम् बिरब्बिही फला यख़ाफु बख़्संव्-व ला र-हक़ा ० व अन्ना मिन्नल्-मुस्लिमू-न व मिन्नल्-कासितू-न फ-मन् अस्ल-म फ-उलाइ-क त-हर्रौ र-शदा ० व अम्मल्-कासितू-न फकानू लि-जहन्न-म ह-तबंव ० व अल्-लविस्तकामू अलत्तरी-क़ति ल-अस्कैनाहुम् माअन् ग़-दक़ल ० लिनफ़्ति-नहुम् फीहि, व मंय्युअ्रिज़् अन् ज़िक्रि रब्बिही

يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ
عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَا أُشْرِكُ
بِهٖ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّيْ لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝ قُلْ إِنِّيْ لَنْ يُجِيْرَنِيْ مِنَ
اللّٰهِ أَحَدٌ ۝ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ إِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَإِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا أَبَدًا ۝
حَتّٰى إِذَا رَأَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَّأَقَلُّ عَدَدًا ۝
قُلْ إِنْ أَدْرِيْ أَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ أَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْ أَمَدًا ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ

यस्लुक्हु अ़ज़ाबन् स-अ़दवं ○ व अन्नल्-मसाजि-द लिल्लाहि फला तद्उ़ मअ़ल्लाहि अ-हदा ○ व अन्हू लम्मा का-म अ़ब्दुल्लाहि यद्उ़हु कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-बदा ○. कुल् इन्नमा अद्उ़ रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-हदा ○ कुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला र-शदा ○ कुल् इन्नी लंय्युजी-रनी मिनल्लाहि अ-हदुंव्-व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा ○ इल्ला बलाग़म् मिनल्लाहि व रिसालतिही. व मंय्यअ़सिल्ला-ह व रसूलहू फ-इन्-न लहु ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फीहा अ-बदा ○ हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न फसयअ़लमू-न मन् अज़अ़फु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ़-ददा ○ कुल् इन् अद्री अ-करीबुम्-मा तू-अ़दू-न अम् यज्अ़लु लहु रब्बी अ-मदा ○ आ़लिमुल्ग़ैबि

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۙ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۙ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۙ

फला युज़्हिरू अ़ला गैबिही अ-हदन ० इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन् फ-इन्नहू यस्लुकु मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फिही र-सदल ० लियअ़्ल-म अन् कद् अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्सा कुल्-ल शैइन् अ़-ददा ०

बाज़ सुरतों के खास फ़ाएदे

फर्माया स. : सुरेह फातेहा को कलीदे जन्नत और हर मर्ज़ की दवा शिफाउन लिकुल्ली दाइन फर्माया है.

फर्माया स. : आयते करीमा को हर मुशकील का हल और कशाईश हाजात फर्माया है. १०० बार रात को पढें.

फर्माया स. : हसबीयल्लाहु ला इलाहा इल्ला हवु अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुलअरशीलअजीम. हर रोज़ सात बार पढें अल्लाह तआला दुनिया व आखिरत के महम्मात को काफी करेगा.

फर्माया य. : सुरेह कदर पारा ३० (इन्ना अनजलना) सुबह व शाम तीन तीन बार पढने से फराखीए रिज़्क और लोगो में इज़्ज़त होती है.

सूरेह मुज़म्मिल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ
اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۗ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ○ اِنَّ
نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ۗ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۗ
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۗ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ○ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ○ وَذَرْنِيْ وَ
الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ○ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ۙ وَّطَعَامًا ذَا
غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ۗ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا

या अय्युहल्-मुज़्ज़म्मिलु ० कुमिल्-लै-ल इल्ला कलीला ० निस्फ़हू अविन्कुस् मिन्हु कलीलन ० औ ज़िद् अलैहि व रत्तिलिल्-कुर्आ-न तर्तीला ० इन्ना सनुल्क़ी अलै-क कौलन् सकीला ० इन्-न नाशि-अतल्लैलि हि-य अशद्दु वत्अंव्-व अक्वमु कीला ० इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब्हन् तवीला ० वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तब्तीला ० रब्बुल्-मश्रिकि वल्-मग्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तखिज़्हु वकीला ० वस्बिर अला मा यकूलू-न वह्जुर्हुम् हज्रन जमीला ० व ज़र्नी वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ्मति व महिह्लहुम् कलीला ० इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमा ० व तआमन् ज़ा गुस्सतिंव्-व अज़ाबन्अलीमा ० यौ-म तर्जुफुल्-अर्ज़ु वल्-जिबालु व कानतिल्-जिबालु कसीबम्-महीला ०

مَهِيلًا ○ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ
رَسُوْلًا ○ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ○ فَكَيْفَ
تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ○ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ
مَفْعُوْلًا ○ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ○ اِنَّ رَبَّكَ
يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ
مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ
مَّرْضٰى وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ

इन्ना अरसल्ना इलैकुम् रसूलन् शाहिदन् अलैकुम् कमा अरसल्ना इला फ़िर्औ-न रसूला ० फ़-असा फ़िर्औनुर्-रसू-ल फ़-अख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव्-वबीला फ़कै-फ़ तत्तक़ू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज्-अलुल्-विल्दा-न शीबनी ० स्समा-उ मुन्फ़तिरुम् बिही, का-न वअ्दुहू मफ़ऊला ० इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला ० इन्-न रब्ब-क यअ्लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलु-सयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ताइ-फ़तुम् मिनल्लज़ी-न म-अ-क, वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र, अलि-म अल्-लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अलैकुम् फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुर्आनि, अलि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्ज़ा व आ-ख़रू-न यज़्रिबु न फ़िल-अर्ज़ी यबतग़ुन मिन फ़ज़लील्लाह

وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۟

व आखरुना युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लहि फ़क़रऊमा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्-ज़का-त व अक़्रिजुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन्, व मा तुक़द्दिमु लि-अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु इन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्रन्, वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर-रहीम ०

बाज़ सुरतों के खास फाएदे

फर्माया स. : सुरेह **अलहाकुमुत्तकासुर**, पारा ३० पांच आयतें हैं, छोटी छोटी लेकिन हज़ार आयत के बराबर सवाब और रिज़्क में फराखी फर्माया ।

फर्माया स. : सुरेह मुद्‌ससर पारा २९ **(या अय्युहल मुदससीरु कुम)** मोहताज गरीब रोज़ाना पढा करे इन्शाअल्लाह गनी मालदार हो जाएगा.

फर्माया स. : सुरेह कुरेश पढ कर खाना खाए नज़र बद से महफुज़ रहेंगे. और तिलावत का सवाब ज़ाएद ।

फर्माया स. : आखिर के दोनो कुल शरीफ पढ कर दम करें-शरे हासिद व सहर व बलायात' दुर होगे ।

फर्माया स. : आंख का दरद सुरेह हमज़ा पढ कर दमकरें इन्शाअल्लाह आराम होगा चंद बार तकरार करें ।

सुरेह कियामा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ○ وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ○ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ
أَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهُ ○ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى أَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهُ ○ بَلْ يُرِيْدُ الْإِنْسَانُ
لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ○ يَسْـَٔلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ○ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ○ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ○
وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ○ يَقُوْلُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ○ كَلَّا لَا وَزَرَ ○ إِلٰى
رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمُسْتَقَرُّ ○ يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ○ بَلِ الْإِنْسَانُ
عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ○ وَّلَوْ أَلْقٰى مَعَاذِيْرَهُ ○ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ○
إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْاٰنَهُ ○ فَإِذَا قَرَأْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهُ ○ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ○

ला उक्सिमु बियौमिल्-कियामति ० व ला उक्सिमु बिन्नफ़िसल्-लव्वामह् ० अ-यह्सबुल्-इन्सानु अल्-लन् नज्म-अ इज़ामह् ० बला कादिरी-न अला अन्-नुसव्वि-व बनानह् ० बल् युरीदुल-इन्सानु लियफ्जु-र अमामह् ० यस्अलु अय्या-न यौमुल्-कियामह् ०फ-इजा बरिकल्-ब-सरु ० व ख़-सफल्-क-मरु ० व जुमिअश्शम्सु वल्क-मरु ० यकूलुल्-इन्सानु यौमइजिन् ऐनल्-मफ़र्रु ० कल्ला ला व-ज़र ० इला रब्बि-क यौमइजि-निल्-मुसतकर्रे ० युनब्बउल्-इन्सानु यौमइजिम् बिमा क़द्-द-म व अख्ख़-र ० बलिल्-इन्सानु अला नफ़्सिही बसी-रतुंव्- ० -व लौ अल्का मआजीरह् ० ला तुहर्रिक् बिही लिसान-क लितअ्-ज-ल बिह ०इन्-न अलैना जम्-अहू व कुरआनह ० फ-इजा करअनाहु फत्तबिअ् कुरआनह ० सुम्-म इन्-न अलैना बयानह ०

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ○ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ○ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ○ إِلَىٰ
رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ○ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ○ تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ○ كَلَّا إِذَا
بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ○ وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ○ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ○ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ
بِالسَّاقِ ○ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ○ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ○ وَلَٰكِنْ كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ○ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ○ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ○ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ○
أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ○ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ ○ ثُمَّ
كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ○ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ○
أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ○

कल्ला बल् तुहिब्बुनल्-आजि-ल-त ○ व त-
ज़रूनल्-आख़िरह् ○ वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाज़ि-रतुन् ○
इला रब्बिहा नाज़िरह् ○ व वुजूहुंय्-यौमइज़िम् बासि-रतुन्
○ तज़ुन्नु अंय्युफ्अ-ल बिहा फ़ाक़िरह् ○ कल्ला इज़ा
ब-लग़तित्-तराक़ि-य ○ व क़ी-ल मन्-राक़िंव- ○ -व
ज़न्-न अन्नहुल् फ़िराक़ ○ वल्-तफ़्फ़तिस्-साक़ु बिस्साक़ि
○ इला रब्बि-क यौमइज़ि- निल्-मसाक़ ○ फ़ला सद्-द-क़
व ला सल्ला ○ वलाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला ○ सुम्-म
ज़-ह-ब इला अह्लिही य-तमत्ता ○ औला ल-क फ़-औला
○ सुम्-म औला ल-क फ़-औला ○ अ-यह्सबुल्-इन्सानु
अंय्युत्-र-क सुदा ○ अलम् यकु नुत्फ़-तम् मिम्- मनिय्यिंय्-युम्ना
○ सुम्-म का-न अ़-ल-क़तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा ○
फ़-ज-अ़-ल मिन्हुज्-ज़ौजैनिज्-ज़-क-र वल् उन्सा ○ अलै-स
ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि- यल्-मौता ○

सूरेह दहिर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا ۝ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا

हल् अता अलल्-इन्सानि हीनुम्-मिनद्-दहिर लम् यकुन् शैअम्-मज़्कूरा ० इन्ना ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् अम्शाजिन्- नब्तलीहि फ़-जअल्नाहु समीअम्-बसीरा ० इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्म कफ़ूरा ० इन्ना अअ्तद्ना लिल्-काफ़िरी-न सलासि-ल व अग़्लालंव्-व सईरा ० इन्नल्-अब्रा-र यश्रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ाजुहा काफ़ूरा ० अैनंय्-यश्रबु बिहा इबादुल्लाहि युफ़ज्जिरूनहा तफ़्जीरा ० यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न शर्रुहू मस्ततीरा ० व युत्अिमूनत्तआ-म अला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा ० इन्नमा नुतअीमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा ० इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना

يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ○ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ○
وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ○ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ
فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ○ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ○
وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ○ قَوَارِيْرَا مِنْ
فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ○ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ○ عَيْنًا
فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ○ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ
لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ○ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ○ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ
خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ○

योमन् अबूसन् कम्-तरीरा ○ फ-वकाहुमुल्लाहु शर-र जालिकल्-यौमि व लक्काहुम् नज्रतंव्-व सुरूरा ○ व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतंव्-व हरीरम ○ मुत्तकिई-न फीहा अलल्-अरा-इकि ला यरौ-न फीहा शम्संव्-व ला जम्-हरीरा ○ व दानि-यतन् अलैहिम् जिलालुहा व जुल्लिलत् कुतूफुहा तज़्लीला ○ व युताफु अलैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फिज़्ज़तिंव्-व अक्वाबिन् कानत् क्वारी-र ○ क्वारी-र मिन् फिज़्ज़तिन् कद्दरूहा तक्दीरा ○ व युस्कौ-न फीहा कअ्सन् का-न मिज़ाजुहा जन्जबीला ○ ऐनन् फीहा तुसम्मा सल्-सबीला ○ व यतूफुअलैहिम् विल्दानुम्-मुखल्लदू-न इज़ा रऐ-तहुम् हसिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा ○ व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नइमंव्-व मुल्कन् कबीरा ○ आलि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् खुज़्रुंव्-व इस्तब्रकुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फिज़्ज़तिन् व सकाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा ○

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ۝ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ
تَنزِيلًا ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ
بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝ إِنَّ هَٰؤُلَآءِ
يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا
أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ۝ إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَن
شَآءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّا أَن يَشَآءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

इन्-न हाजा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ्युकुम्-मश्कूरा ० इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अलैकल्-कुरआ-न तन्ज़ीला ० फस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ् मिन्हुम् आसिमन् औ कफूरा ० वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्र-तंव्-व असीला ० व मिनल्लैलि फस्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला ० इन्-न हा-उला-इ युहिब्बुनल् आजि-ल-त व य-जरू-न वरा-अहुम् यौमन् सकीला ० नह्नु ख़लक्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला ० इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फमन् शाअत्त-ख़-ज इला रब्बिही सबीला ० व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् हकीमंय ० युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फी रह्मतिही, वज़्ज़ालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अज़ाबन् अलीमा ०

सुरेह नबा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

عَمَّ يَتَسَاءَلُوْنَ ○ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ○ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ○ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ○ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ○ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ○ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ○ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ○ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ○ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ○ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ○ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ○ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ○ وَّ اَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَاءً ثَجَّاجًا ○ لِنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ○ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ○ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ○ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ○ وَّفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ○ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ○ اِنَّ جَهَنَّمَ

अम्-म य-तसा-अलून ० अनिन्-न-बइल्-अज़ीम ० अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख्तलिफ़ून ० कल्ला स-यअ्लमून ० सुम्-म कल्ला स-यअ्लमून ० अलम् नज्अलिल्-अर्-ज़ मिहादंव्- ० -वल्-जिबा-ल औतादंव्-० -व-ख़लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्-०-वजअलन नौमकुम सुबाता ०-व जअल्नल्लै-ल लिबासंव्- ० -व जअल्नन्-नहा-र मआशा ० व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्अन् शिदादंव्-०-व जअल्ना सिराजंव्-वह्हाजा ०व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ्सिराति मा-अन् सज्जाजल्- ० -लिनुख़्री-ज बिही हब्बंव्-व नबातंव्- ० -व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा ० इन्-न यौमल्-फ़स्लि का-न मीक़ातय्-० -यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-तअ्तू-न अफ़्वाजंव ० व फ़ुति-हतिस्-समा-उ फ़-कानत् अब्वाबंव्- ० -व सुय्यि-रतिल्-जिबालु फ़-कानत् सराबा ० इन्-न जहन्न-म

كَانَتْ مِرْصَادًا ۝ لِّلطَّٰغِينَ مَـَٔابًا ۝ لَّٰبِثِينَ فِيهَآ أَحْقَابًا ۝ لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝ جَزَآءً وِفَاقًا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كِذَّابًا ۝ وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ۝ فَذُوقُوا۟ فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝ حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ۝ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝ وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ۝ جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ۝ رَّبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٱلرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ ٱلرُّوحُ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمُ

कानत् मिर्सादल्-०-लित्तागी-न म-आबल्- ० -लाबिसी-न फीहा अह्काबा ० ला यज़ूकू-न फीहा बर्दंव्-व ला शराबन ० इल्ला हमीमंव्-व ग़स्साकन् ० जज़ाअंव्-विफ़ाका ० इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हिसाबंव ० व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा ० व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन् ० फज़ूकू फ-लन् नज़ी-दकुम् इल्ला अज़ाबा ० इन्-न लिल्मुत्तकी-न मफ़ाज़न् ० हदाइ-क व अअ्नाबंव्- ० -व कवाइ-ब अत्राबंव्- ० -व कअ्सन् दिहाका ० ला यस्मउ-न फीहा लग्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा ० जज़ाअम्-मिर्रब्बि-क अ़ताअन् हिसाबा ० रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु ख़िताबा ० यौ-म यकूमुर्रूहु वल्मलाइ-कतु सफ़्फ़ल् ला य-तकल्लमू-न इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व का-ल सवाबा ० ज़ालिकल् यौमुल्-

الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰی رَبِّهٖ مَاٰبًا ۝ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِیْبًا ۚۖ یَّوْمَ یَنْظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ یَدٰهُ وَ یَقُوْلُ الْكٰفِرُ یٰلَیْتَنِیْ كُنْتُ تُرٰبًا ۝

हक्कु फ-मन् शाअत्त-ख़-ज इला रब्बिहि मआबा ० इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्मरउ मा क़द्द-मत् यदाहु व यक़ूलुल्-काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा ०

नजात व फ़लाह आख़ेरत के लिए

विरद कलमा शरीफ हमेशगी नमाज़. हर नमाज़ के बाद अयतलकुर्सी. सुबह सुरेह यासीन और दरुदे शरीफ, सोते वक्त सुरेह मुल्क और इस्तगफार.

सुबह व शाम : **अल्लाहुम्मा अजीरनी मिनन्नार.** ७–७ बार और **फसुबहानल्लाहि हिन तुमसुन वहिन तुसबिहुन. वलहुल हम्दु फिस्समावाति ता तुखरजुन ०**

सुरेह आला

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ وَالَّذِىْ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۙ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰى ۙ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۙ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ؕ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ؕ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۖ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۙ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۠

सब्बिहिस्-म रब्बिकल्-अअ्ला ० अल्लज़ी ख़-ल-क फ-सव्वा ० वल्लजी कद्द-र फ-हदा ० वल्लज़ी अख़्र-जल्-मरआ ० फ-ज-अ्-लहू गुसाअन् अहवा ० सनुक्रीउ-क फला तन्सा ० इल्ला मा शा-अल्लहु, इन्नहू यअ्लमुल्-जह्-र व मा यख़्फ़ा ० व नुयस्सिरु-क लिलयुस्रा ० फज़क्किर् इन् न-फ-अतिज्-ज़िक्रा ० स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा ० व य-तजन्नबुहल्-अश्क- ० -ल्लज़ी यस्लन्-नारल्-कुब्रा ० सुम्-म ला यमूतु फीहा व ला यह्या ० कद् अफ्ल-ह मन् तज़क्का ० व ज-करस्-म रब्बिही फ-सल्ला ० बल् तुअ्सिरूनल्-हयातद्-दुनया ० वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ० इन्-न हाजा लफ़िस्-सुहुफिल्-ऊला ० सुहुफि इब्राही-म व मूसा ०

असनादे मन्ज़िल

ये मन्ज़िल आसैब, सहर और बाज़ दुसरे खतरात से हिफ़ाज़त के लिए एक मुजर्रीब अमल है । ये आयात किसी कदर कमि बेशी के साथ "अलकौल अलजमील" और "बहेशती ज़ेवर" में भी लिखी है । अलकौल अलजमील में हज़रत शाह वली अल्लाह मोहद्दीस दहलवी कुदस सररहु तहरीर फर्माते है ;

"ये ३३ तैंतीस आयतें है जो जादु को दफा करती है और शयातीन और चोरों और दरींदे जानवरो से पनाह हो जाती है."

और बहेशती ज़ेवर में हज़रत मौलाना शरफ अली थानवी नुरअल्लाह मुरकदा तहरीर फर्माते है :

"अगर किसी पर आसेब का शुबा हो तो आयात ज़ेल लिख कर मरीज़ के गले में डाल दें और पानी पर दम करके मरीज़ पर छिडक दें."

और अगर घर में असर हो तो इन को पानी पर पढ कर घर के चारो गोशो में छिटक दें ।

मन्ज़िल

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ ۝ اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ۝ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ ۙ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ۝ (اٰمین)

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० अर्रहमा निर्रहीम ० मालिकि यौमिद्दीन ० इय्याक नाअबुदु वइय्याक नस्तईन ० इहदिनस्सिरॉतल मुस्तकीम ० सिरॉतल्लजीन अन्अम्त अलैहिम गैरिल मगजुबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन ०

रसुल अल्लाह स. ने फर्माया जिस ने दीन में कोई ऐसा काम किया जिस की बुनियाद शरीअत में मौजूद नहीं वो काम मरदुद है. (बुखारी व मुस्लिम)

यूं तो दिने इस्लाम में बिदआत का इज़ाफा अब रोज़ मर्रा का मामुल बन चुका है लेकिन इज़कार व वज़ाईफ़ में खुसुसन इतनी ज़्यादा खुद साख्ता और गैर मसनुन चिजें शामिल करदी गई है के मसनुन अदीया व इज़कार ताक नसीयां बन कर रह गए हैं. दिगर खुद साख्ता और गैर मसनुन इज़कार व वज़ाईफ की तरह दरुद व सलाम में भी बहोत से खुद साख्ता और गैर मसनुन दरुद व सलाम राएज हो चुके हैं. मसलन दरुद ताज, दरुद लिखी, दरुद मुकद्दस, दरुद अकबर, दरुद माहि, दरुद तंजीना वगैरा. इन में से हर दरुद के पढने का तरीका और वक़्त अलग अलग बताया गया है और इन के फवाइद (जो के ज़्यादा तर दुनयावी है) का भी अलग अलग तज़केरा कुतुब में लिखा गया है. मज़कुरा दरुदो में से कोई एक दरुद भी ऐसा नहीं जिस के अलफाज़ रसुल अकरम स. से साबित हो. लेहाज़ा इन्हे पढने का तरीका और इन से हासिल होने वाले फवाइद अज़ खुद बातिल ठहरते है. रसुल अल्लाह स. की नाराज़गी और अल्लाह तआला के गज़ब का बाइस बने लेहाज़ा वही वज़ाईफ पढे जो रसुल अल्लाह स. से साबित हैं. याद रखीए रुसल अल्लाह स. की ज़बान से निकला हुआ एक लफज़ दुनिया के सारे अवलीया और सॉलेह के बनाए हुए कलमाते खैर से ज़्यादा अफज़ल और कीमती है.

(बराए महरबानी मोमिन पंचसुरा पढीए)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम ०

अलिफ लाम मीम ० जालिकल किताबु ला रैब फिही हुदलल्लि मुत्तकीन ० अल्लजीन युअमिनून बिलगैबि व युकीमुनस्सलॉत व मिम्मा रजकनाहुम युनफिकून ० वलल्लजीन युअमिनून बिमा उन्जिल इलैक वमा उन्जिल मिन कब्लिक व बिलआखिरतिहुम युकिनून ० उलाइक अला हुदम्मिर्रब्बिहिम व उलाइक हुमुल मुफ्लिहुन ० इन्नल लजीन कफरु व सवाउन अलैहिम अअन्जरतुहुम अम लम तुन्जिरहुम ला युअमिनून ० खतमल्लाहु अला कुलूबिहिम व अला समइहिम। व अला अबसारिहिम गिशावतुंव्वलहुम अजाबुन अजीम ०

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِی الْاَرْضِؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَاۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝ لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ۫ قَدْ تَّبَیَّنَ
الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَیُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰىۗ لَا انْفِصَامَ لَهَاؕ وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِؕ۬ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ
اِلَی الظُّلُمٰتِؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हु अलहय्युल कय्युम ला ताखुजुहु सिनतुंव्वला नौम लहू माफिस्समावाति वमा फिल अर्ज मन जल्लजी यशफउ इंदहु इल्ला बिइजनिह याअलमु माबैन ऐदिहिम वमा खल्फहुम वला युहीतुन बशैइम्मिन इल्मिहि इल्ला बिमाशाअ वसीअ कुर्सीयुहुस्समावाति वलअर्ज वला यऊदू हिफ्जुहुमा वहुव अलीय्युल अजीम ० ला इक्रा-ह फ़िद्दीनि कत्तबय्यन-र्रुश्दु मिनल्-गय्यि फ-मंय्यक्फ़ुर बित्तागूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ-कदिस्तम्स-क बिल्-उ़र्वतिल्-वुस्का लन्फिसा-म लहा, वल्लाहु समीउ़न्, अलीम ० अल्लाहु वलिय्युल्लजी-न आमनू युख़्रिजुहुम् मिनज़्जुलुमाति इलन्नूरि, वल्लजी-न कफरू औलिया-उहुमुत्तागूतु युख़्रिजू-नहुम् मिनन्नूरि इलज़्जुलुमाति, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा ख़ालिदून ०

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ
بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○ اٰمَنَ
الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا
اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا
كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ
وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○

लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि व इन् तुब्दु मा फी अन्फुसिकुम् औ तुख़्फ़ुहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु फ-यग़्फिरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर ० आमनर्रसूलु बिमा उन्ज़िल इलैहि मिर्रब्बिहि वल मूअमिनून। कुल्लुन आमन बिल्लाहि व मलाइकतिहि व कुतुबिहि व रुसूलिह ला नुफर्रिकु बैन अहदिम्मी र्रुसूलिह। व कालू समेअ़ना व अतअ़ना गुफ़रानक रब्बना व इलैकल मसीर ० ला युकल्लिफुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अहा। लहा माकसबत व अलैहा मक्तसबत। रब्बना ला तुअख़िज़ना इन्न सीना व अख़्ताना रब्बना व ला तहमिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहु अलल्लज़ीन मिन कब्लिना रब्बना व तुहम्मिलना मा ला ताकत लना बिही। व अफु अन्ना वग़्फ़िरलना वरहम्ना अन्त मौलाना फन्सुरना अलाल कौमिन काफिरीन ०

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًاۢ بِالْقِسْطِؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُؕ

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۢ بِاَمْرِهٖؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ

शहिदल्लाहु अन्नहु ला इलाह इल्ला हुववलमलाइकतु व उलूलइल्मि काइमम्बिलकिस्त, ला इला-ह इल्ला हुवल अजीजुल हकीम ० कुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्कि तुअतिल मुल्कि मन तशाउ व तन्ज़िउल मुल्क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ वतुजिल्लु मन्तशाअ, बियदिकल ख़ैर, इन्नक अला कुल्लि शैइन कदीर ० तूलिजुल्लैल फिन्नहारि व तूलिजुन्नहार फिल्लैलि व तुख़्रिजुल हय्य मिनल् मय्यिति व तुख़्रिजुल् मय्यित मिनल् हय्यि व तरज़ुकु मंतशाउ बिग़ैरि हिसाब ० इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लजी ख़लक़स्-समावाति वलअर्ज फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्-तवा अलल अर्शि युग़शी-ल् लैलन्नहार यत्लुबुहू हसीसंव्वश्-शम्स वलकमर वन्नुजूम मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही, अला लहुल ख़ल्कु वल् अम्र, तबारकल्लाह

رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۭ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ
بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ
وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝

रब्बुल आलमीन ० उद्उ रब्बकुम तज़र्रुअंव्व खुफियह, इन्नहू ला युहिब्बुल मुअतदीन ० वला तुफ़्सिदू फ़िल् अर्ज़ि बअ्द इस्लाहिहा वद्उहू खौफंव्-व तमआ, इन्न रहमतल्लाहि करीबुम्-मिनल् मुह्सिनीन ० कुलिद्उल्ला-ह अविद्उर्रह्मा-न, अय्यम् मा तद्उ फ-लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना व ला तज्हर् बि-सलाति-क व ला तुख़ाफित् बिहा वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला ० व कुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्-लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लाहू वलिय्युम्-मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तक्बीरा ०

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ○ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ○ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ
لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ○ وَقُلْ رَبِّ
اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ○

अफहसिब्तुम अन्नमा ख़लक्नाकुम अबसंव्वअन्नकुम इलैना ला तुरजऊन ○ फतआल्ललाहुल मलिकुलहक्कु, ला इलाह इल्लाहु, रब्बुलअर्शिल् करीम ○ व मंय्यदउ मअल्लाहि इलाहन् आखर ला बुरहान लहू बिही फइन्नमा हिसाबुहू इन्द रब्बिही, इन्नहू लायुफ्लिहुल काफिरून ○ व कुर्रब्बिग़फिर वरहम् व अन्त ख़ैरुर्राहिमीन ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۗ
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ
الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ
اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ
وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ
اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ○

वस्सॉ-फ़्फ़ाति सफ़्फ़न ० फ़ज़्ज़ाजिराति ज़जूरन फ़त्तालियाति ज़िक्रन इन्न इलाहकुम लवाहिद ० रब्बुस्समावाति वलअर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल मशारिकि ० इन्ना ज़य्यन्नस्समाअद् दुनया बिज़ीनति निलकवाकिब ० व हफ़्ज़म्मिन् कुल्लि शैतानिम्मारिदि ० ला यस्सम्मऊन इलल मलाइल अला व युक़्ज़फ़ून मिन कुल्लि जानिबिन ० दुहूरंव्व लहुम अज़ाबुव्वासिबु ० इल्ला मन ख़ातिफ़ल् ख़त्फ़त फ़अत्बअहू शिहाबुन् साक़िबु ० फ़स्तफ़्तिहिम् अहुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़लक़्ना, इन्ना ख़लक़्नाहुम मिन तीनिल्लाज़िबि ०

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ یُرْسَلُ عَلَیْكُمَا
شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ فَیَوْمَئِذٍ لَّا یُسْئَلُ عَنْ
ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ۚ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ○ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰی
جَبَلٍ لَّرَاَیْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْیَةِ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ

या मअ्-शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम् अन् तन्फुज़ू मिन अक़तारी-ससमावाती वल अर्ज़ी फन्फुजु ला तनफुजुन इल्ला बिसुल्तान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० युर्-सलु अलैकुमा शुवाज़ुम्- मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फला तन्तसिरान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फ-इज़न् शक्कतिस्समा-उ फ-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० फयौमइज़िल्-ला युस्अलु अन् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न ० फबि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ० लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल कुरआन अला जबलिल्रऐतहू ख़ाशिअम्मुतसद्दिअम्मिन ख़शियतिल्लाहि, व तिल्कल अम्सालु नज़्रि बुहा लिन्नासि लअल्लहुम यतफक्करून ० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि

الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

वश्शहा-दति हुवर्-रहमानुरहीम ○ हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुद्दुसुस्-सलामुल्-मुअमिनुल्-मुहैमिनुल्-अज़ीज़ुल्- -जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून ○ हुवल्लाहुल् ख़ालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ○ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ○ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ○ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ○

कुल ऊहिय इलय्य अन्नहुस्तमअ नफ़रुम मिनल् जिन्नि फ़कालू इन्ना समिअ्ना कुरआनन अजबां ○ यहदी इलर्रुश्दि फ़आमन्ना बिही, वलन्नुश्रिक बिरब्बिना अहदा ○ व अन्नहु तआला जद्दु रब्बिना मत्तख़ज साहिबतंव्वला वलदंव ○ व अन्नहु कान यकूलु सफ़ीहुना अलल्लाहि शतता ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

कुल या ऐय्यूहल काफीरून ○ ला आअबुदु मा ताअबुदून ○ वला अन्तुम आबिदूना मा आअबुदु ○ वला अना आबीदुम-मा अबत्तुम ○ वला अन्तुम आबिदुन मा आअबुद ○लकुम दीनुकुम वलियदीन ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

कुल हुवल्लाहु अहद ○ अल्लाहुस्समद ○ लम यलिद व लम यूलद ○ व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद ○

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَ مِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ٪

कुल आऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ ○ मिन शर्रि मा ख़लक़ ○ व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब○ व मिन शर्रीन्नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़द ○ व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद ○

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِکِ النَّاسِ ۙ اِلٰہِ النَّاسِ ۙ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ٪

कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि ○ मलिकिन्नासि○ इलाहीन्नासि ○ मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नासि ○ अललज़ी युवस्विसु फी सुदूरिन्नास ○ मिनल जिन्नति वन्नास ○

हादसात से बचने का वजीफा

हज़रत तलक रहमतुल्लाह अलै. फर्माते है के एक शख्स हज़रत अबुदरदा सहाबी रज़ि. की खिदमत में हाज़िर हुआ और अरर्ज़ किया के आप का मकान जल गया. फर्माया : नहीं जला. फिर दुसरे शख्स ने यही इत्तेला दि तो फर्माया : नहीं जला. फिर तीसरे शख्स ने यही खबरदी, आप ने फर्माया : नही जला. फिर एक शख्स ने आकर कहा के ऐ अबुदरदा रज़ि. ! आग के सरारे बहुत बुलंद हुए मगर जब आप के मकान तक आग पहुंची तो बुझ गई । फर्माया मुझे मालूम था के अल्लाह तआला ऐसा नहीं करेगा (के मेरा मकान जल जाए) क्योंकी मैं ने रसुल अल्लाह स. से सुना है के जो शख्स सुबह के वक्त ये कलमात पढ ले शाम तक इस को कोई मुसीबत नहीं पहोंचेगी. (मैं ने सुबह ये कलमात पढे थे इस लिए मुझे यकीन था के मेरा मकान नहीं जल सकता) वो कलमात ये है :

بسم الله الرحمن الرحيم

اللهم انت ربي لا اله الا انت عليك توكلت وانت رب العرش الكريم ما شاء الله كان وما لم يشا لم يكن ولا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم اعلم ان الله على كل شئ قدير وان الله قد احاط بكل شئ علما ۔ اللهم اني اعوذبك من شر نفسي ومن شر كل دابة انت اخذ بناصيتها ان ربي على صراط مستقيم

अल्लाहुम्मा अनता रब्बी ला इलाहा इल्ला अनता अलैका तवक्कलतु व अनत रब्बुल अरशील करीम

माशाअल्लाहु कान वमा लम यशालम यकुंव्ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयीलअजीम आलमु अन्नल्लाहा अला कुल्ली शैईन कदीरुव्वअन्नल्लाहा कद अहात बिकुल्ली शैईन इलमा ० अल्लाहुम्मा इन्नी आउजूबिका मिन शररी नफसी व मिन शररी कुल्ली दाब्बतीन अनता आखीजुम बिना सियतीहा इन्न रब्बी अला सिरातीम्मुसतकीम ०

मंजीयात

अल्लामा इब्ने सैर बिर रहमतुल्लाह अलै. के ज़रिए से तजरुबे के साथ मुसीबत व गम को दुर करने वाली ये सात आयतें जो मंजीयात के नाम से मारुफ है वो ये है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

कुल्लैय्युंसीबना इल्ला मा कतबल्लाहु लना हुव मौलाना व अलल्लाहि फलयतवक्कलीलमुअमीनून ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

व इंय्यमससकल्लाहु बिजुररीन फला काशिफ लहू इल्ला हुव व इंय्युरिदका बिखैरीन फला राददा लिफजलीह यूसीबु बिही मंय्यशाउ मिन इबादिहि. वहुवलगफुररहीम०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ
كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

वमा मिन दाबबती फिल अरजी इल्ला अलल्लाहि रिज़्कुहा वयाअलमु मुसतकररहा व मुसतौवदअहा कुल्लुन फि किताबीम्मुबीन ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۚ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

इन्नी तवक्कलतु अलल्लाहि रब्बी व रब्बीकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हुव आखिजुम बिना सियतिहा इन्न रब्बी अला सिरातिम्मुस्तकीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

वकअय्यीममिन दाब्बतीनलला ताहमिलु रिज़्कहा अलल्लाहु यरज़ुकुहा व इय्याकुम वहुवस्समीउलअलीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

मा यफतहिल्लाहु लिन्नासि मिररहमतीन फला मुमसिक लहा वमा युमसिक फला मुरसिल लहु मिम बादिहि वहुवल अज़ीज़ुलहकीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلْ أَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ أَوْ أَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ

वलइन सअलतहुम्मन खलकस्समावाती वल अरजा लयकुलुन्नलल्लाहु कुल अफरऐतुम्मा तदउन मिन दुनिल्लाहि इन अरादनीयल्लाहु बिजुररीन हल हुन्ना काशीफातू जुर्रीहि अवअरादनी बिराहमतीन हल हुन्न मुमसिकातु रहमतीही कुल हसबीयल्लाहु अलैहि यतवक्कलुलमुतवक्कीलून ०

दुआए मांगने की फजीलत

हदीस शरीफ में आया है के रसुल अल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया के अल्लाह तआला के यहां दुआ से ज़्यादा और किसी चीज़ की वकअत नहीं.

एक और हदीस शरीफ में आया है के आहज़रत स. ने इर्शाद फर्माया : जो शख्स ये चाहे के अल्लाह इस की दुआ सख्तीयों और मुसीबतों के वक्त कुबुल फर्माए, इस को चाहिए के वो फराखी और खुश हाली में भी कसरत से दुआ मांगा करे.

एक और हदीस में आया है के रसुले अकरम स. ने इर्शाद फर्माया के दुआ मोमिन का हथीयार है, दीन का सुतुन है और आसमान व ज़मीन का नुर है. अगर दुशमन मुसलमानो का मुहासेरा करलें तो ये दुआ पढे :

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا.

अल्लाहुम्मसतुर अव रातिना वआमिररवआतिना

" ऐ अल्लाह ! तु हमारी कमज़ोरीयों को छुपाले और हमारे डर और खौफ को अमन व अमान देदे."

जब भी किसी मुसीबत व बला या खौफनाक अमर के पेश आने का अंदेशा हो या किसी बहोत बडी मुसीबत में गिरफतार हो जाए तो कसरत से इस का विरद रखे :

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا.

हसबुनल्लाहु वनिअमलवकीलु अलल्लाहि तवक्कलना०

" काफी है हमारे लिए अल्लाह , और वो बहोत हि अच्छा कारसाज़ है. अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया है."

मस्नून व मक्बूल दुआएं

① سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

१. सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, अस्तग्फिरुल्लाहल अज़ीम व अतूबु इलैह ०

जो शख्स इन चार कल्मात को पढेगा तो कल्मात जैसे उस ने पढे (जूं के तूं) लिख दिए जाएंगे। फिर अर्श के साथ लटका दिए जाएंगे, कोई भी गुनाह जो वो करेगा इन कल्मात को नहीं मिटा सकेंगे। यहां तक के जब वो शख्स कयामंत के दिन अल्लाह से मिलेगा तो इन कल्मात को जूं का तूं सरबमुहर पाएगा। (हसन हुसैन)

② جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّا هُوَ اَهْلُهٗ

२. जज़ल्लाहु अन्ना मुहम्मदम मा हुव अहलुहू,

ये दुआ सरकारे दो आलम स. के लिएं है। जो इस को एक बार पढेगा उस के लिए सत्तर हज़ार फरिश्ते एक साल तक नेकियां लिखते रहते हैं।

③ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

३. जो शख्स लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह, पढा करे उस के लिए ९९ बीमारीयों की दवा है जिस में सबसे हल्की बीमारी फिक्र व परेशानी है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

४. अल्लहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अन्ज़िलहुल मक्अदल मुकर्रब इन्दक यौमल कियामह,

हज़रत रुवैफअ रज़ि. हुज़ूर अकदस स. का ये इर्शाद नकल करते हैं के जो शख्स ये दुरुद पढे उस के लिए मेरी शिफाअत वाजिब है। (फज़ाइले आमाल)

رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

५. रोज़ाना २७ बार **रब्बीगफिरली वलीवालिदय्य व लिल्मुअमीनीन वलमुमीनाति यौम यकुमुलहिसाब ०**

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِي الْمَوْتِ وَفِيْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ

६. शहादत हासिल करने का तरीका : **अल्लाहुम्मा बारिक ली फिल् मौति व फि मा बअदल मौत**

जो शख्स दिन में २५ बार मौत को याद करेगा वो अल्लाह पाक के हुक्म से शहादत की मौत से सुर्खरू होगा।

७. मर्ज़ुल मौत की दुआ : जो शख्स इस दुआ को मर्ज़ुल मौत में चालीस बार पढेगा उस को शहादत का सवाब मिलेगा।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

ला इलाह इलल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीय्यिल अज़ीम

बीमारी में इस दुआ का विर्द किया जाए मुमकिन है वही मर्ज़ुल मौत हो।

۸ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

८. सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अजीम,
ये दो कलमात ज़बान पर हलके और वज़न में भारी है और अल्लाह को बहोत पसंद है । (हुस्ने हसीन)

۹ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

९. सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही
हुज़ूर स. ने फर्माया जो शख्स एक मर्तबा **ला इलाह इलल्लाहु** कहे इस के लिए जन्नत वाजिब होंगी और जो शख्स **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही** सौ १०० मर्तबा पढेगा इस के लिए १लाख २४ हज़ार नेकीयां लिखी जाएगी। अल्लाह तआला के नज़दीक ये कलमा पहाड के बकद्र सोना खर्च करने से भी ज़्यादा महबूब है। (फज़ाईले आमाल)

۱۰ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَّمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

१०. ला इलाह इलल्लाहु वहदहू लाशरीक लहू अहदन समदल्लम यलिद् वलम् यूलद् वलम् यकुल्लहू कुफुवन अहद ० एक मर्तबा पढने वाले के लिए बीस २० नेकियां लिखी जाती हैं।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ○ وَّلَمْ
يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

११. ला इलाह इलल्लाहु वहिदं अहदन समदल्लम यत्तख़िज् साहिबतंव्वला वलदा ० वलम् यकुल्लहु कुफुवन अहद ० दस मर्तबा पढने से चालीस हज़ार नेकियां उस के लिए लिख़ी जाती हैं।

हज़रत. माअकुल बिन यसार रहमतुल्लाह अलै. का बयान है के रसुल अल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया जिस का मफहुम है के जो शख्स सुबह को तीन मर्तबा

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

१२. आउजुबिल्लाहि स्समिइल अलीमी मिनशशैतानिररजीम ० पढ कर सुरेह हशर की तीन आखरी आयात पढे.

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۞ هُوَ
اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞

हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल्-गैबि वश्शहा-दति हुवर्-रहमानुर्रहीम ० हुवल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल-कुद्दुसुस्-सलामुल्-मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल्-अजीजुल्- -जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून ० हुवल्लाहुल् खालिकुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वल्अर्जि व हुवल् अजीजुल्-हकीम ०

तो इस के लिए खुदावंदे तआला ७० हज़ार फरीशने मुक़र्रर फर्मादेगा जो शाम तक इस पर रहमत भेजते रहेंगे और अगर इस दिन मर जाएगा तो शहीद मरेगा और जो शख्स शाम को ये अमल करे तो इस के लिए अल्लाह तआला ७० हज़ार फरीशते मुकर्रर करेगा जो इस पर सुबह तक रहमत भेजते रहेगे। और अगर इसी रात मर जाएगा तो शहीद मरेगा. (तिर्मीज़ी)

१३. रसूल अल्लाह स. ने हज़रत जुवेरिया रज़ि को (जो फजर की नमाज़ से चाशत के वक्त तक मुसल्ले पर तस्बीहात में मशगूल थीं) फरमाया मैं ने तुझ से जुदा होने के बाद चार कल्मे पढे हैं, अगर उन को उन सब के मुकाबले में तोला जाए जो तुम ने सुबह से पढा है तो वो ग़ालिब हो जाएं। वो कल्मे ये हैं।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

१३.सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अदद खल्किही व रिज़ा नफ्सिही व ज़िनत अर्शिही व मिदाद कलिमातिही.

१४. जुमा के दिन के मख्सूस आमाल व औराद सूरे कहफ जो कोई जुमा के दिन पढेगा दूसरे जुमा तक उसके गुनाहों का कफ्फारा हो जाएगा और उसके लिए नूर चमकेगा। इसी तरह अलबाकी जो कोई जुमा के दिन सौ बार पढे तो उसके तमाम नेक आमाल मकबूल हो जाएंगे। जुमा की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा पढे : यागफ्फारु इगफीरली ज़ुनूबी तो हक तआला उसकी मगफिरत फरमा देंगे। जुमा के रोज़ बाद नमाज़े असर अपनी जगह से हटने से पहले अस्सी बार ये दुरूद पढें :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ عَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا

अल्लाहुम्मा सल्लिअला मुहम्मदिन्नबीय्यील उम्मिय्यी व अला आलिही व सल्लिम तस्लीमा

तो अल्लाह तआला उस के अस्सी साल के गुनाह मआफ फरमादेंगे। जुमा की शब को चालीस बार चौथा कल्मा पढेगा तो हज का सवाब पाएगा।

१५. दोज़ख़ की आग से निजात

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्मा अजिरनी मिनन्नार

अगर ये दुआ सुबह फजर और मगरिब की नमाज़ के बाद सात मर्तबा पढी जाए तो अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग से महफूज़ रखेंगे।

१६. अल्लामा अैनी रहमतुल्लाह अलै ने शरह बुखारी में एक हदीस नक्ल की है के जो शख्स एक मर्तबा ये दुआ पढे और इस के बाद ये दुआ करे या अल्लाह ! इस का सवाब मेरे वालिदैन को पहोंचादे तो इस ने वालिदैन का हक अदा कर दिया. दुआ ये है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْعَظَمَةُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الْمَلِكُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ النُّوْرُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

१७. जामेअ दुआ

हज़रत अबू उमामा रज़ि ने हुज़ुरे अक्दस स. से अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह स. दुवाएं तो आप ने बहुत सी बता दी हैं और सारी याद नहीं रहतीं, कोई एसी मुख्तसर दुआ बता दिजिए जो सब दुवाओं को शामिल हो जाए। इस पर हुज़ुर स. ने ये दुआ तालीम फरमाई :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ نَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ترمذی

अल्लाहुम्मा इन्ना नस्अलुक मिन खैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्यु-क मुहम्मदुन सलल्लहु अलैहि व सल्लम व नउजु बिक मिन शर्रिमस्तआज़क मिन्हु नबीय्युक मुहम्मदुन सलल्लहु अलैहि व सल्लम व अन्तल मुस्तआन व इलैकल बलागु व ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह (तिर्मिज़ि शरीफ)

सुबह व शाम के वज़ाएफ
तीसरे कल्मे की तस्बीह

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल् हम्दुलिल्लाहि वला इला-ह इलल्लाहु वल्लाहु अकबरु व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यील अजीम,

दुरूद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मौलाना मुहम्मदिंव बारिक व सल्लिम.

(दुरूदे इब्राहीमी पढे तो ज्यादा बहतर है।)

अस्तगफार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफीरुल्लाहल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल कय्युम व अतूबु इलैह.

सूरे इन्आम की फजीलत

जो शख्स सूरे इन्आम की शुरु की तीन आयतें (मातक्सिबून) तक पढेगा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ۗ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी खलकस्समावाति वल् अर्ज व जअलज़्ज़ुलुमाति वन्नूर, सुम्मल्लजीन कफरू बिरब्बिहिम यअदिलून ० हुवल्लजी खलककुम्मिन् तीनिन सुम्म कजा अजला, व अजलुम्मुसम्मन इंदहु सुम्म अंतुम तम्तरून ०

व हुवल्लाहु फिस्समावाति व फिल अर्ज़, यअलमु सिर्रकुम वजहरकुम वयअलमु मा तक्सिबून ०

इस के लिए चालीस फरिश्ते मुकर्रर किए जाएंगे, वो चालीस४० फरिश्ते कयामत तक इबादत करेंगे, सारा सवाब पढने वाले के नामे आमाल में लिखा जाएगा। और एक फरिश्ता आस्मान से लोहे का गरज़ लेकर नाज़िल होता है, जब पढने वाले के दिल में शैतान वस्वसे डालता है तो वो फरिश्ता गरज़ से उसकी खबर लेता है। सत्तर पर्दे बीच में हाइल हो जाते हैं। क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुल आलमीन फरमाएंगे तु मेरे ज़ेरे साया चल, जन्नत के फल खा, हौज़े कौसर का पानी पी। सलसबील की नहर में नहा। तू मेरा बंदा मैं तेरा रब (हवाला कमालीन शरह जलालीन शरीफ)

जुमा के रोज़ कसरते दुरूद शरीफ

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि की हदीस में ये नकल किया गया है के जो शख्स जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले अस्सी मर्तबा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन्नबीय्यील उम्मिय्यी व अला आलिही व सल्लिम् तस्लीमा ०

पढें तो उसके अस्सी साल के गुनाह मआफ और अस्सी साल की इबादत का सवाब उसके लिए लिखा जाएगा।

वालदैन के हक में दुआ

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ؕ

रब्बिरहम्हुमा कमा रब्बयानी सगीरा ०

एक मुफीद तरीन दुआ

जो आदमी हर नमाज़ के बाद इस को पाबंदी के साथ पढे खुसुसन जुमा की नमाज़ के बाद तो अल्लाह तआला हर खौफ की चिज़ से इस की हिफाज़त करेगा और इस के दुशमनो पर इस की मदद करेगा और इस को गनी करदेगा और इस को ऐसी जगह से रिज़्क पहुंचाएगा जहां इस का ख्याल भी ना जाए और इस की ज़िंदगी इस पर आसान कर देगा और इस का कर्ज़ा अदा कर देगा अगरचे पहाड के जितना कर्ज़ा हो अल्लाह तआला अपने फज़्ल व करम से इस को पुरा करेगा.

يَا اَللّٰهُ يَا اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا مَوْجُوْدُ يَا جَوَّادُ يَا بَاسِطُ يَا كَرِيْمُ يَا وَهَّابُ يَا ذَا
الطَّوْلِ يَا غَنِيُّ يَا مُغْنِيُّ يَا فَتَّاحُ يَا رَزَّاقُ يَا عَلِيْمُ يَا حَكِيْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا رَحْمٰنُ
يَا رَحِيْمُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ اِنْفَحْنِيْ
مِنْكَ بِنَفْحَةِ خَيْرٍ تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَمَّنْ سِوَاكَ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ اِنَّا فَتَحْنَا
لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ اَللّٰهُمَّ يَا غَنِيُّ يَا حَمِيْدُ يَا مُبْدِئُ يَا مُعِيْدُ يَا وَدُوْدُ
يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالًا لِّمَا يُرِيْدُ اِكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ
عَمَّنْ سِوَاكَ وَاحْفَظْنِيْ بِمَا حَفِظْتَ بِهِ الذِّكْرَ وَانْصُرْنِيْ بِمَا نَصَرْتَ بِهِ الرُّسُلَ اِنَّكَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

या अल्लाह या अहदु या वाहिदु या मौजुदु या जव्वादु

या बासितु या करीमु या वह्हाबु या जत्तौली या गनीय्यु या मुगनी या फत्ताहु या रज़्ज़ाकु या अलीमु या हकीमु या हय्यु या कय्युमु या रहमानु या रहीमु या बदीअस्समावाती वलअरज़ी या जलजलालि वलइक्रामी या हन्नानु या मन्नानु इनफाहनी मिनका बिनफहती खैरीन तुगनीनी बिहा अम्मन सिवाक इन तसतफतीहु फकद जाअकुमुल फतहु इन्ना फताहना लका फतहम्मुबीनन्नसरुम्मीनल्लाहि व फतहु करीब अल्लाहुम्मा या गनीय्यु या हमीदु या मुबदीउ या मुईदु या वदुद या जलअरशीलमजीदी याफाअल्ललीमा युरीद इक्फिनी बिहलालिक अन हरामिक व अगनीनी बिफजलिका अम्मन सिवाक वहफजनी बिमा हफिजत बिहिज़्ज़ीकरा वनसुरनी बिमा नसरता बिहिररुसुल इन्नका अला कुल्ली शैईन कदीर.

किसी बड़ी मुसीबत के पेश आने पर

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

अव्वल इन्न लिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजीउन पढे फिर इस दुआ को पढे

اَللّٰهُمَّ اٰجِرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاخْلُفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْهَا

अल्लाहुम्मा अजीरनी फि मुसीबती वख़लुफ ली खैरम्मिनहा.

आयाते शिफा

कुरआन मजीद की मंदरजा ज़ैलें आयात को आयाते शिफा कहा जाता है. ये आयात हुसुले शिफा के लिए बहोत मुफीद है बशर्तयेके इन आयात को बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में खुलुस से पढा जाए. अगर कोई मरीज़ हो तो इन आयात को २१ मर्तबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाया जाए और ये अमल गयाराह यौम तक किया जाए. शुरु में बिस्मील्लाह शरीफ और तीन बार सुरेह फातेहा पढी जाए, अगर ये ना किया जा सके तो फिर इन आयात को बिस्मील्लाह और सुरेह फातेहा के साथ चीनी की रिकाबी पर लिख कर पानी से धोकर मरीज़ को पिलाए इन्शाअल्लाह बहोत जल्द सहत याबी हासील होगी.

وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ (القرآن)

वयशफिसुदुर कौमिमुअमीनीन व युजहिब गैजा कुलुबिहिम.
(अलकुरआन ९/१६)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ (القرآن)

या अय्युहन्नासु कद जाअतकुम मौइजतुममिरब्बिकुम व शिफाउल्लीमा फि सुदुरि वहदव्वंराहमतुललिलमुअमीनीन
(अलकुरआन १०/५७)

يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ (القرآن)

यख्रुजु मिम्बुतुनिहा शराबुम्मखतलिफुन अलवानुहु फिही शिफाउल्लीन्नासि. (अलकुरआन १६/६९)

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا

वनुनज़्ज़ीलु मिनलकुरआनि मा हुव शिफाउव्वराहमतुल लिलमुअमीनीन वला यजीदुज़्ज़ालीमीन इल्ला खसारन (१७/८२)

الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ ۙ وَالَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِ ۙ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ

अल्लजी खलकनी फहुव याहदीन० वल्लजी हुव युतइमुनी वयुसकीन ० वइजा मुरीजतु फहुव यशफीन०(२६/७८-८०)

قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًی وَّشِفَآءٌ

कुल हुव लिल्लजीना आमनु हुदव्विशिफाउ (४१-४२)

इस्तेकामत और तलबे रहमत की दुआ

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْکٰفِرِیْنَ (القرآن)

रब्बना अफरिग़ अलैना सबरंव्वसब्बित अकदा मना वनसुरना अल्लकौमिलकाफिरीन. (अलकुरआन २/२५०)

"ऐ हमारे परवरदीगार ! हमारे दिलों में सब्र डाल दे और हमारे कदम जमाए रख और इन काफिरों के मुकाबले में हमारी मदद फर्मा."

चंद खास कुरआनी दुआएं

कबुले इबादत व हसुले इमान व तलबे हिदायत की दुआ

ये दुआ हज़रत इब्राहिम व हज़रत इस्माईल अलै. की है जो के बैतुल्लाह शरीफ के बनाते वक्त बिलहामे खुदावंदी की थी

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَا
أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝

रब्बना तकब्बल मिन्ना॰ इन्नका अंतस्समीउल अलीम॰ रब्बना वजअलना मुसलिमयनी लका व मिन जुररीयतीना उम्मतम्मुसलिमतल्लका व अरिना मना सिकना व तुब अलैना इन्नका अंतत्तव्वाबुररहीम॰ (अलकुरआन २/१२७/१२८)

तर्जुमा : "ऐ हमारे प्रवरदीगार ! तू हम से कबुल फर्मा, तु हि सुनने जानने वाला है. ऐ हमारे परवरदीगार ! और हम को बनाले अपना फर्माबरदार और हमारी अवलाद में से भी एक जमात अपनी फर्माबरदार बना और दिखा हम को हमारी इबादत के तरीके और हम पर तवज्जो फर्मा बेशक तु हि तवज्जो फर्माने वाला बडा महरबान है "

दुनिया व आखेरत की भलाई की दुआ

इस दुआ में दोनो जहां की भलाई तलब की गई है. रसुल अल्लाह स. इस को अकसर पढा करते थे :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (القرآن ٢٠١)

रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतव्वफिल आखिरती हसनतुव्वकिना अजाबन्नार (अलकुरआन २/२०१)

"ऐ हमारे परवरदीगार ! हमें दुनिया में भी नेकि अता फर्मा और आखिरत में भी नेकी अता फर्मा और दोज़ख के अज़ाब से बचा."

तौबा व अस्तगफार

गुनाहो से अगर बाज़ आए और करें तौबा
अभी सब दुर हों जितनी बलाएं आसमानी है

कुरआन मजीद में तौबा व अस्तगफार की बार बार ताकीद फर्माइ गई है. एक मुकाम पर इर्शाद है :

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ
ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝

व अन्निसतगफिरु रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युमत्तीअकुम्मताअन हसनन इला अजलीम्मुसम्मव्युति कुल्ल जि फज़्लीन फज़लहु व इन तवल्लौ फइन्नी अखाफु अलैकुम अजाब योमिन कबीर ०

इस इर्शादे रब्बानी से मालूम होता है के तौबा व अस्तगफार के ज़रीए अल्लाह तआला की नेअमतें हासिल होती

है और मसाईब व मुशकीलात से निजात मिलती है और रिज़्क में इज़ाफा होता है.

अंबिया किराम अलैहिमस्सलाम ने हर दौर में उम्मत को अस्तगफार और तौबा की तलकीन फर्माइ है. चुनांचे हज़रत नुह अलै. ने अपनी कौम को इस तरह तरगीब फर्माइ:

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝ (نوح، پ ٢٩، آیت ١٠ تا ١٢)

इस्तगफिरु रब्बकुम इन्नहु कान गफ्फारय्युरसिलिस्समाअ अलैकुम मिदरारा ० व युमदिदकुम बिअमवालिंव्वबनीन वयजअल्लकुम जन्नातिव्वयजअल्लकुम अनहारा०

(नुह, पारा २९ आयत १० ता १२)

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ (ھود، پ ١٢، آیت ٥٢)

व याकौमिस्तगफिरु रब्बकुम सुम्म तूबू इलैहि युरसीलिस्समाअ अलैकुममिदरारव्वयजीदकुम कुव्वतन इला कुव्वतिकुम ०

(हुद, पारा १२, आयात ५२)

इस आयाते मुबारका में गौर तलब बात ये है के अस्तगफार व तौबा दोनों का हुक्म हुआ है. दरअसल अस्तगफार के मानी है : अपने पिछले गुनाहो की बख्शीश और मगफिरत अल्लाह तआला से तलब की जाए और तौबा का मतलब ये है के इन्सान अपने गुनाहों पर शरमिंदा हो और आइंदा गुनाहो से बाज़ आने का मुसम्मम अज़्म यानी पुख्ता इरादा करें.

अहादीस मुबारका में भी तौबा व अस्तगफार की बडी ताकीद फर्माइ गई है. चुनांचे एक हदीस शरीफ में सरवरे काएनात फख़्रे मौजुदात सय्यदना हज़रत मोहम्मद मुसतफा स. का इर्शादे गिरामी है :

ऐ लोगो ! तौबा करो. "मैं भी दिन में सौ १०० मर्तबा तौबा करता हूं." (मिशकात)

मकामे हैरत है के रसुल अकरम स. जो के सरापा मासूम और गुनाहो से पाक है, रोज़ाना सौ १०० मर्तबा अस्तगफार पढते है और हम जो सरापा खता हैं, दिन में एक बार भी तौबा व अस्तगफार ना पढें.

एक और हदीस पाक में इर्शादे रसुल अल्लाह स. है के जो आदमी बाकाएदगी के साथ बिलानागा अस्तगफार करता है अल्लाह तआला इस के लिए हर तंबी और निजात के रास्ते निकाल देते है, रंज व फिक्र से निजात फर्माते है और बेगुमान रिज़्क नसीब फर्माते है. (मुसनदे अहमद,अबुदाउद, इब्ने माजा)

हज़रत महबुब सुब्हानी कुतुबे रब्बानी शेख अब्दुलकादर जिलानी रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब "फतुहुगैब" में फर्माते है :

"जैसा के अहादीस में मज़कुरा है के हुजुर अकरम स. बकसरत अस्तगफार फर्माते, इस लिए के अस्तगफार तज़कीया रुह और जलाए क़लब का बाअस है और हर मोमिन के लिए मुफीद है. तौबा व अस्तगफार हर हाल में अबद (बंदा) की दो लाज़मी सिफात है और ये दोनो सिफात हज़रत आदम अलै. की मुकद्दस मिरास है और यही खुदा के सच्चे आशिको

और दोस्तों की सुन्नत है जो निजात की ज़ामिन है."

हज़रत आदम अलै. से भी जब गलती और खता सरज़द हुई थी तो वो खता तौबा व अस्तगफार के ज़रीए ही माफ करदी गई थी. कुरआन मजीद में हज़रत आदम अलै. की ये दुआ मज़कुर है :

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

रब्बना ज़लमना अनफुसना व इल्लम तगफिरलना व तरहमना लनकुनन्ना मिनल खासीरीन ०

चुनांचे अस्तगफार के इन कलमात की अदाएगी के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. का वो कसुर माफ फर्मा दिया. अहादिस में अस्तगफार के मुख्तलीफ कलमात मज़कुर है वो ये है :

रसुल अल्लाह स. ये कलमा अस्तगफार सौ १०० मर्तबा पढते थे.

(१) رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

रब्बिगफिरली वतुब अलय्य इन्नका अनतत्तव्वाबुररहीम०

(२) اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तगफिरुल्लाहिल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल कय्युमु वअतुबु इलैह०

(३) सय्यदुलअस्तगफार य है :

اللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ
مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوْءُ بِذَنْبِيْ
فَاغْفِرْ لِيْ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ

अल्लाहुम्मा अनता रब्बी लाइलाहा इल्ला अनता ख़लकतनी व अन्ना अबदुका अइन्ना अला अहदिक वअ्दिक मसतताअतु आऊज़ुबिक मिन शर्रीमा सनअ्तु अबुउ लका बिनीअ्मतिक अलय्य वअबुउ बिज़ंबी फगफिरली फइन्नहु लायगफिरुज़्ज़ुनुब इल्ला अनता ०

हुज़ुर अनवार स. ने फर्माया : सय्यदुलइस्तगफार के ये कलमात जो शख्स सुबह को दिल के पुरे यकीन के साथ पढे और फिर इसी रोज़ इंतेकाल हो जाए तो वो जन्नती है और जो शख्स रात को यकीन कामिल के साथ पढे और सुबह होने से कबल वफात पा जाए तो वो अहले जन्नत में से है. (बुखारी)

(४) हज़रत आईशा रज़ि. बयान करती है के रसुल अल्लाह स. ने फर्माया के जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. को ज़मीन पर उतारा तो वो उठ कर मकामे काबा में आए और दो रकात नमाज़ पढ कर इस दुआ को (बिलहामि इज़दी) पढा. अल्लाह तआला ने इसी वक्त वही भेजी के "ए आदम अलै. ! मैं ने तेरी तौबा कबुल की और तेरा गुनाह माफ किया और तेरे अलावा जो कोई मुझ से इन कलमात से दुआ करेगा मैं इस के भी गुनाह माफ कर दुंगा. और इस की मुहिम को फताह करुंगा और शयातीन को इस से रोकूंगा और दुनिया इस के

दरवाज़े पर नाम घसटती चली आएगी, अगरचे वो इस को ना देख सके. वो दुआ ये है :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤَالِیْ وَتَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَیَقِیْنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا یُصِیْبُنِیْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِیْ وَرِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِیْ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ ۝

अल्लाहुम्मा इन्नका ताअ्लमु सिर्रीयी व अला नियती फअक्बल माजीरती व ताअ्लमु हाजति फआतिनी सुआली व ताअलमु मा फि नफ्सी फगफिरली जंबी अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका इमानय्युबा शिरु कलबी व यकीनन सादिकन हत्ता आलम अन्नहु ला युसीबुनी इल्ला मा कतबता लि व रिजम बिमा कसमत लि या अरहमरराहीमीन ० तिबरानी व बेहकी

(५) बाज़ अहादीस में ये कलमात मज़कुर है :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْهِ

अस्तगफिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ली जंबी व अतुबु इलैह.

हज़रत शेख़ जलालुद्दीन सीवती रह. से मनकुल है के फहम इल्म और कसरते माल के लिए बाद नमाज़े फजर रोज़ाना तीन मर्तबा ये अस्तगफार पढे :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا مِنْ جَمِیْعِ جُرْمِیْ وَاِسْرَافِیْ عَلٰی نَفْسِیْ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ

अस्तगफीरुल्लाहल अजीमल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवल

हय्युलकय्युमु बदीउस्समावाती वलअरजी वमा बैनहुमा मिन जमीइ जुरुमि व इसराफि अला नफ्सी वअतुबु ईलह. ये अमल मुजररीब

शेखुल नशाईख हज़रत शेख कलीमुल्लाह जहां आबादी रह. ने मरका शरीफ में तहरीर फर्माया है के जो शख्स दो माह तक बिलानागा रोज़ा चार सौ बार ये अ़स्तगफार पढे तो अल्लाह तआला इसे इल्म नाफे या माले कसीर अता फर्माए. यानी अगर निय्यत हुसुले इल्म है तो इल्म हासिल होगा और अगर तालिबे माल की निय्यत से पढेगा तो वो मिलेगा वो अस्तगफार ये है

अस्तगफिरुल्लाहल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवलहय्युल कय्युमुररहमानुररहीम बदी उस्समावाती वलअरज़ी. मिन जमीइ जुरुमि व जुलमि व इसराफि अला नफ्सी वअतुबु इलैह.

तौबा व अस्तगफार में जितनी जल्दी की जाए उतना हि बेहतर है. जैसे हि गुनाह सरज़द हो तो फौरन अल्लाह तआला के हुज़ुरे सरे नदामत झुका कर अपने कुसुर और कोताहि की माफी मांगनी चाहिए, वरना मरते दम तक शैतान की ये कोशिश होती है के वो दिन में ये खुश फहमी पैदा करता रहता है के अभी तो तुम्हारी उम्र हि क्या है, बाद में तौबा कर लेना. यहां तक के मौत सर पर आ खडी होती है और

इन्सान तौबा से महरूम हो कर तबाह व बरबाद हो जाता है.

दुसरी अहम बात ये है के तौबा सिर्फ ज़बानी काफी नहीं है क्योंकी असली और सच्ची तौबा ये है के इन्सान सच्चे दिल से ये अहद करे के आइंदा इस गुनाह के करीब नहीं जाएगा. कुरआन हमीद का इर्शाद है :

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا

या अय्युहल्लजीना आमनू तूबु इलल्लाहि तौबतंनसुहा.

रसुल अल्लाह स. ने फर्माया जिस ने दीन में कोई ऐसा काम किया जिस की बुनियाद शरीअत में मौजूद नहीं वो काम मरदुद है. (बुखारी व मुस्लिम)

यूं तो दिने इस्लाम में बिदआत का इज़ाफा अब रोज़ मर्रा का मामुल बन चुका है लेकिन इज़कार व वज़ाईफ में खुसुसन इतनी ज़्यादा खुद साख्ता और गैर मसनुन चिज़ें शामिल करदी गई है के मसनुन अदीया व इज़कार नाक नर्साया बन कर रह गए हैं. दिगर खुद साख्ता और गैर मसनुन इज़कार व वज़ाईफ की तरह दरूद व सलाम में भी बहोत से खुद साख्ता और गैर मसनुन दरूद व सलाम रायज हो चुके हैं. मसलन दरूद ताज, दरूद लिखी, दरूद मुकद्दस, दरूद अकबर, दरूद माहि, दरूद तंजीना वगैरा. इन में से हर दरूद के पढने का तरीका और वक्त अलग अलग बताया गया है और इन के फवाइद (जो के ज़्यादा तर दुनयावी है) का भी अलग अलग तज़केरा कुतुब में लिखा गया है. मज़कुरा दरूदो में से कोई एक दरूद भी ऐसा नहीं जिस के अलफाज़ रसुल अकरम स. से साबित हो. लेहाज़ा इन्हें पढने का तरीका और इन से हासिल होने वाले फवाइद अज़ खुद बातिल ठहरते है. रसुल अल्लाह स. की नाराज़गी और अल्लाह तआला के गज़ब का बाइस बने लेहाज़ा वही वज़ाईफ पढे जो रसुल अल्लाह स. से साबित है. याद रखीए रसुल अल्लाह स. की ज़बान से निकला हुआ एक लफ्ज़ दुनिया के सारे अवलीया और सॉलेह के बनाए हुए कलमात खैर से ज़्यादा अफज़ल और कीमती है.

(बराए महरबानी मोमिन पंचसुत्र पढीए)

चहल रब्बना माअ चहल दरुद

बिस्मील्लाहिर्रहमानिरहीम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्ली अंला सय्यीदिना मोहम्मदिन्नबीयीलउम्मी व अला आलिही व बारिक व सल्लीम.

① رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

रब्बना तकब्बल मिन्ना इन्न क अन तस समीअुल अलीमु ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिवं वआला आलि सय्यीदिना मोहम्मदिन कमा सल्लैयत अला इब्राहिम वअला आलि इब्राहिम इन्नका हमिदुम्मजीद○

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○ ② رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○

अल्लाहुम्मा बारिक अला सय्यीदिना मोहम्मदिवंवआला आलि सय्यीदिना मोहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राहिम वआला आलि इब्राहिम इन्नक हमिदुम्मजीद ○ रब्बना वजअलना मुसलिमैनी लक व मिन जुररीयतिना उम्मतम्मुसलीमतल लक व अरिना मना सिकना वतुब अलैना इन्नक अनतत्तव्वाबुररहीम ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ
اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मोहम्मदिन्निनबीईल उम्मीई वअज्वाजिही उम्महा तिलमुअमीनीन व जुररीयातिहि व आहलि बैतिही कमा सल्लैयत अला इब्राहिम इन्नका हमीदुम्मजीद ○

② رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○

रब्बना आतिना फिद्दुनिया ह स न तवँ व फिल आखिरति ह स न तवँ व किना अज़ाबन्नारि ○

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْحِلِّ وَالْحَرَامِ وَرَبَّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكْنِ
وَالْمَقَامِ اَبْلِغْ لِرُوْحِ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ مِّنَّا السَّلَامَ ○

अल्लाहुम्मा रब्बल हिल्ली वलहरामि व रब्बल मशअरिल हरामि व रब्बलबैतिलहरामि व रब्बरुक्नि वल मक़ामि अबलिग लिरुहि सय्यीदिना व मौलाना मुहम्मदिम मिन्नस्सलाम ○

③ رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बना अफ्रिग अलैना सब रवँ व सब्बित अक़्दा मना वन सुरना अलल कौमिल काफिरीन ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मुहमदिनिन्नबीईल उम्मी व आलिहि व असहाबिही व सल्लीम ○

⑤ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّأَنْزِلْهُ الْمُنْزَلَ الْمُقَرَّبَ مِنْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ○

रब्बना ला तुआ खिज़ना इन्न सीना अव अख़्ताना अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यीदिना मुहम्मदिवँ व अन्ज़ीलहुल मंज़िलल मुकर्रबा मिनका यौमल कियामा ○

⑥ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْأَرْوَاحِ وَعَلٰى جَسَدِهٖ فِى الْأَجْسَادِ وَعَلٰى قَبْرِهٖ فِى الْقُبُوْرِ ○

रब्बना वला तहमिल अलैना इसरन कमा ह मल तहू अ़लल लज़ी न मिन कब लिना ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला रुहि सय्यीदिना मुहम्मदिन फिलअरवाहि व अला जसदिहि फिलअजसनादि व अला कबरीहि फिल कुबुर ○

⑦ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۚ وَاغْفِرْ لَنَا ۚ وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۚ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ وَفِى الْمَلَإِ الْأَعْلٰى إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ○

रब्बना वला तुहम्मिल ना माला ता क त लना बिही वाअ़फु अन्ना ○ वग़फिर लना ○ वर हमना . अन त मौलाना फन सुरना अ़लल कौमिल काफिरी न ○ अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलअव्वलीन वल आख़िरीन व फिल मल इल अ़ला इला यौमिद्दिन ○

(٨) رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضَاءً وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً وَّاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْمَقَامَ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ ○

रब्बना ला तुजिग़ कुलू बना बाअ् द इज् हदय तना व हब लना मिल्ल दुन क रह म तन इन्न क अनतल वह्हाब ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मोहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिव सलातन तकुनु लका रजाअवँ व लिहक्किहि अदाअवँ व आतिहिल वसीलता वलमकामल्लजी व अत्तहु ०

(٩) رَبَّنَا اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ ○

रब्बना इन्न क जामिउन नासि लि यौमिल ला रेब फीहि इन्नल्लाह ला युख़लिफुल मीआद ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व रसुलिक व सल्ली अलल मुअमीनीन वल मुंअमीनाती वलमुसलीमीन वल मुसलीमात ०

(١٠) رَبَّنَا اِنَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बना इन्न ना आमन्ना फग़ फिरलना जुनू बना व किना अजाबन्नार ० अल्लाहुम्म सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदवँ व अला आलीहि व सल्लीम ०

(١١) رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ ○

रब्बना आमन्ना बिमा अन जल त वत्त बअ्नर रसू ल फक तुब्ना म अश्शा हिदीन ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व नबीय्यीकन्नबीयिल उम्मी ○

(١٢) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اَهْلِ بَيْتِهٖ ○

रब्बनग् फिर लना जुनू बना व इसरा फना फी अमरिना व सब्बित अक्दा मना वन सुरना अलल कौमिल काफिरीन ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मोहम्मदिवँ व अला आहलि बैतिहि ○

(١٣) رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاٰخِرِيْنَ
وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى النَّبِيِّيْنَ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمُرْسَلِيْنَ
وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ○

रब्बना मा खलक्त हाजा बातिलन सुबहा न क फकिना अजाबन्नार ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलअव्वलीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलआखीरीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिन्नबीयीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलमुरसलीन व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिलमलइल आला इला यौमिद्दीन ○

﴿١٤﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى
اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَسَلِّمْ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَاءَ نَفْسِكَ وَزِنَةَ عَرْشِكَ
وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ ○

रब्बना इन्न क मन तुद खि लिन्ना र फ कद अख़्ज़ै तहू व मा लिज़्ज़ा लिमी न मिन अनसार ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अब्दिक व नबीय्यीक व रसुलिकंन्नबीयील उम्मी व अला आलिहि व अज़्वाजिहि व ज़ुर्रीयातिहि. व सल्लिम अदद खलकीक व रिजाआ नफसिक वज़िनता अरशिका व मिदाद कलिमतिक ०

﴿١٥﴾ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَ بِالصَّلٰوةِ
عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ اَنْ يُّصَلّٰى عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تَنْبَغِي الصَّلٰوةُ عَلَيْهِ ○

रब्बना इन्न ना समिअना मुनादि यय़ँ युनादी लिल ईमानि अन आमिनू बि रब्बिकुम फ आमन्ना ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन बिअददि मिन सल्ली अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन बिअददि मल्लम युसल्ली अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा अमरत बिस्सलाति अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु अंय्युसल्ला अलैहि व सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तंबगीस्सलातु अलैहि ०

١٦ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ○
اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ
عَدَدَ مَا عَلِمْتَ وَزِنَةَ مَا عَلِمْتَ وَمِلْاٰ مَا عَلِمْتَ ○

रब्बना फग़ फिर लना ज़ुनूबना व कफ्फिर अन्ना सय्यिआ आतिना व त वफ्फना मअल अबरारि ○अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन्नबीयील उम्मी व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लीम अदद मा अलिमत व ज़िन्नता मा अलिमता व मिलआ मा अलिमत ○

١٧ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النُّوْرِ
الذَّاتِيِّ وَالسِّرِّ السَّارِيْ فِيْ سَائِرِ الْاَسْمَاۗءِ وَالصِّفَاتِ ○

रब्बना व आतिना मा व अत्तना अला रुसुलि क व ला तुखज़िना यौमल किया मति इन्न क ला तुख़्लिफुल मीआद ○ अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नुरी ज़्ज़ाति व स्सीररीस्सारियी फि साइरलअसमाइ वस्सीफात ○

١٨ رَبَّنَا اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰدَمَ وَنُوْحٍ وَّاِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَا بَيْنَهُمْ
مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ○

रब्बना आमन्ना फक तुब्ना म अश्शहिदीन ○ अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँव आदम व नुहिव्व इब्राहिम व मुसा व इसा व मा बैनहुम मिन्नबीयीन वलमुरसलीन सलवातुल्लाहि व सलामुहु अलैहिम अजमईन ○

(١٩) رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلٰوةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ ○

रब्बना अन्ज़िल अलैना माइ द तम मिनस समाई तकूनु लना ईदल्ली अव्वलिना व आखिरिना व आ य तम मिन क वरज़ुक़ना व अन त खैरुर राज़िक़ी न ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन अदद मा फि इलमिल्लाहि सलातन दाईमतन बिदा वामि मुलकिल्लाह ○

(٣٠) رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ عَدَدَ كَمَالِ اللّٰهِ وَكَمَا يَلِيْقُ بِكَمَالِهٖ ○

रब्बना ज़ लम्ना अनफु सना ○ व इँल्लम तग़फिर लना व तर हमना ल नकू नन न मिनल ख़ासिरी न ○ अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिही अदद कमालिल्लाहि व कमा यलीकु बिकमालिहि ○

(٣١) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاِفْضَالِهٖ ○

रब्बना ला तज अल्ना म अ़ल कौमिज़ ज़ालिमी न ○ अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लीम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिहि अद द इनआमिल्लाहि व इफ्ज़ालिह ○

٣٢ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बनफ तह बै नना व बै न कौमिना बिल हक्के व अन त खैरुल फातिही न ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम व बारिक अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन्नबीयील उम्मील हबिबिल आलिलकदरिलअजीमिल जाहि व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लिम ०

٣٣ رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ صَلٰوةً اَنْتَ لَهَا اَهْلٌ وَّهُوَ لَهَا اَهْلٌ ○

रब्बना अफरिग अलैना सबरवँ व तवफ्फना मुस्लिमीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलिहि सलातन अंता लहा आहलुवँ व हुव लहा अहलुन ०

٣٤ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لِلنَّجَاةِ وَسِيْلَةً وَّلِعُلُوِّ الدَّرَجَاتِ كَفِيْلَةً ○

रब्बना ला तज अलना फित न तल लिल कौमिज जालिमी न व नज्जीना बि रह मति क मिनल कौमिल काफिरी न ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन तकुनु लिन्नजाति व सीलतिवँ व लिउ लुववी ददरजाति कफीला ०

(٣٥) رَبَّنَآ إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِىْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَىْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُفَرِّجُ بِهَا الْكُرَبُ وَتُحَلُّ بِهَا الْعُقَدُ ○

रब्बना इन्न क तअ् लमु मा नुख्फी व मा नुअ्लिन व मा यख्फा अलल लाहि मिन शैइन फिल अर्जी वला फिस समाई ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन तुफ़र्रजु बिहलकुरबु व तुहल्लु बिहलउक्द ०

(٣٦) رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنُ لَكَ رِضَآءً وَّلِحَقِّهٖٓ اَدَآءً ○

रब्बना व तकब्बल दुआय ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदविँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिवँ सलातन तकुनु लक रिज़ा अवँ व लिहक्कीहि अदाअ ०

(٣٧) رَبَّنَا اغْفِرْ لِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً دَآئِمَةً مَّقْبُوْلَةً تُؤَدِّىْ بِهَا عَنَّا حَقَّهُ الْعَظِيْمَ ○

रब्बनग फिरली व लि वालिदय्य व लिल मोअ्मिनी न यौ म यकूमुल हिसाबु ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन सलातन दाइमतम्मकबुलता तुअद्दि बिहा अन्ना हक्कहुलअज़ीम ०

(٣٨) رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ○

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ ○

रब्बना आतिना मिँल्ल दुन क रह मतवँ व हय्यी लना मिन अमरिना र श दा ० सलल्लाहु अलन्नबीयील उम्मी ०

(٢٩) رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَن يَطْغَىٰ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةَ الرِّضٰى وَارْضَ عَنْ أَصْحَابِهٖ رِضَاءَ الرِّضٰى ○

रब्बना इन्न ना नखाफु अँय्यफरुत अलैना अव अँय्यतगा ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन सलात रिंजा वरजा अन असहाबिहि रिजाअर्रीजा ०

(٣٠) رَبُّنَا الَّذِىٓ أَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ ○

रब्बनल्लजी अअता कुल्ल शैइन खल कहू सुम्म हदा ० अल्लाहुम्मा सल्ली व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फि कुल्ली लमहतिवँ व नफसिमबाअद दि कुल्ली माअलुमिल्लक ०

(٣١) رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضَاهُ لَهٗ ○

रब्बना आमन्ना फगफिर लना वर हमना व अन त खैरुर राहिमीन ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु व तरजाहु लहु ०

﴿٣٢﴾ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝
إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِ الْاَبْرَارِ وَزَيْنِ الْمُرْسَلِيْنَ
الْاَخْيَارِ وَاَكْرَمِ مَنْ اَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ ۝

रब्बनस रिफ अन्ना अजा ब जहन्नम इन्न अजाबहा का न गरामन० इन्नहा सा अत मुस त कर्रवँ व मुकामन० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिलअबरारि व जैनिलमुरसलीनल अखयारी व अकरामि मन अजलम अलैहिल्लैलु व अशरक अलैहिन्नहार ०

﴿٣٣﴾ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا
۝ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

रब्बना हब लना मिन अजवा जिना व जुरीय्या तिना कुर्र त अअंयु निवँ वज अल्ना लिल मुत्तकी न इमामा० अल्लाहुम्मा सल्लीम अला साय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा सल्लमत अला इब्राहिम व अला आलि इब्राहिम इन्नका हमीदुम्मजीद०

﴿٣٤﴾ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ اَللّٰهُمَّ اَبْلِغْهُ مِنَّا السَّلَامَ كُلَّمَا ذُكِرَ السَّلَامُ
وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

रब्बना ल गफूरुन शकूर ० अल्लाहुम्मा अबलिग हु मिन्न स्सलाम कुल्लमा जुकिरससलामु वस्सलामु अलन्नबीय्यी व रहमतुल्लाहि व बरकातहु

٧ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ ○

रब्बना व सिअ् त कुल्ल शयइर रह म तवँ व ईलमन फग्फिर लिल्लजी न ताबू वत्त बअू सबी ल क व किहिम अजाबल जहीमि ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व नबीयीक व रसुलिक न्नबीय्यील उम्मी व अला आलिहि व साहबिहि व सल्लिम ०

٨ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٨ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۚ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ عَلَيْهِ وَاجْزِهٖ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ حَبِيْبُكَ ○

रब्बना व अद खिलहुम जन्नाति अदनि निल्लती व अत्तहुम व मन स ल ह मिन आबाई हिम व अज़्वाजि हिम व जुर्रीय्याति हिम ० इन्न क अन तल अजीजुल हकिम ० व कि हि मुस सय्ई आति व मन तकिस सय्ई आति यौ मई जिन फ कद रहिम तह व जालि क हुवल फौजुल अजीमु ० अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व सल्लिम अलैहि वजजिहि अन्ना मा हुव आहलुहु हबीबुक ०

٢٨ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ○

रब्बनग फिर लना व लि इख्वा नि नल्लजी न स ब कूना बिल ईमानि व ला तज अल फी कुलूबिना गिल्लल लिल्लजी न आ मनू रब्बना इन्न क रऊफुर रहीम ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन ○

٢٩ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِي الْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

रब्बना ला तजअलना फितनतल लिललजीन कफरु वगफिर लना रब्बना ○ ईन्नक अन्तलअजिजुल हकिम ○अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिन फिल मलईल आला ईला यौमी ददिन मा शाअल्लाहु ला कुव्वत ईल्ला बिल्लाहिल अलिईल अजिमि ○

٣٠ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ اٰمَنَ بِكَ وَبِكِتَابِكَ وَاَعْطِهِ اَفْضَلَ رَحْمَتِكَ وَاٰتِهِ الشَّرَفَ عَلٰى خَلْقِكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاجْزِهِ خَيْرَ الْجَزَآءِ وَالسَّلَامُ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

रब्बना अत मिम लना नू रना वग फिर लना इन्न क अला कुल्ले शयइन कदीर ○ अल्लाहुम्मा सल्ली अला

सय्यिदिना मुहम्मदिन अबदिक व रसुलिकन्नबीय्यील उम्मील्लजी आमन बिक व बिकिताबिक व आततिहि अफजल रहमतक व आतिहिशशरफ अला खलक्कि यौमिल कियामति वजजिहि खैरल जजाइ वस्सलामु अलैहि व रहमतुल्लाहि वबरकातहु ० सुबहान रब्बीका रब्बील इज़्जती अम्मा यसीफुन ० व सलामुन अल्ल मुरसलीन ० वलहम्दु लिल्लाहि रब्बीलआलमीन ०

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدِ نِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى
اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदि निन्नबीय्यील उम्मी व अला आलिहि व बारीक व सल्लीम ०

बिस्मील्लाह हिररहमान निर्रहीम

मिनटो में करोड पती बनिए

हज़रत तमीम दारी रज़ि. हुजुर अकरम स. से रिवायत करते है के हुजुर स. ने इर्शाद फर्माया के जो शख्स दस मर्तबा ये कलमात कहे तो अल्लाह तआला इस को चार करोड नेकियों का सवाब इनायत फर्माते है और रमज़ानुल मुबारक में हर नेकी का सवाब सत्तर गुनाह ज़्यादा मिलता है तो इस लेहाज़ से इन अलफाज़ का सवाब दो अरब अस्सी करोड मिलेगा. वो कलमात ये है.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

अशहदुअल्ला इलाहा इलल्लाहु वाहदहु ला शरीका लहु इलाहव्वांहिदन अहदन समदन लम यत्तखिज साहिबतंवँ व ला वलदवँ वंलम यकुल्लहु कुफुवन अहद ०

तिलावत से पहले पढे जाने वाले दरुद शरीफ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى

اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الْبَرَرَةِ الْكِرَامِ وَعَلٰى سَائِرِ النَّبِيِّيْنَ ۝

अल्लाहुम्मा सल्ली अला सय्यिदिना मुहम्मदिनिन नबीय्यील उम्मीय्यी वअला आलिहि व असहाबिहिल बररतिलकिराम व अला साइरीन्नबीय्यीन.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى نُوْرِ الْاَنْوَارِ وَسِرِّ الْاَسْرَارِ وَ
تِرْيَاقِ الْاَغْيَارِ وَمِفْتَاحِ بَابِ الْيَسَارِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدِنِ الْمُخْتَارِ وَاٰلِهِ الْاَطْهَارِ وَعَلٰى وَاٰلِهٖ وَ
اَصْحَابِهِ الْاَخْيَارِ عَدَدَ نِعَمِ اللّٰهِ وَاَفْضَالِهٖ

अल्लाहुम्मा सल्ली अला नुरिल अनवारि व सररीलअसरारी व तिरयाकिल अगयार वमीफताहि बाबिल यसार सय्यिदिना मुहम्मदि निलमुखतार व आलिहिल अतहार व अला व आलिहि व असहाबिहिल अखयार अद द निअमल्लाहि व अफजालिहि

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَاْ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ خَلَقَ الْاِنْسَانَ
مِنْ عَلَقٍ ۚ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۔

आऊजुबिल्लाहि मिनश्शैतानिररजीम
बिस्मील्लाहि ररहमा निररहीम

इकरा (सल्लल्लाहु अलैक सय्यिदुना मुहम्मदुन सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) बिस्मी रब्बीकल्लजी ख़लक ख़लकल इन्सान मिन अलक इकरा व रब्बुकल अकरमुल्लजी अल्लम बिलकलमि अल्लमल इन्सान मा लम याअलम.

फजीलत : इल्म ज़ाहिरी व बातीनी हासिल होगा. दिल रौशन और ज़बान पर खुदा के कलाम की रवानी पैदा हो जाती है. ख्यालात नेक पैदा होना शुरु हो जाते है.

फज़ाईले आमाल

'जो आदमी जुमा की नमाज़ के बाद १०० मर्तबा 'सुब्हानल्लाहिलअज़ीम व बिहमदिहि' पढेगा तो हज़रत मोहम्मद स. ने फर्माया के इस के पढने वाले को एक लाख गुनाह माफ होंगे और इसके वालेदैन के चौबीस हज़ार गुनाह माफ होंगे.

(हदीस रवाह इब्ने अलसुन्नी फिल अमलुलयौम वालैलता सफा १४६०)

○

हज़रत बुरेदा सलमा रज़ि. को आप स. ने फर्माया के ऐ बुरेदा रज़ि. जिस के साथ अल्लाह पाक खैर का इरादा फर्माते है इस को मंदरजा ज़ैल कलमात सिखा देते है, वो कलमात ये है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِیْ رِضَاكَ ضُعْفِیْ وَخُذْ اِلَی الْخَيْرِ بِنَاصِيَتِیْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰی رِضَائِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِیْ وَاِنِّیْ ذَلِيْلٌ فَاَعِزَّنِیْ وَاِنِّیْ فَقِيْرٌ فَاَغْنِنِیْ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

अल्लाहुम्मा इन्नी जईफुन फक्व्वीनी रिजाक जुअफि व खुजलिलखैर बिना सियती वजअलिल इस्लाम मुनताहा रिजाई अल्लाहुम्मा इन्नी जईफुन फकव्विनी व इन्नी जलीलुन फअ-ईज्जनी व इन्नी फकीरुन फअगनिनी या अरहमर्रराहिमीन.

आगे आप स. ने फर्माया जिस को अल्लाह ये कलमात सिखाता है फिर वो मरते दम तक नहीं भूलता. (आहया उलउलूम जिल्द १ सफा २७७)

○

एक सहाबी रज़ि. ने हुज़ुर अकरम स. से पुछा के मुझे वज़ीफा बताइये. आप स. ने फर्माया के

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वलहमदुलिल्लाहि वला इलाहा इलल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौल वलाकुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयील अज़ीम ०

पढा करो सहाबी ने कहा ये तो मेरे अल्लाह के लिए कलमात हैं मेरे लिए क्या वज़ीफा है. आप स. ने फर्माया के इस के बाद ये कहा करो.

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ.

अल्लाहुम्मगफिरली वरहमनी वाहदनी व आफिनी वरज़ुकनी. वो सहाबी रज़ि. उठ कर रवाना हो गए तो आप स. ने फर्माया के ये देहाती अपने दोनो हाथो में बहोत खैर को ले जारहा है. इस के पढने का अहतेमाम करो. सुबह और शाम सौ सौ मर्तबा पढ लिया करो तो इन्शाअल्लाह तआला खुब बरकत होगी. (हयातुलसहाबा अरबी, जिल्द ३ सफा ४३०)

○

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

हसबीयल्लाह ला इलाहा इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुल अरशील अज़ीम सुबह और शाम सात सात मर्तबा पढना चाहिऐ अल्लाह तआला इस के मआमलात दुरुस्त करेगा. परेशानीयां दुर होगी. हज़रत अबुदरदा रज़ि. फर्माते है के ये कलमात तो सच्चे दिल से पढ या झुटे दिल से हर हाल में अल्लाह तेरा काम बनाएगा. (हयातुस्सहाबा, जिल्द ३, सफा ८४७)

○

फजर के बाद या ज़ोहर के बाद दस मर्तबा सुरेह इख़लास अगर कोई पढ ले. आप स. ने फर्माया के उस दिन इस आदमी से गुनाह सरज़द ना होगा अगर शैतान कोशिश करेगा तब भी गुनाह सादिर ना होगा. (दुर्रेमंशुर, कनज़ुलअमाल जिल्द १ सफा २२३. हयातुस्सहाबा अरबी जिल्द ३ सफा ४२०)

○

बिमार आदमी की हालत में चालीस मर्तबा य आयते करीमा पढे.

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

ला इलाहा इल्ला अनता सुबहानका इन्नी कुनतु मिनज़्ज़ालीमीन.

फज़ीलत : हदीस शरीफ में आया है के जिस मुसलमान ने अपनी बिमारी की हालत में चालिस मर्तबा मज़कुरा बाला आयते करीमा पढ ली तो अगर इस बिमारी में वफात पा गया तो शहीदो का अजर पाएगा और अगर तंदरुस्त हो गया तो इस के तमाम गुनाह बखश दिए जाएगे. (हुसने हसीन)

○

किसी अंधे को हाथ पकड कर किसी शख्स ने चालीस कदम चला दिया तो इस चलाने वाले के अल्लाह अगले पिछले सारे गुनाह माफ करदेगा. (तनवीरुल्लहवालिक जिल्द १ सफा ८३ लसैवती)

○

अगर दो मुसलमान भाई मुसाफा करते वक्त एक मर्तबा दरुद शरीफ पढ लें तो अल्लाह इन दोनो के गुनाह माफ फर्मा देगा. (तनवीरुल्लहवालिक जिल्द १ सफा ८३ लसयतवी)

○

जब मोअज़्ज़न अज़ान देते देते اَشْهَدُاَنْ لَّآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ अशहदुअल्लाइलाहा इलल्लाहु पर पहुंचे तो एक मर्तबा ये पढ ले.

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ
دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُوْلًا وَّنَبِيًّا۔

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बवँ व बिलइसलामि दिनवँ व बिमुहम्मदिन सलल्लाहु अलैहि व सल्लम रसुलवँ व नबीय्यन. तो अल्लाह तआला पढने वाले के सारे गुनाह माफ फर्मादेगा.

(तनवीरुल्लहवालिक जिल्द१ सफा ८३ ललसैवती)

○

जब अज़ान शुरु हो तो ये दुआ पढे.

مَرْحَبًا بِالْقَائِلِيْنَ عَدْلًا مَرْحَبًا بِالصَّلٰوةِ اَهْلًا وَّسَهْلًا۔

मरहबन बिलकाइलीन अदलन मरहबा बिस्सलाति आहलवँ व साहलन.

फ़ज़ीलत : इस दुआ के पढने से दो करोड नेंकियां दो करोड गुनाह माफ, दो करोड दर्जात बुलंद होगे.

आयाते शिफा

मुकम्मल "सुरेह फातेहा" बिस्मील्लह के साथ पहले पढे.

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ

वयशफि सुदुर कौमिम मुअमिनीन और इमान वाली कौम के सिनो को अल्लाह तआला शिफा अता फर्माएगा.

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ
لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

याअय्युहन्नासु कद जाअतकुम्मौइज़तुन मिररब्बीकुम व शिफाउल्लिमा फी सदुरि व हुदंव व रहमतुल्लीलमुअमीनीन.

ऐ इन्सानो ! तुम्हारे पास एक नसीहत नामा तुम्हारे रब की तरफ से आचुका है और सीनो की तमाम बिमारीयों का इलाज भी इसी में है. जो इमान लाएंगे हिदायत का रास्ता इन को मिल जाएगा. साथ हि साथ अल्लाह की रहमत भी पालेंगे.

يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ
فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۝

यखरुजु मिम बतुनिहा शराबुममुखतलिफुन अलवानुहु फिहि शिफाउल्लीन्नास.

शहद की मख्खी के पेट से पीने की चिज़ (यानी शहद) निकलता है (अल्लाह के हुक्म से) जिस के रंग अलग अलग होते है और इस में इन्सानो के लिए शिफा है.

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ،

वनुनज़्ज़ीलु मिनलकुरआनि मा हुव शिफाउवँ व रहमतुललील मुमिनीन.

और हम उतारते है कुरआन जिस में शिफा है और रहमत है इमान वालों के लिए.

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ،

व इजा मरीजतु फहुव यशफीन ०

और जब मैं बिमार पड़ू तब वही मुझे शिफा अता फर्माता है.

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ،

कुल हुवल्लजीन आमनु हुदवँव शिफा.

ऐ नबी स. ! आप फर्मा दो के ये कुरआन इमान वालो के लिए राहे हिदायत है और बिमारो में शिफा भी है.

रोजाना सत्ताईस बार

رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۔

रब्बीगफिरली वलिवालीदय्यी वलीलमुअमीनीन वलमुअमीनात यौम यकुमुल हिसाब.

पढें क्योंकी इस के सत्ताईस बार पढने से अल्लाह पाक हज़रत आदम अलै. से ले कर क्यामत तक के मुसलमानो के बराबर सवाब अता फर्माएंगे.

दिल के अमराज़ से हिफाज़त

يَا قَوِيُّ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ قَوِّنِيْ قَلْبِيْ.

या कवीय्युलकादिरुल मुकतदिरु कव्वीनी कलबी

हर फर्ज़ नमाज़ के बाद तीन मर्तबा दरूद शरीफ पढ कर अपना सीधा हाथ कलब पर रख कर जो इस दुआ को सात मर्तबा पढेगा. अल्लाह पाक उस को दिल की बिमारीयों से महफुज़ रखेगा.

وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ.

वलीयरबित अला कुलुबिकुम व युसब्बीत बिहिलअक्दाम.

फज़ीलत : सुबह और शाम आगे पिछे दरुद शरीफ एक एक मर्तबा पढें और सात मर्तबा ये दुआ. इन्शाअल्लाह तआला हार्ट फेल और दिल के तमाम अमराज़ से निजात मिलेगी.

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

फइन तवल्लौ फकुल हसबीयल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुलअरशील अज़ीम ०

तर्जुमा : मेरे लिए अल्लाह तआला काफी है जिस के सिवा कोई माबुद होने के लायक नहीं, इस पर मैं ने भरोसा कर लिया. और वो अर्शे अज़ीम का मालिक है.

फज़ीलत : हज़रत अबुदरदा रज़ि. से रिवायत है के फर्माया जनाब रसुलुल्लाह स. ने के जो शख्स सुबह व शाम सात मर्तबा ये दुआ पढ ले तो अल्लाह तआला इस के दुनिया और

आखेरत के हर गम के लिए काफी हो जाएगे.

(रूहुलमआनी पारा ११ सफा ५३).

मायुस ना हो अहले ज़मीन अपनी खता से
तकदीर बदल जाती है मुज़तर की दुआ से

कर्ज़ व रंज व गम से निजात दिलाने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ
الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ ۔

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिनलहम्मी वलहुज़्नी वआउजुबिका मिनल अजज़ी वलकसलि व आउजुबिका मिनलबुख़्लि वलजुबनी व आउजुबिका मिन गलबतिद्दैनि वकहरीर्रजाल ०

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता हूं फिकर से और रंज (रंज गम) से और पनाह चाहता हूं बेबसी व सुस्ती से और पनाह चाहता हूं बुख़्ल और बुज़दिली से और पनाह चाहता हूं कसरत कर्ज़ से और लोगों की जोर आवरी से.. (रवाह अबुदाउद) (मरकात जिल्द ५ सफा २१७) (मिशकात सफा २१५ बाबुलइस्तेआज़ा)

फज़ीलत : हज़रत अबुसईद खुदरी रज़ि. से रिवायत है के एक शख्स ने अर्ज़ किया के ऐ अल्लाह के रसुल ! मुझे घेर लिया है गमों और कर्ज़ों ने यानी कसरते कर्ज़ की वजह से अदाएगी की फिक्र से परेशान हुँ. हुज़ुर स. ने फर्माया के क्या मैं तुझे ऐसी दुआ ना बता दूं के जिस के पढने से अल्लाह तेरे गमो को

दुर कर दे और तेरे कर्ज़ को अदा कर दे. अर्ज़ किया के क्यों नहीं यानी ज़रुर बताइये. आप स. ने फर्माया के सुबह व शाम यूं दुआ मांगा करो (जो माअ तर्जुमा के उपर गुज़र चुकी है)

जिस के पढने से आसमानी और ज़मीनी तमाम बलाओ से हिफाज़त रहती है.

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ. وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

बिस्मील्लाहिल्लज़ी ला यज़ुरु मअइसमिहि शैउन फिलअरज़ी वला फिस्समाई वहुवस्समीउल अलीम. (मिशकात सफा २०९)

तर्जुमा: अल्लाह के नाम से हम ने सुबह की (या शाम की) जिस नाम के साथ आसमान या ज़मीन में कोई चिज़ नुकसान नहीं दे सकती और वो सुन्ने वाला और जान्ने वाला है.

फज़ीलत : हज़रत अब्बान बिन उस्मान रज़ि. से रिवायत है के मैं ने अपने वालिद को कहते हुए सुना के रसुलुल्लाह स. ने फर्माया के जो बंदा सुबह और शाम तीन तीन बार ये दुआ पढ लेगा जो उपर गुज़री है इस को कोई चिज़ नुकसान नहीं पहोंचा सकती. (मिशकात)

नोट : मुनाजात मकबुल की एक मंज़ील अगर रोज़ पढ लि जाए तो सात दिन में अकसर अदाइया कुरआन पाक और अहादिल मुबारका की विर्द हो जाएगी.

दुआ हर परेशानी और बेचैनी को दफा करने के लिए

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ۔

या हय्यु या कय्युमु बिरहमतिका असतगीसु.

फज़ीलत : हज़रत अनस रज़ि. रिवायत करते है के हुजुर स. को जब कोई कुर्ब यानी बेचैनी और परेशानी होती थी तो **या हय्यु या कय्युमु बिरहमतीक असतगीसु** पढा करते थे. यानी ऐ ज़िंदा हकीकी, ऐ संभालने वाले आप हि की रहमत से फर्याद करता हुं.

اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَاَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ

غَيْرَ خَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ۝

अल्लाहुम्मा तवफ्फना मुसलीमीन वलहिकना बिस्सॉलहीन गैर खजाया वला मफतुनीन.

इमान पर खातमे के लिए बेहतरीन दुआ है.

दीन पर साबीत कदम रहने की दुआ

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ۔

या मुकल्लिबलकुलुबि सब्बीत कल्बी अला दिनीका.

फज़ीलत : हज़रत शहर इब्ने होशब रज़ि. फर्माते हैं के मैं ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि. से अर्ज़ क्या के ऐ उम्मुलमोअमिनीन हुज़ुर स. की अकसर दुआ किया होती थी जब आप के घर होते थे. हज़रत उम्मेसलमा रज़ि. ने फर्माया के आप स. अकसर ये दुआ फर्माया करते थे.

या मुकल्लीबल कुलुबि सब्बीत कलबि अला दिनीक.
ऐ दिलो को फेरने वाले मेरे दिल को दिन पर कायम रखीए.
(जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)
जो शख्स इस दुआ को मांगता रहेगा इन्शाअल्लाह तआला दीन पर साबित कदम रहेगा जिस की बरकत से खातेमा इमान पर होगा.

अलहाम हिदायत और नफस के शर से हिफाजत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِیْ رُشْدِیْ وَاَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ.

अल्लाहुम्मा अलहिमनी रुशदि व अइजनी मिन शररी नफसी.

फजीलत : हज़रत इम्रान इब्ने हसीन रज़ि. से रिवायत है के रसुलुल्लाह स. ने मेरे वालिद हसीन रज़ि. को दुआ के ये दो कलमे सिखाए जिन को वो मांगा करते थे.

ऐ अल्लाह हिदायत को मुझ पर अलहाम फर्माते रहिए यानी हिदायत की बातो को मेरे दिल में डालते रहिए और मेरे नफस के शर से मुझे बचाते रहिए. (जवाहिरुलबुखारी सफा ५७१)

बर्स, जनुन, कोढ और तमाम बुरे अमराज से हिफाजत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَیِّئِ الْاَسْقَامِ۔

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिनलबरस वलजनुनी वलजुजामि वसय्यीइल असकाम.

फज़ीलत : हज़रत अनस रज़ि. से रिवायत है के हुज़ुर स. ये दुआ मांगा करते थे के ऐ अल्लाह, मैं आप की पनाह चाहता हूं बरस से, पागल पन से, कोढ से और तमाम बुरे अमराज़ से. (जवाहिरुल्लबुखारी सफा ५७०)

आज कल के ज़माने में जब के हर रोज़ नए नए मोहलिक अमराज़ पैदा हो रहे हैं इस दुआ का खास अेहतमाम करना चाहिए और इस के साथ साथ तमाम गुनाहो से बचना चाहिए क्योंकी नई नई बिमारीयां गुनाहों की कसरत की वजह से पैदा होती है और गुनाहों को छोडने की तदबीरें किसी अल्लाह वाले से पुछना चाहिए. अल्लाह वालों की सोहबत की बरकत से गुनाहो से बचने की हिम्मत पैदा होती है.

अल्लाह तआला से माफी व मगफिरत दिलाने वाली दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ

अल्लाहुम्मा इन्नक अफुव्वुन करीमुन तुहिब्बुल अफ्व फाअफुअन्नी.

फज़ीलत : हज़रत आईशा रज़ि. से हुज़ुर अकरम स. की ये दुआ मनकूल है के ऐ अल्लाह आप बहुत ज़्यादा माफ फर्माने वाले करीम है. माफ फर्माने को पसंद फर्माते हैं, पस मुझ को माफ फर्मा दिजीए.

बाज़ रिवायत में सरवरे आलम स. ने शबे कद्र में भी ये दुआ मांगने की तालीम फर्माइ है. लेहाज़ा शबे कद्र में इस दुआ का खास अहतेमाम करना चाहिए. (जवाहिरुल्लबुखारी सफा ५७०)

अजाबे कब्र व दोज़ख और मालदारी व फक्र के शर से पनाह की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ فِتۡنَةِ الۡقَبۡرِ وَ عَذَابِ النَّارِ وَمِنۡ شَرِّ الۡغِنٰى وَالۡفَقۡرِ.

अल्लाहुम्मा इन्नी आउजुबिका मिन फितनतील कबरी व अजाबन्नारि व मिन शर्रीलगिना वलफुक्री.

फज़ीलत : उम्मुलमोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि. से रिवायत है के सरवरे आलम स. इन कलमात के साथ दुआ मांगा करते थे के ऐ अल्लाह मैं आप की पनाह चाहता हूं कब्र के फितने से और दोज़ख के अज़ाब से और मालदारी व फक्र के शर से.

(जवाहिरूलबुखारी सफा ५७२)

हिदायत, तकवा, पाकदामनी और मालदारी के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ اَسۡأَلُكَ الۡهُدٰى وَالتُّقٰى وَالۡعَفَافَ وَالۡغِنٰى

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुकल हुदा वत्तुका वलअफाफ वलगिना.

फज़ीलत : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रज़ि. से रिवायत है के हुजुर स. ने फर्माया ऐ अल्लाह मैं आप से सवाल करता हूं हिदायत का, तकवा का, पाकदामनी का और मालदारी का.

(जवाहिरूलबुखारी सफा ५७५)

बिसमी तआला

हज़रत हम्माद बिन अबी हनीफा रह. से रिवायत है के मेरे वालिद (इमाम अबु हनीफा रह.) ने ख्वाब में निनानवे मर्तबा अल्लाहु रब्बलु इज़्ज़त की ज़ियारत की. फिर मेरे वालिद साहब रह. ने अपने दिल में सोचा के अब की मर्तबा अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ियारत हो तो ज़रुर बिज़रुर अल्लाह तआला से पुछुंगा के या अल्लाह वो कौनसी चिज़ है जिस की वजह से आप अपने बंदो को क़यामत के दिन नजात देंगे. चुनांचे वालिद माजिद को ये शर्फ हासिल हुआ. और उन्होंने अल्लाह तआला से पुछा. अल्लाह पाक ने फर्माया के जो शख्स सुबह और शाम ये कलमात पढेगा इस को क्यामत के दिन नजात दूंगा. वो कलमात ये है.

سُبْحَانَ الْاَبَدِيِّ الْاَبَدِ. सुब्हानलअबदिय्यीलअबद

पाक है वा ज़ात जो हमेशा रहने वाला है.

سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ. सुब्हानल वाहिदिल अहद

पाक है वो ज़ात जो एक अकेला है.

سُبْحَانَ الْفَرْدِ الصَّمَدِ. सुबहानलफरदीस्समद

पाक है वो ज़ात जो तनहा बे नियाज़ है..

سُبْحَانَ رَافِعِ السَّمَآءِ بِغَيْرِ عَمَدٍ.

सुबहान राफिइस्समाइ बिग़ैरी अमद.

पाक है वो ज़ात जो बगैर सुतून के आसमान को बुलंद करने वाला है.

سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْخَلْقَ فَأَحْصَاهُمْ عَدَدًا۔

सुब्हान मन खलक्लखलक फलहसा हुम अददा.

पाक है वो ज़ात जिस ने तमाम मख़लुक़ात को पैदा किया. पस इन को गिन कर शुमार कर लिया.

سُبْحَانَ مَنْ قَسَمَ الرِّزْقَ وَلَمْ يَنْسَ أَحَدًا۔

सुबहान मन कसमर्रीज़्क वलम यअस अहदन.

पाक है वो ज़ात जिस ने रोज़ी तकसीम की और किसी को ना भुला.

سُبْحَانَ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا

सुबहानल्लज़ी लम यत्तखिज़ साहिबतवँ वला वलदन

पाक है वो ज़ात जिस ने ना बीवी बनाई और ना कोई अवलाद.

سُبْحَانَ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ۔

सुबहानल्लज़ी लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद.

पाक है वो ज़ात के जिस ने ना जना, ना जना गया और इस के बराबर का कोई नहीं है.

○

हज़रत अबुदरदा रज़ि. जो अपनी कुन्नीयत से मशहुर हुए और जो बडे फकीह आलिम और हकीम थे. शाम में सुकुनत इख़्तीयार की और दमिश्क में इंतेकाल फर्माया वो रिवायत करते है के रसुलुल्लाह स. ने इर्शाद फर्माया के : हज़रत दाऊद अलै. ये दुआ मांगा करते थे.

اَللّٰهُمَّ إِنِّىٓ أَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِىْ يُبَلِّغُنِىْ حُبَّكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَىَّ مِنْ نَّفْسِىْ وَأَهْلِىْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ.

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका हुब्बका व हुब्ब मंय्युहिब्बुका वलअमलल्लजी युबल्लिगुनी हुब्बक अल्लाहुम्मजअल हुब्बक अहब्ब इलेय्या मिन नफ्सी वअहली व मिनलमाइलबारिद०

(रवाहुलतिर्मीज़ी (अज़ज़वाहिरुल्लबुखारी सफा ५७२)

फज़ीलत : ऐ अल्लाह मैं आप से आप की मोहब्बत मांगता हूं और इस शख्स की मोहब्बत मांगता हूं जो आप से मोहब्बत करता है और मांगता हूं वो अमल जो आप की मोहब्बत तक पहुंचा दे. ऐ अल्लाह आप अपनी मोहब्बत मुझे मेरी जान से ज़्यादा और अहल व अयाल से ज़्यादा और ठंडे पानी से ज़्यादा महबुब कर दिजीए.

फज़ीलत : अल्लाह वालों की मोहब्बत ऐसी नेअमत उज़मा है जो अल्लाह तआला की मोहब्बत और आमाले सालेहा की मोहब्बत का निहायत ही ज़रीया है, जैसा के इस हदीस से वाज़ेह है.

बद नज़री से हिफाज़त

बदनज़री से हिफाज़त पर हलावते इमान अता होने का वादा है. हलावते ईमान जब दिल को एक बार अता हो जाएगी. फिर कभी ना वापस ली जाएगी. पस हुसने खातमा की बशारत इस अमल पर भी है.

हुज़ुर स. इर्शाद फर्माते है :

ان النظر سهم من سهام ابليس مسموم
من تركها مخافتى ابدلته ايمانا يجد حلاوته فى قلبه

इन्न नज़र सहमुम मिन सिहामि इब्लीस मसमुम मन तरकहा मखाफती अबदलतुहु इमानन यजिद हलावतहु फि कलबिही. (तिबरानी अन इब्ने मसऊद रज़ि., कुंज़ुलुलआमाल जिल्द ५, सफा २४८)

ईमान मौजूदा पर शुक्र है

यानी हर रोज़ मौजूदा पर शुक्र अदा करना और वादा है के **लइन शकर तुम ला जिदन्नकुम** (सुरेह इब्राहिम पारा १३) अगर तुम लोग शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नेअमतो में ज़रूर बिज़रूर इज़ाफा करेंगे. पस ईमान पर शुक्र इमान की बका बल्के तरक्की का ज़रीया है.

दुआ अदाएगी कर्ज़

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ
بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ○

अल्लाहुम्मकफिनी बिहलालिक अन हरामिक व अगनिनी बिफजलीक अम्मन सिवाक ०

अदाएगी कर्ज़ के लिए हुज़ुर अकदस स. ने हज़रत अली रज़ि. को तालीम फर्माइ और फर्माया के अगर पहाड के बराबर भी कर्ज़ होगा तो अदा हो जाएगा. (तिर्मीज़ी)

اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيْبَ دَعْوَةِ
الْمُضْطَرِّيْنَ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا
اَنْتَ تَرْحَمُنِيْ فَارْحَمْنِيْ بِرَحْمَةٍ تُغْنِيْنِيْ
بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्म फारिजल हम्मी काशिफलगम्मी मुजीब दावतिलमुजतर्रीन रहमानद्दुनिया वलआखिरति व रहीमहुमा अंता तरहमनी फरहमनी बिरहमतिन तुग्नीनी बिहा अरहमती मन सिवाक ०

ये भी अदाएगी कर्ज़ और गम व फिक्र दुर करने के लिए दुआ है. (मुसतदरक हाकिम वगैरह)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْخَلَّاقُ الْعَظِيْمُ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمُ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ الْجَوَادُ
الْكَرِيْمُ فَاغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ
وَاسْتُرْنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَارْفَعْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَلَا تُضِلَّنِيْ
وَاَدْخِلْنِيْ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

अल्लाहुम्मा अनतलखल्लाकुलअजीमु, अल्लाहुम्मा इन्नका समीउन अलीमुन, अल्लाहुम्मा इन्नका गफुररहीमु, अल्लाहुम्मा इन्नका रब्बुल अरशील अजीमु, अल्लाहुम्मा इन्नकलजवादुलकरीमु फगफिरली वरहमनी वआफिनी

वरजुकनी वसतुरनी वजबुरनी वअरफअनी वाहदिनी वला तुजिल्लनी वअदखिलनिल जन्नता बिरहमतिक या अरहमरराहिमीन ०

ऐ मेरे अल्लाह ! तू खालिके अज़ीम है तु समीअ व अलीम (सब कुछ सुनने और जानने वाला) है तु गफुर व रहीम (बखशने वाला और निहायत महरबान है) तु मालिके अर्शे अज़ीम है तु निहायत फय्याज़ और करीम है. अपनी इन आली सिफात के सदके में तु मुझे बख्श दे मुझ पर रहमत फर्मा. मुझे आफियत अता फर्मा. मुझे रिज़्क नसीब फर्मा, मेरी परवा दारी फर्मा, मेरी शिकसतगी को जोड दे, मुझे इज़्ज़त व रफअत अता फर्मा, मुझे अपनी राह पर चला, मुझे गुमराही से बचा और ऐ अरहमरराहीमीन (मरने के बाद आखेरत में) अपनी रहमत से मुझे जन्नत में दाखला नसीब फर्मा. (हज़रत जाबिर रज़ि. कहते है के रसुलुल्लाह स. ने ये दुआ तलकीन फर्माइ और आप से इर्शाद फर्माया) इस को सीख लो और अपने बाद वालो को सिखाओ. (मुसनदे फिरदोस वयलमी)

اَللّٰهُمَّ قِنِیْ شَرَّ نَفْسِیْ وَاعْزِمْ لِیْ عَلٰی اَرْشَدِ اَمْرِیْ

अल्लाहुम्मा क़िनी शर्र नफसी वाअजिम लि अला अरशदि अमरी

शुर नफस से हिफाज़त और हिदायत के लिए बहेतरीन दुआ है. हुजुर अकरम स. ने ये दुआ हज़रत हसीन रज़ि. को बताई थी. (इब्ने हब्बान)

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ ۝

अल्लाहुम्मा ला सहल इल्ला मा जअलतहु सहलवँ व अनत तजअलुल हज़्न सहलन इज़ा शिअत ०

मुशकीलात की आसानी के लिए हुजुर अकदस स. से मनकुल दुआ है. (इब्नुल हब्बान, इब्ने सुन्नी)

गुनाहगारों के लिए जहन्नम की आग है

कुर्आन में अल्लाह तआला फर्माता है :

"(अल्लाह का अज़ाब उस दिन होगा) जिस दिन आस्मान थर थर काँपने लगेगा और पहाड़ अपनी जगाह से चल पड़ेंगे। उस दिन झुटलाने वालों के लिये बड़ी खराबी होगी, जो बेहूदा मशग़ले में लगे रहते हैं, उस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ धक्के मार कर धकेला जाएगा (और कहा जाएगा) यही वह आग है जिस को तुम झुटलाया करते थे।"

(सूर-ए-तूर : ९ ता १४)